1 बोधगम्यता (Comprehension)

परिच्छेद–79

'आनुवंशिक रूपांतरण [जेनेटिक मॉडिफिकेशन (GM)] प्रौद्योगिकी को व्यापक और सुविचार रूप से अपनाने के मार्ग में जो गतिरोध है, वह है 'बौद्धिक संपदा अधिकार' की व्यवस्था, जो ऐसी प्रौद्योगिकियों के लिये गैर-सरकारी एकाधिकार सृजित करना चाहती है। यदि GM प्रौद्योगिकी अधिकांशत: कंपनी चालित हो, तो यह लाभ को अधिकतम करना चाहती है और वह भी थोड़ी ही अवधि में। यही कारण है कि कंपनियाँ शाकनाशी-सहिष्णु और नाशक जीव-प्रतिरोधी फसलों के लिये बड़े निवेश करती हैं। ऐसे गुणधर्म थोड़े समय के लिये ही बने रह पाते हैं, क्योंकि काफी जल्दी ही नाशक जीव और खरपतवार विकसित होने लगेंगे और ऐसे प्रतिरोध पर काबू पा लेंगे। कंपनियों को यह अनुकूल ठहरता है। राष्ट्रीय किसान आयोग ने यह बात उठाई थी कि आनुवंशिक रूपांतरण में प्राथमिकता ऐसे जीन के समावेशन को दी जानी चाहिये जो सूखा, लवणता और अन्य कष्टकर प्रभावों के लिये प्रतिरोध प्रदान करने में सहायक हों। ***UPSC-2019***

150. निम्नलिखित में से कौन-सा एक, उपर्युक्त परिच्छेद द्वारा दिया गया सर्वाधिक तर्कसंगत, विवेकपूर्ण और निर्णायक संदेश है?
   (a) लोक अनुसंधान संस्थाओं को GM प्रौद्योगिकी में अग्रणी होना चाहिये और इस प्रौद्योगिकी की प्राथमिकताओं को तय करना चाहिये।
   (b) विकासशील देशों को यह मुद्दा WTO में उठाना चाहिये और बौद्धिक संपदा अधिकारों का समापन सुनिश्चित करना चाहिये।
   (c) गैर-सरकारी कंपनियों को भारत में कृषि व्यवसाय (ऐग्री-बिज़नेस) करने, खास कर बीज का व्यापार करने, की अनुमति नहीं होनी चाहिये।
   (d) वर्तमान भारतीय परिस्थितियाँ आनुवंशिकत: रूपांतरित फसलों की कृषि के पक्ष में नही हैं।

151. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं:
   1. कृषि से संबंधित प्राकृतिक आपदाओं के प्रभाव के मुद्दे पर GM प्रौद्योगिकी कंपनियों द्वारा समुचित विचार नहीं किया जा रहा है।
   2. अंततोगत्वा, GM प्रौद्योगिकी भूमंडलीय तापन के कारण उत्पन्न होने वाली कृषि समस्याओं का समाधान नहीं कर पाएगी।

   उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?
   (a) केवल 1 (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

परिच्छेद–80

अधिकांश आक्रामक जातियाँ (इन्वेसिव स्पीशीज़) न तो घोर रूप से सफल हैं, न ही अत्यंत नुकसानदेह हैं। ब्रिटेन के आक्रामक पादप न तो व्यापक रूप से फैले हैं, न ही खास तेजी से फैलते हैं, और अक्सर ब्रैकेन की तरह के प्रबल प्राकृत पादपों की अपेक्षा कम परेशान करने वाले हैं। नई जातियों का आगमन लगभग हमेशा ही किसी क्षेत्र में जैव-विविधता को बढ़ा देता है; बहुत से मामलों में नवागंतुकों की बाढ़ किसी भी प्राकृत जाति को विलोपन की तरफ नहीं ले जाती। इसका एक कारण यह है कि आक्रामक पादपक प्रदूषित झीलों और उद्योगोत्तर व्यर्थ भूमि की तरह के विक्षुब्ध पर्यावासों को, जहाँ और कुछ भी जीवित नहीं रहता, उपनिवेशित करने की ओर प्रवृत्त होते हैं। वे प्रकृति के अवसरवादी हैं। ***UPSC-2019***

152. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन-सा एक, सर्वाधिक तर्कसंगत और विवेकपूर्ण निष्कर्ष निकाला जा सकता है?
   (a) आक्रामक जातियों का उपयोग किसी देश के मरु क्षेत्रों और व्यर्थ भूमियों के पुनर्वासन के लिये किया जाना चाहिये।
   (b) विदेशी पादपों के सन्निवेशन के विरुद्ध कानून अनावश्यक हैं।
   (c) कभी-कभी, विदेशी पादपों के विरुद्ध मुहिम चलाना निरर्थक होता है।
   (d) विदेशी पादपों का उपयोग किसी देश की जैव-विविधता बढ़ाने के लिये किया जाना चाहिये।

परिच्छेद–81

भारतीय बच्चों में प्रवाहिका (डायरिया) से होने वाली मौतें मुख्यत: खाद्य और जल के संदूषित हो जाने के कारण होती हैं। कृषि में संदूषित भौमजल और असुरक्षित रसायनों का उपयोग, खाद्य-पदार्थों का भंडारण और रख-रखाव अस्वास्थ्यकर तरीकों से किए जाने से ले कर खाद्य-पदार्थों के अस्वास्थ्यकर परिवेश में पकाए और वितरित किए जाने तक; ऐसे असंख्य कारक हैं जिनके विनियम और मॉनीटरन की आवश्यकता है। लोगों को मिलावट के बारे में और संगत प्राधिकारियों को शिकायत करने के तरीकों के बारे में जागरूक होने की आवश्यकता है। खाद्य-संक्रामक रोगों की निगरानी करने में अनेक सरकारी अधिकरण शामिल हैं और निरीक्षण-कर्मियों के अच्छे प्रशिक्षण की आवश्यकता है। इसका विचार करते हुए कि शहरी जनसंख्या का कितना भाग अपने दैनिक भोजन के लिये गली-नुक्कड़ पर बिकने वाले भोजन पर निर्भर है, गली-नुक्कड़ पर भोजन बेचने वालों के प्रशिक्षण और शिक्षण में निवेश करना बड़े महत्व का है। ***UPSC-2019***

153. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं:
   1. खाद्य सुरक्षा एक जटिल मुद्दा है जिसके अनेक-विध समाधानों

की आवश्यकता है।
2. निगरानी और प्रशिक्षण के लिये जनशक्ति बढ़ाने में भारी निवेश करने की आवश्यकता है।
3. भारत को खाद्य प्रसंस्करण उद्योग को नियंत्रित करने हेतु पर्याप्त विधि-निर्माण करने की आवश्यकता है।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?

(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 3
(c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

परिच्छेद–82

हमारे नगरों की आयोजना में ऐतिहासिक रूप से कामगार और निर्धन लोगों के हितों की उपेक्षा की जाती रही है। हमारे नगर वर्धमान रूप से असहिष्णु, असुरक्षित और अधिसंख्य नागरिकों के लिये न रहने योग्य स्थान बनते जा रहे हैं, तथापि हमने पुराने तरीकों-स्थिर विकास योजना- से ही योजना बनाना जारी रखा हुआ है, जो लोगों के जीवन अनुभवों और आवश्यकताओं से दूरी बनाए रखते हुए, और बहुत सारे लोगों, स्थानों, कार्यकलाप और प्रथाओं को, जो किसी नगर का अविच्छिन्न भाग होते हैं, सक्रिय रूप से शामिल न रखते हुए, अनन्यत: तकनीकी विशेषज्ञता से लिये जाते हैं। ***UPSC-2019***

154. यह प्रतीत होता है कि इस परिच्छेद में
(a) भवन निर्माताओं के एकाधिकार तथा संभ्रांत समूहों के हितों के विरुद्ध तर्क प्रस्तुत किया गया है।
(b) विश्वस्तरीय और सुव्यवस्थित (स्मार्ट) नगरों की आवश्यकता के विरुद्ध तर्क प्रस्तुत किया गया है।
(c) मुख्यत: कामगार वर्ग और निर्धन लोगों के लिये नगरों की योजना बनाने के पक्ष में तर्क प्रस्तुत किया गया है।
(d) नगर आयोजना में जनता के समूहों की भागीदारी के पक्ष में तर्क प्रस्तुत किया गया है।

परिच्छेद–83

भारत के लोग बहुत अधिक संख्या में निर्धन हैं, और मुश्किल से सिर्फ 10 प्रतिशत व्यक्ति संगठित क्षेत्र में नियोजित हैं। हमें विश्वास दिलाया जा रहा है कि प्रबल आर्थिक संवृद्धि से पर्याप्त रोज़गार उत्पन्न हो रहे हैं। लेकिन ऐसा है नहीं। जब हमारी अर्थव्यवस्था 3 प्रतिशत प्रतिवर्ष बढ़ रही थी, तब संगठित क्षेत्र में रोज़गार 2 प्रतिशत प्रतिवर्ष बढ़ रहा था। ज्यों ही अर्थव्यवस्था 7–8 प्रतिशत प्रतिवर्ष बढ़ती शुरू हुई, संगठित क्षेत्र में रोज़गार बढ़ने की दर वास्तव में घट कर 1 प्रतिशत प्रतिवर्ष रह गई। ***UPSC-2019***

155. उपर्युक्त परिच्छेद का निहितार्थ यह प्रतीत होता है कि
1. अधिकांश आधुनिक आर्थिक संवृद्धि प्रौद्योगिकीय प्रगति पर आधारित है।
2. काफी मायने में आधुनिक भारतीय अर्थव्यवस्था श्रम-प्रधान, प्राकृतिक संसाधन आधारित आजीविका के साथ पर्याप्त सहजीवी संबंध को प्रोत्साहन नहीं देती।
3. भारत में सेवा क्षेत्र बहुत श्रम-प्रधान नहीं है।
4. साक्षर ग्रामीण जनसंख्या संगठित क्षेत्र में प्रवेश करने की इच्छुक नहीं है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 2
(b) केवल 3 और 4
(c) केवल 1, 2 और 3
(d) 1, 2, 3 और 4

परिच्छेद–84

भारत में ऐसे बैंकिंग संपर्की हैं, जो दूर-दराज़ के पिछड़े क्षेत्रों में लोगों को बैंकिंग के दायरे में लाने में मदद करते हैं। वे ऐसा कर सकें, इसके लिये बैंक लागतों में कोई कमी नहीं कर सकते। वे वित्तीय शिक्षा और साक्षरता में निवेश करने की उपेक्षा भी नहीं कर सकते। बैंकिंग संपर्की एक तरह से इतने कम हैं कि उन्हें व्यवस्थागत जोखिम के रूप में नहीं देखा जा सकता। तथापि, भारत के बैंकिंग नियामक ने प्रतिबंध लगा रखा है कि वे केवल एक बैंक के लिये कार्य करें, संभवत: अंतर-पणन (आर्बिट्रेज़) से बचाव के लिये। बैंकिंग तक पूरी पहुँच लाने के प्रयासों में तभी सफलता मिल सकती है, जब दूर-दराज़ में काम करने वाले आखिरी छोर के ऐसे कार्यकर्ताओं के लिये और उन प्रबंधकों के लिये भी, जो न केवल आधारभूत बैंक लेखाओं को, बल्कि दुर्घटना एवम् जीवन बीमा तथा लघु पेंशन योजनाओं जैसे उत्पादों को भी सुनिश्चित करते हैं, काम करने में बेहतर प्रोत्साहन उपलब्ध हों। ***UPSC-2019***

156. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन-सा एक सर्वाधिक तर्कसंगत, विवेकपूर्ण और निर्णायक निष्कर्ष निकाला जा सकता है?
(a) भारत के दूर-दराज़ के पिछले क्षेत्रों के लोगों को बैंकिंग के दायरे में लाने के प्रयास सफल नहीं हुए हैं।
(b) सार्थक वित्तीय समावेशन के लिये, भारत की बैंकिंग प्रणाली में और अधिक संख्या में बैंकिंग संपर्कियों तथा आखिरी छोर के ऐसे अन्य कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है।
(c) भारत में सार्थक वित्तीय समावेशन के लिये इस बात की आवश्यकता है कि बैंकिंग संपर्कियों के पास विविध कौशल हो।
(d) बैंकिंग तक बेहतर पहुँच तब तक असंभव होगी जब तक कि प्रत्येक बैंकिंग संपर्की को अनेक बैंकों के लिये काम करने की अनुमति न हो।

परिच्छेद–85

अल्प साधन युक्त (लो-एंड) IoT (इंटरनेट ऑफ थिंग्स) उपकरण सस्ती वस्तुएँ हैं: इनमें सुरक्षा के साधन शामिल करने से इनकी लागत बढ़ जाती है। इस श्रेणी की वस्तुएँ नए अनुप्रयोगों (एप्लिकेशन्स) के साथ-साथ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हो रही हैं, अनेक गृह-उपयोगी साधित्र (अप्लायैंसेस), तापस्थापी (थर्मोस्टैट्स), सुरक्षा और मॉनीटरन अनुप्रयुक्तियाँ (डिवाइसेस) और वैयक्तिक सुविधा अनुप्रयुक्तियाँ IoT की श्रेणी में आती हैं। इसी प्रकार स्वस्थता पर दृष्टि रखने वाली अनुप्रयुक्तियाँ, कतिपय चिकित्सकीय अंतर्रोप (इम्प्लांट्स) और कारों (ऑटोमोबाइल्स) में प्रयुक्त होने वाली कम्प्यूटर जैसी अनुप्रयुक्तियाँ भी इसी श्रेणी में आती हैं। उम्मीद है कि IoT कई गुनी रफ्तार से बढ़ेंगे- किंतु सुरक्षा की नई चुनौतियाँ निरुत्साहित कर रही हैं। ***UPSC-2019***

157. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक,

सर्वाधिक तर्कसंगत और विवेकपूर्ण निष्कर्ष निकाला जा सकता है?

(a) भारत में समर्थकारी (एनेब्लिंग) प्रौद्योगिकियों का विकास इसके निर्माण क्षेत्रक के लिये बड़ा बढ़ावा बन सकता है।

(b) आसन्न सुरक्षा चुनौतियों को देखते हुए, भारत IoT को अपनाने के लिये अभी पूरी तरह तैयार नहीं है।

(c) सस्ती लो-एंड IoT अनुप्रयुक्तियों के विकसित होने से जीवन और अधिक आरामदेह बन जाता है।

(d) जैसे-जैसे हम डिजिटल होते जा रहे हैं, कतिपय IoT अनुप्रयुक्तियों से इंटरनेट सुरक्षा को होने वाले भारी खतरे को पहचानना आवश्यक है।

परिच्छेद–86

जैसे-जैसे डिजिटल परिघटना अधिकांश सामाजिक क्षेत्रकों को पुनर्संरचित कर रही है, इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि विश्वस्तरीय व्यापार वार्ताएँ अब डिजिटल क्षेत्र पर दृष्टि डाल रही हैं; इस प्रयास के साथ कि इसका एकांतिक रूप से उपनिवेशन करें। विकासशील देशों से बड़े आँकड़े (बिग डेटा) मुक्त रूप से संग्रहीत या खनित किए जाते हैं और उन्हें विकसित देशों में डिजिटल आसूचना में रूपांतरित कर दिया जाता है। यह आसूचना विभिन्न क्षेत्रकों को नियंत्रित करना और एकाधिकारपरक किराया वसूल करना शुरू कर देती है। उदाहरण के लिये, टैक्सी (कैब) की सेवा प्रदान करने वाली एक बड़ी विदेशी कंपनी कारों और चालकों का नेटवर्क नहीं है; यह आने-जाने, लोक परिवहन, सड़कों, यातायात, नगर की घटनाओं, यात्रियों और चालकों की वैयक्तिक व्यवहारपरक विशिष्टताओं आदि से संबंधित डिजिटल आसूचना ही है। ***UPSC-2019***

158. निम्नलिखित में से कौन-सा एक, उपर्युक्त परिच्छेद का सर्वाधिक तर्कसंगत और विवेकपूर्ण उपनिगमन है?

(a) वैश्वीकरण भारत के हितों के अनुकूल नहीं है, क्योंकि यह इसकी सामाजिक-आर्थिक संरचनाओं को क्षति पहुँचाता है।

(b) विश्वस्तरीय व्यापार वार्ताओं में भारत को अपने डिजिटल प्रभुत्व को बचाए रखने के लिये सावधान रहना चाहिये।

(c) भारत को बहुराष्ट्रीय कंपनियों से बड़े आँकड़ों के बदले एकाधिकार किराया प्रभारित करना चाहिये।

(d) भारत से बड़े आँकड़ों को हानि इसके विदेशी व्यापार की मात्रा/मान के समानुपाती है।

159. निम्नलिखित में से कौन-सा एक, उपर्युक्त परिच्छेद से सर्वाधिक निश्चयात्मक रूप से उपलक्षित होता है?

(a) डिजिटल दिक्स्थान में बड़े आँकड़े (बिग डेटा) मुख्य संसाधन होते हैं।

(b) बड़ी अर्थव्यवस्थाओं से बड़े आँकड़े सृजित होते हैं।

(c) बड़े आँकड़ों तक पहुँच विकसित देशों का विशेषाधिकार है।

(d) बड़े आँकड़ों तक पहुँच और स्वामित्व विकसित देशों की विशिष्टता है।

परिच्छेद–87

भारत समेत पूरे विश्व के ग्रामीण निर्धनों का मानव-कृत जलवायु परिवर्तन में नगण्य योगदान रहा है, तथापि इसके प्रभावों का सामना करने में वे अग्रिम पंक्ति में हैं। कृषक अब वर्षा और तापमान के ऐतिहासिक औसतों पर भरोसा नहीं कर सकते, और अधिक बारंबार होने वाली आत्यंतिक मौसमी घटनाएँ, जैसे सूखा और बाढ़, महाविपदाओं के रूप में परिणामित हो सकती हैं। और नए खतरे सामने हैं, जैसे कि समुद्र स्तर में वृद्धि और जल-पूर्ति पर पिघलते हुए हिमनदों का प्रभाव। छोटे कृषि-फार्म कितने महत्त्वपूर्ण हैं? पूरे विश्व में लगभग दो अरब (बिलियन) लोग अपने भोजन और आजीविका के लिये उन पर निर्भर हैं। भारत में छोटी जोत वाले किसान देश का 41 प्रतिशत खाद्यान्न और अन्य खाद्य-पदार्थ उत्पादित करते हैं जिसका स्थानीय एवं राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा में योगदान है। ***UPSC-2019***

160. उपर्युक्त परिच्छेद का सर्वाधिक तर्कसंगत और विवेकपूर्ण उपनिगमन कौन-सा है?

(a) छोटे किसानों को प्रोत्साहन देना पर्यावरणीय रूप से धारणीय विकास के बारे में किसी भी कार्यावली का महत्त्वपूर्ण भाग है।

(b) भूमंडलीय तापन के न्यूनीकरण में निर्धन देशों की कोई भूमिका नहीं होती।

(c) बड़ी संख्या में किसान परिवारों के होने के कारण भारत को, जहाँ तक भविष्य का अनुमान किया जा सकता है, खाद्य सुरक्षा की समस्या नहीं होगी।

(d) भारत में केवल छोटी जोत वाले किसान खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित कर सकते हैं।

161. उपर्युक्त परिच्छेद उपलक्षित करता है कि

1. भारत में खाद्य असुरक्षा की संभावित समस्या है।
2. भारत को अपनी आपदा प्रबंधन की क्षमताएँ मज़बूत करनी होंगी।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, और न ही 2

परिच्छेद–88

बदलती जलवायु, और इससे निपटने के लिये सरकारों के (चाहे वे कितनी भी अनिच्छुक हों) अंतिम प्रयासों का निवेशकों के प्रतिफल पर बड़ा प्रभाव पड़ सकता है। वे कंपनियाँ जो बड़ी मात्रा में जीवाश्म ईंधनों का उत्पादन या उपयोग करती हैं, उच्चतर करों और नियामक बोझ का सामना करेंगी। कुछ ऊर्जा उत्पादकों के लिये अपने ज्ञात भंडारों को उपयोग में लाना असंभव होगा, और उनके पास सिर्फ "अवरुद्ध संपदा" (स्ट्रेन्डेड असेट्स)- तेल और कोयले के वे निक्षेप जिन्हें जमीन में छोड़ देना पड़ता है- बचे रहेंगे। अन्य उद्योग, अपेक्षाकृत और अधिक आत्यंतिक मौसम- तूफान, बाढ़, उष्णता लहर और सूखा- से होने वाले आर्थिक नुकसान से प्रभावित हो सकते हैं। ***UPSC-2019***

162. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं:

1. जलवायु परिवर्तन का सामना करने के लिये सरकारों और कंपनियों को पर्याप्त रूप से तैयार होने की आवश्यकता है।
2. आत्यंतिक मौसम की घटनाओं से भविष्य में सरकारों और कंपनियों का आर्थिक विकास कम हो जाएगा।
3. जलवायु परिवर्तन की उपेक्षा करना निवेशकों के लिये भारी

जोखिम है।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?

(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 3

(c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

परिच्छेद–89

विद्यालयी उम्र में आने वाले बच्चों की विद्यालयी शिक्षा तक पहुँच होना लगभग विश्वव्यापी है, किंतु गुणतायुक्त शिक्षा तक पहुँच होने में सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर एक तीव्र ढाल दिखाई देती है। गैर-सरकारी विद्यालयों में कमज़ोर वर्गों के लिये कोटा का उपबंध नि:शुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 द्वारा किया गया है। इन कोटाओं ने सामाजिक एकीकरण और शिक्षा में साम्य के उन मुद्दों पर एक बहस थोप दी है जिनसे गैर-सरकारी कर्ता काफी-कुछ बचे हुए थे। समतावादी शिक्षा प्रणाली का विचार, जिसका मुख्य ध्येय अवसर की समानता हो, गैर-सरकारी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की सोच के दायरे से बाहर प्रतीत होता है। इसलिये, कोटा अधिरोपित किये जाने से प्रतिरोध का सामना करना पड़ा है, जो कभी-कभी न्यायोचित भी होता है।

UPSC-2019

163. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं:

1. अवसर की समानता को एक वास्तविकता बना देना भारतीय शिक्षा प्रणाली का आधारभूत लक्ष्य है।
2. वर्तमान भारतीय विद्यालय प्रणाली समतावादी शिक्षा प्रदान करने में असमर्थ है।
3. गैर-सरकारी विद्यालयों का उन्मूलन और अधिकाधिक सरकारी विद्यालयों की स्थापना ही समतावादी शिक्षा सुनिश्चित करने का एकमात्र मार्ग है।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 2

(c) केवल 2 और 3

(d) केवल 3

परिच्छेद–90

भारत में तपेदिक (TB) संक्रमित बहुसंख्य लोग निर्धन हैं और उनको पर्याप्त पोषण, उपर्युक्त आवास का अभाव है और बचाव के बारे में उनकी समझ न के बराबर है। ऐसे में, तपेदिक परिवारों का सर्वनाश कर देता है, निर्धनों को और निर्धन बनाता है, खास तौर पर महिलाओं और बच्चों को ग्रस्त करता है, और उन्हें निर्वासन और रोज़गार की बर्बादी की ओर ले जाता है। सच्चाई यह है कि यदि तपेदिक उन्हें न भी मारे, तब भी भूख और गरीबी से वे मर जाएँगे। दूसरी सच्चाई यह है कि इसका गहरा बैठा हुआ लांछन, परामर्श का अभाव, महँगा उपचार और साधन-प्रदाताओं तथा परिवार से पर्याप्त संबल का अभाव, यंत्रणाकारी पार्श्व-प्रभावों के साथ मिल कर रोगी को उपचार जारी रखने में हतोत्साहित करते हैं- जिसके अनर्थकारी स्वास्थ्य-संबंधी परिणाम होते हैं।

UPSC-2019

164. निम्नलिखित में से कौन-सा एक, उपर्युक्त परिच्छेद द्वारा दिया गया सर्वाधिक तर्कसंगत, विवेकपूर्ण और निर्णायक संदेश है?

(a) भारतीय परिस्थितियों में तपेदिक साध्य रोग नहीं है।

(b) तपेदिक को ठीक करने के लिये निदान और चिकित्सकीय उपचार से कहीं और अधिक की आवश्यकता होती है।

(c) सरकार की निगरानी की क्रियाविधि त्रुटिपूर्ण है; और निर्धन लोगों की उपचार तक पहुँच नहीं है।

(d) भारत तपेदिक जैसे रोगों से केवल तभी मुक्त होगा जब इसके निर्धनता उन्मूलन कार्यक्रम प्रभावकारिता और सफलता से कार्यान्वित किए जाएँ।

परिच्छेद–91

भारत का आर्थिक पदछाप (फुटप्रिंट), इसकी जनसंख्या को देखते हुए, अभी भी US, यूरोपीय संघ या चीन की तुलना में कम है। अन्य अर्थव्यवस्थाओं से सीखने के लिए इसके पास काफी कुछ है, तथापि इसे उन समाधानों को ही कार्यान्वित करना चाहिए जो इसकी अनूठी परिस्थितियों के अनुरूप हैं। भारत को वर्तमान अधोगामी उपागम की बजाय एक सहयोग आधारित प्रभावी दीर्घकालिक नियामक व्यवस्था की खास तौर पर आवश्यकता है। विनियम वांछित परिणाम लाने का प्रयास करते हैं, तथापि ये किसी न किसी कार्यक्रम को आगे बढ़ाने के लिए राजनीतिक उपकरण के रूप में बार-बार इस्तेमाल किए जाते हैं। प्राय: विनियम रोज़गार और आर्थिक संवृद्धि पर पड़ने वाले असर- या कम प्रतिबंधी विकल्पों - का विचार करने में असफल रह जाते हैं। विनियमों का इस्तेमाल भविष्य में और अधिक व्यापक रूप से साझी होने वाली समृद्धि की कीमत पर स्थानीय बाज़ारों को बचाने में किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, विनियमों के अनिवार्य रूप से अनेक अनैच्छिक परिणाम होते हैं। आज की अति प्रतियोगी वैश्विक अर्थव्यवस्था में विनियमों को ऐसे ''हथियारों'' के रूप में देखा जाना चाहिए जो अधिकांश नागरिकों के आर्थिक कल्याण को समुन्नत करते हुए लागत के औचित्य के साथ सामाजिक और पर्यावरणीय लाभ लाने का प्रयास करें। ***UPSC-2019***

165. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन-सा एक, सर्वाधिक तर्कसंगत, विवेकपूर्ण और निर्णायक निष्कर्ष निकाला जा सकता है?

(a) एक बेहतर नियामक व्यवस्था भारत को इसकी जनसंख्या के यथा-उपयुक्त आमाप की अर्थव्यवस्था प्राप्त करने में सहायक होगी।

(b) प्रतियोगी वैश्विक अर्थव्यवस्था में, भारत को विनियमों का युक्तिपूर्वक ही इस्तेमाल करना चाहिए।

(c) भारत में विनियम आज की अति प्रतियोगी वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ अपने एकीकरण का समर्थन नहीं करते।

(d) भारत की नियामक व्यवस्था के विकास में रोज़गार के सृजन और आर्थिक संवृद्धि के विचार को प्रबल रूप से रखा जाना चाहिए।

166. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं:

आजकल की वैश्विक अर्थव्यवस्था में,

1. विनियमों का प्रभावी इस्तेमाल स्थानीय बाज़ारों को बचाने के लिए नहीं किया गया है।

2. विनियमों का कार्यान्वयन करते समय सामाजिक एवं पर्यावरणीय सरोकारों की पूरे विश्व में सरकारों द्वारा आमतौर पर उपेक्षा की जाती है।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1, न ही 2

परिच्छेद–92

किसी अध्ययन में, वैज्ञानिकों ने अल्प-पोषित तथा सुपोषित शिशुओं और छोटे बच्चों के सूक्ष्मजीवोमों (माइक्रोबायोम्स) की तुलना की। कुपोषित और स्वस्थ बच्चों के मल के नमूनों से आहार-नली के रोगाणुओं का अलग किया गया। एक ही उम्र के स्वस्थ बच्चों में पाए गए सुविकसित "परिपक्व" सूक्ष्मजीवोम की तुलना में कुपोषित बच्चों में सूक्ष्मजीवोम "अपरिपक्व" और कम विविध पाया गया। कुछ अध्ययनों के अनुसार, माँ के दूध के रासायनिक संघटन में एक आपरिवर्तित शर्करा (सायलीलेटेड ओलिगोसैक्कराइड्स) पाई गई है। इसका शिशु द्वारा अपने खुद के पोषण के लिए उपयोग नहीं किया जाता। तथापि, शिशु का सूक्ष्मजीवोम संरचित करने वाले जीवाणु इस शर्करा पर, जो उनके खाद्य की तरह काम आता है, फलते-फूलते हैं। कुपोषित माताओं के दूध में इस शर्करा की मात्रा कम होती है। परिणामस्वरूप, उनके शिशुओं के सूक्ष्मजीवोम परिपक्व होने में विफल हो जाते हैं। इसके परिणामस्वरूप शिशुओं में कुपोषण पाया जाता है।

UPSC-2019

167. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन-सा एक सर्वाधिक तर्कसंगत, विवेकपूर्ण और निर्णायक निष्कर्ष निकाला जा सकता है?
(a) यदि बच्चों में कुपोषण की दशा आहार-नली के जीवाणुओं के कारण होती है, तो इसका उपचार नहीं किया जा सकता।
(b) कुपोषित शिशुओं की आहार-नलियों में परिपक्व सूक्ष्मजीवोम संरोपित किए जाने चाहिए।
(c) कुपोषित माताओं के शिशुओं को माँ के दूध की जगह डेरी का सायलीलेटेड ओलिगोसेक्कराइड्म से प्रबलित दूध पिलाया जाना चाहिए।
(d) पोषण पर आहार-नली के जीवाणुओं के अहानिकर प्रभावों पर अनुसंधान के नीतिगत निहितार्थ हैं।

168. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं:
1. अपरिपक्व आहार-नली जीवाणु संघटन के कारण कुपोषण से ग्रस्त बच्चों के उपचार के लिए एक समाधान प्रसंस्कृत जीवाणुयुक्त (प्रोबायोटिक) खाद्य पदार्थ हैं।
2. कुपोषित माताओं के शिशुओं में आमतौर पर कुपोषित होने की प्रवृत्ति होती है।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

परिच्छेद–93

पश्चिमी अंटार्कटिक प्रायद्वीप पर तापमान पिछले पाँच दशकों में भूमंडलीय औसत से लगभग पाँच गुना तेजी से बढ़े हैं। अनुसंधानकर्ताओं को अब पता लगा है कि पिघलते हुए हिमनदों के कारण अंटार्कटिक प्रायद्वीप के तटीय जलों में नितल जीवजात (बेंथोस) के बीच कुछ जाति विविधता नष्ट हो रही है, जिसका प्रभाव समग्र समुद्र अधस्तल पारितंत्र पर पड़ रहा है। उनका विश्वास है कि जल में निलंबित अवसाद के बढ़े हुए स्तर ही तटीय क्षेत्र में क्षीयमाण जैव-विविधता का कारण है।

UPSC-2019

169. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं:
1. भूमंडलीय तापन के कारण अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा हिमनदों के क्षेत्र तेजी से गर्म होते हैं।
2. भूमंडलीय तापन के परिणामस्वरूप कुछ क्षेत्रों में समुद्र अधस्तलीय अवसादन हो सकता है।
3. पिघलते हुए हिमनद कुछ क्षेत्रों में समुद्री जैव-विविधता को कम कर सकते हैं।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?

(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 3
(c) केवल 2 और 3 (d) 1, 2 और 3

परिच्छेद–94

किसी अनुसंधान दल ने उल्लू के एक दीर्घकालीन बसेरे की परीक्षा की। उल्लू छोटे स्तनपायी जंतुओं का शिकार करते हैं, और दीर्घकाल में एकत्रित होने वाले उन आहारों के उत्सर्जित अवशिष्टों से हमें पूरी पिछली सहस्राब्दि में छोटे स्तनपायी जंतुओं की बनावट और संरचना की समझ मिलती है। इस अनुसंधान से यह संकेत मिला है कि जब पृथ्वी लगभग 13,000 वर्ष पूर्व तीव्र तापन की अवधि से गुज़री, तब छोटे स्तनपायी जंतुओं का समुदाय स्थिर और प्रतिस्कन्दी बना रहा। किन्तु, उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम चतुर्थांश से पर्यावरण में मानव-कृत कारणों से हुए परिवर्तनों के परिणामस्वरूप जैवमात्रा और ऊर्जा-प्रवाह में बहुत बड़ी गिरावट आती गई। ऊर्जा-प्रवाह में इस नाटकीय गिरावट का अर्थ यह है कि आधुनिक पारितंत्रों में उतनी सहजता से अनुकूलन नहीं हो रहा है जितनी सहजता से अतीत में हुआ करता था। ***UPSC-2019***

170. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं:
1. भूमंडलीय तापन बारंबार होने वाली एक प्राकृतिक घटना है।
2. आसन्न भूमंडलीय तापन का छोटे स्तनपायी जंतुओं पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा।
3. पृथ्वी के प्राकृतिक प्रतिस्कंदन में कमी के लिए मनुष्य उत्तरदायी है।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?

(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 3
(c) केवल 2 और 3 (d) 1, 2 और 3

परिच्छेद–95

खाद्य की किस्मों का पूरे विश्व में विलोपन हो रहा है- और यह तेजी से हो रहा है। उदाहरण के लिए, उन्नीसवीं शताब्दी में उगाई जाने वाली सेब

की 7,000 किस्मों में से 100 से भी कम बची हैं। फिलिपींस में कभी धान की हजारों किस्में फल-फूल रही थीं; किन्तु अब मुश्किल से सौ किस्में तक ही उपजायी जा रही हैं। चीन में मात्र एक शताब्दी पूर्व खेती में प्रयुक्त होने वाली गेहूँ की किस्मों में से 90 प्रतिशत किस्में विलुप्त हो चुकी हैं। विगत समय में किसानों ने बहुत परिश्रम से अपने स्थानीय जलवायु और पर्यावरण की विलक्षणताओं के काफी अनुरूप फसलों को उपजाया और विकसित किया। हाल के पिछले वर्षों में, कुछ थोड़ी सी भारी उपज वाली किस्मों पर और खाद्य के प्रौद्योगिकी-चालित उत्पादन तथा वितरण पर हमारी भारी निर्भरता के कारण खाद्य फसलों की विविधता में कमी हो रही है। यदि कोई उत्परिवर्तनकारी फसल रोग या भावी जलवायु परिवर्तन उन कुछ फसल पादपों का संहार कर दे, जिन पर हम अपनी बढ़ती जनसंख्या को पेट भरने के लिए निर्भर हो चुके हैं, तो हमारे लिए उन कुछ किस्मों की घोर आवश्यकता हो सकती है, जिन्हें हमने विलुप्त हो जाने दिया। ***UPSC-2019***

171. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं:
    1. पादप जातियों के बड़े पैमाने पर विलोपन होने का प्रमुख कारण मनुष्य ही रहे हैं।
    2. मुख्यत: स्थानीय रूप से उपजायी जा रही फसलों के उपभोग से फसल विविधता सुनिश्चित होती है।
    3. खाद्य उत्पादन और वितरण की वर्तमान शैली अंततोगत्वा निकट भविष्य में खाद्य की कमी की समस्या की ओर ले जाएगी।
    4. हमारी खाद्य सुरक्षा, स्थानीय रूप से उपजायी जा रही फसलों की किस्मों को बचाए रखने की हमारी योग्यता पर निर्भर हो सकती है।

    उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणाएँ वैध हैं?

    (a) 1 और 3 (b) 2 और 4
    (c) 2 और 3 (d) 1 और 4

परिच्छेद–96

इसमें कोई संदेह नहीं कि राजनीतिक सिद्धांतकारों को अन्याय, जैसे कि अस्पृश्यता, के इतिहास को गंभीरता से लेना चाहिए। ऐतिहासिक अन्याय की अवधारणा में अनेक प्रकार के ऐतिहासिक अपकारों को विचार में लिया गया है, जो किसी न किसी रूप में वर्तमान में भी हो रहे हैं, और उनकी प्रवृत्ति ही ऐसी है कि उनमें सुधार न हो पाए। सुधार न होने देने के पीछे दो कारण कहे जा सकते हैं। एक तो यह, कि केवल इतना ही नहीं कि अन्याय की जड़ें इतिहास में गहरी जमी हुई हैं, बल्कि अन्याय स्वयं भी शोषण की आर्थिक संरचनाओं, भेदभाव की विचारधाराओं और प्रतिनिधित्व की रीतियों को संरचित करता है। दूसरा यह, कि ऐतिहासिक अन्याय की कोटि आमतौर पर बहुत से अपकारों, जैसे कि आर्थिक वंचन, सामाजिक भेदभाव और मान्यता के अभाव, के आर-पार फैली होती है। यह कोटि जटिल होती है, केवल इसलिए नहीं कि इसमें बहुत से अपकारों के बीच कोई स्पष्ट सीमा-रेखा नहीं होती, बल्कि इसलिए कि किसी न किसी अपकार की, आमतौर पर भेदभाव की, प्रवृत्ति दूसरे अपकारों से आंशिक रूप में स्वायत्तता हासिल कर लेने की होती है। यह भारत में सुधार के इतिहास से सिद्ध हुआ है। ***UPSC-2019***

172. इस परिच्छेद से कौन-सा मुख्य विचार अनुगत होता है?
    (a) भारत में अस्पृश्यता को राजनीतिक सिद्धांतकारों ने गंभीरता से नहीं लिया है।
    (b) ऐतिहासिक अन्याय किसी भी समाज में अपरिहार्य है और सुधार से सदैव परे है।
    (c) सामाजिक भेदभाव और वंचन की जड़ें दोषपूर्ण अर्थव्यवस्थाओं में हैं।
    (d) ऐतिहासिक अन्याय की प्रत्येक अभिव्यक्ति का सुधार करना, यदि असंभव नहीं, तो कठिन अवश्य है।

173. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं:
    1. आर्थिक भेदभाव मिटा देने से सामाजिक भेदभाव मिटता है।
    2. लोकतांत्रिक राज्यव्यवस्था ऐतिहासिक अपकारों के सुधार का सबसे अच्छा मार्ग है।

    उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?

    (a) केवल 1 (b) केवल 2
    (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

परिच्छेद–97

शिक्षा जीवन में महान बदलाव लाने की भूमिका निभाती है, खास कर इस तेज़ी से बदलते और वैश्वीकरण की तेज गति वाले विश्व में। विश्वविद्यालय बौद्धिक पूँजी के अभिरक्षक और संस्कृति तथा विशेषज्ञतापूर्ण ज्ञान के प्रवर्तक हैं। संस्कृति, चिंतन की क्रियाशीलता, और सौंदर्य तथा मानवीय भावनाओं की ग्रहणशीलता होती है। केवल बहुत सी जानकारियों से युक्त व्यक्ति ईश्वर की धरती पर सिर्फ एक उबाऊ इंसान भर है। हमारा लक्ष्य यह होना चाहिए कि ऐसे व्यक्ति तैयार किए जाएँ जिनके पास संस्कृति और विशेषज्ञतापूर्ण ज्ञान, दोनों हों। उनका विशेषज्ञतापूर्ण ज्ञान उन्हें आगे बढ़ने के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करेगा और उनकी संस्कृति उन्हें दर्शन की गहराइयों और कला की ऊंचाइयों तक ले जाएगी। साथ मिल कर यह मानवीय अस्तित्व को अर्थ प्रदान करेगा। ***UPSC-2019***

174. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं-
    1. सुशिक्षित व्यक्तियों से रहित समाज आधुनिक समाज में रूपांतरित नहीं हो सकता।
    2. संस्कृति अर्जित किए बिना, किसी भी व्यक्ति की शिक्षा पूर्ण नहीं होती।

    उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?

    (a) केवल 1 (b) केवल 2
    (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

परिच्छेद–98

मृदा, जिसमें हमारे लगभग सभी खाद्य-पदार्थ उगते हैं, एक जीवंत संसाधन है जिसके बनने में वर्षों लगते हैं। तथापि, यह मिनटों में नष्ट

हो सकती है। प्रति वर्ष 75 अरब (बिलियन) टन उर्वर मृदा क्षरण के कारण नष्ट हो जाती है। यह चिंताजनक है- और केवल खाद्य उत्पादकों के लिए ही नहीं। मृदा विशाल मात्रा में कार्बन डाइ-ऑक्साइड को कार्बनिक (ऑर्गेनिक) कार्बन के रूप में रोके रख सकती है और वायुमंडल में उन्मुक्त हो जाने से बचाए रख सकती है। ***UPSC-2019***

175. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं:
    1. बड़े पैमाने पर मृदा का क्षरण विश्व में व्यापक खाद्य असुरक्षा का प्रमुख कारण है।
    2. मृदा का क्षरण मुख्यत: मानवोद्भविक (एंथ्रोपोजेनिक) है।
    3. मृदा के धारणीय प्रबंधन से जलवायु परिवर्तन का सामना करने में मदद मिलती है।

    उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?
    (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 3
    (c) केवल 2 और 3 (d) 1, 2 और 3

परिच्छेद–99

असमानता न केवल दिखाई देती है, बल्कि अनेक उदाहरणों में सांख्यिकीय रूप से मापी जा सकती है, किंतु इसे संचालित करने वाली आर्थिक शक्ति न तो दिखाई देती है और न ही मापी जा सकती है। गुरुत्व बल की ही तरह, शक्ति असमानता का संघटक सिद्धांत है, चाहे वह आय, या संपत्ति, लिंग, वंश, धर्म और क्षेत्र, किसी की भी हो। इसके प्रभाव सभी क्षेत्रों में व्यापक रूप से दिखते हैं, किंतु जिन रीतियों से आर्थिक शक्ति दृश्यमान आर्थिक चरों को तोड़ती-मरोड़ती है वे अदृश्य रूप से अस्पष्ट बने रहते हैं। ***UPSC-2019***

176. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं:
    1. किसी समाज में असमानता के होने के लिए आर्थिक शक्ति ही एकमात्र कारण है।
    2. आय, सपंति, आदि विभिन्न प्रकार की असमानता शक्ति को सुदृढ़ करती है।
    3. आर्थिक शक्ति को प्रत्यक्ष आनुभविक विधियों की अपेक्षा उसके प्रभावों के माध्यम से बेहतर विश्लेषित किया जा सकता है।

    उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?
    (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 3
    (c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

परिच्छेद–100

जलवायु परिवर्तन के कारण वास्तव में कुछ पादपों को वर्धन-काल अधिक लंबे हो जाने और अधिक कार्बन डाइ-ऑक्साइड मिलने का लाभ पहुँच सकता है। तथापि, अपेक्षाकृत अधिक उष्ण विश्व के अन्य प्रभावों, जैसे कि नाशक जीव, सूखा और बाढ़ के अधिक हो जाने का अहानिकर होना कम हो जाएगा। विश्व कैसे अनुकूलन करेगा? अनुसंधानकर्ता यह अनुमान करते हैं कि 2050 तक मक्का, आलू, चावल और गेहूँ, इन चार पण्य वस्तुओं की उपयुक्त शस्य-भूमियाँ बदल जाएँगी, जिनसे कुछ जगहों पर किसानों को बाध्य होकर नई फसलों का रोपण करना पड़ेगा। तापन से कुछ कृषि-भूमियों को लाभ पहुँच सकता है, कुछ को नहीं। एकमात्र जलवायु ही उपज को निर्धारित नहीं करती; राजनीतिक परिवर्तन, विश्वव्यापी माँग, और कृषि पद्धतियाँ इस बात को प्रभावित करेंगी कि भविष्य में कृषि-भूमियाँ कैसा निष्पादन करेंगी। ***UPSC-2019***

177. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन-सा एक सर्वाधिक तर्कसंगत और विवेकपूर्ण निष्कर्ष निकाला जा सकता है?
    (a) भविष्य में वे किसान लाभ की स्थिति में होंगे जो अपनी पद्धतियों को आधुनिक बनाएँगे और अपने खेतों में विविध फसलें उगाएँगे।
    (b) जलवायु परिवर्तन शस्य-विविधता पर प्रतिकूल प्रभाव डालेगा।
    (c) प्रमुख फसलों को नई शस्य-भूमियों में स्थानांतरित करने से कृषि के अधीन सकल क्षेत्र में अत्यधिक वृद्धि होगी और इस प्रकार समग्र कृषि उत्पादन बढ़ेगा।
    (d) जलवायु परिवर्तन सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कारक है जो भविष्य में कृषि अर्थव्यवस्था को प्रभावित करेगा।

परिच्छेद–101

चमगादड़ के पंख चमड़ी की परतों की तरह दिखाई दे सकते हैं। किंतु अंदर-अंदर चमगादड़ की ठीक वैसे ही पाँच उँगलियाँ होती हैं जैसे ऑरेन्ग-उटैन या मनुष्य की होती हैं, साथ ही वैसे ही कलाई जुड़ी होती है कलाई की हड्डियों के गुच्छ से जो कि बाँह की लम्बी हड्डियों से जुड़ी होती है। इस बात से अधिक विलक्षण और क्या हो सकता है कि मनुष्य के हाथ, जो कस कर पकड़ने के लिए बने हैं, खोदने के लिए बने छछूँदर के हाथ, घोड़े के पाँव, सूँस के पाद, और चमगादड़ के पंख, ये सब एक ही प्रतिरूप में बने हों? ***UPSC-2019***

178. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन-सा एक, सर्वाधिक तर्कसंगत, वैज्ञानिक और विवेकपूर्ण निष्कर्ष निकाला जा सकता है?
    (a) हाथ की समान संरचना वाली विभिन्न जातियों (स्पीशीज़) का होना जैव-विविधता का उदाहरण है।
    (b) विभिन्न जातियाँ (स्पीशीज़) हाथ-पैरों का इस्तेमाल विभिन्न प्रकार के कार्यों के लिए करती हैं, यह जैव-विविधता का उदाहरण है।
    (c) मनुष्य और उपर्युक्त जंतुओं के हाथ-पैरों में समान संरचना का होना क्रम-विकास में हुए संयोग का उदाहरण है।
    (d) मनुष्य और उपर्युक्त जंतुओं के क्रम-विकास का साझा इतिहास है।

परिच्छेद–102

लगभग 56 मिलियन वर्ष पूर्व, अटलांटिक महासागर पूरी तरह फैला हुआ नहीं था और जंतु, जिनमें शायद हमारे प्राइमेट पूर्वज भी शामिल थे, एशिया से यूरोप होते हुए उत्तरी अमेरिका तक पूरे ग्रीनलैंड में चल कर जा सकते थे। पृथ्वी आज की अपेक्षा अधिक उष्ण थी, किंतु जैसे-जैसे पुरानूतन युग समाप्त हुआ और आदिनूतन युग प्रारंभ होने लगा, यह और अधिक, बल्कि तेजी से और आमूल रूप से, उष्ण होने वाली थी। कारण था कार्बन का अति विशाल रूप से भूवैज्ञानिकत: अकस्मात् निर्मुक्त होना। पुरानूतन-आदिनूतन ऊष्मीय महत्तम (पैलियोसीन-इओसीन थर्मल मैक्सीमम) या PETM कही जाने वाली इस अवधि के दौरान,

वायुमंडल में उतना कार्बन अंत:क्षिप्त हुआ जितना आज मनुष्य द्वारा पृथ्वी के कोयले, तेल और प्राकृतिक गैस के सारे भंडारों को जला देने पर अंत:क्षिप्त होता। PETM लगभग 1,50,000 वर्षों तक बनी रही जब तक कि कार्बन की अतिशय मात्रा पुन: अवशोषित नहीं हो गई। इससे सूखा, बाढ़, कीट प्लेग और कतिपय विलोपन हुए। पृथ्वी पर जीवन का अस्तित्व बना रहा - वास्तव में, यह फला-फूला - लेकिन इसमें घोर भिन्नता आ गई।

UPSC-2019

179. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं:
    1. भूमंडलीय तापन का इस ग्रह के जैव विकास पर प्रभाव पड़ता है।
    2. भू-संहतियों के पृथक् होने से वायुमंडल में कार्बन की विशाल मात्राएँ निर्मुक्त होती हैं।
    3. पृथ्वी के वायुमंडल का तापन बढ़ने से इसके वनस्पतिजात और प्राणिजात की संरचना में परिवर्तन हो सकता है।
    4. वर्तमान मानव-कृत भूमंडलीय तापन से अंतत: ठीक वैसी ही स्थितियाँ हो जाएँगी जैसी 56 मिलियन वर्ष पहले हुई थीं।

    उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणाएँ वैध हैं?

    (a) 1 और 2 (b) 3 और 4
    (c) 1 और 3 (d) 2 और 4

परिच्छेद–103

'मरुभवन (डेज़र्टिफिकेशन)' किसी पारितंत्र की जैव उत्पादकता के ह्रास की उस प्रक्रिया की व्याख्या करने वाला शब्द है, जिसके परिणामस्वरूप उत्पादकता की संपूर्ण हानि हो जाती है। यद्यपि यह घटना प्राय: शुष्क, अर्धशुष्क और अल्पार्द्र पारितंत्रों से जुड़ी हुई है, तथापि आर्द्र उष्णकटिबंधों में भी इसका प्रभाव अत्यंत नाटकीय हो सकता है। मानव-प्रभावित स्थलीय पारितंत्रों का दरिद्रण (इंपोवरिशमेंट) विविध रूपों में दिख सकता है। त्वरित अपरदन, जैसा कि देश के पर्वतीय क्षेत्रों में है; भूमि का लवणीभवन, जैसा कि देश के अर्धशुष्क और शुष्क 'हरितक्रांति' क्षेत्रों, उदाहरणार्थ- हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में है और स्थल गुणता ह्रास, जो कि भारत के सभी मैदानों पर वनस्पति-आच्छादन के व्यापक ह्रास और धान/गेहूँ कि एकरस एकधान्य कृषि के कारण होने वाली एक आम घटना है। वनोन्मूलन का एक प्रमुख दुष्परिणाम जलविज्ञान में प्रतिकूल परिवर्तनों और संबंधित मृदा और पोषकों की हानियों से संबंधित है। वनोन्मूलन के दुष्परिणाम निरपवाद रूप से अपरदनकारी हानियों के माध्यम से होने वाले स्थल अवक्रमण के कारण उत्पन्न होते हैं। उष्णकटिबंधीय एशिया, अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका में अपदरन उच्चतम स्तर पर हैं। उष्णकटिबंधों पर पहले से ही इसकी उच्च दरें वनोन्मूलन के, और वनों के नष्ट हो जाने के उपरांत की जाने वाली बेमेल भूमि-प्रबंधन प्रणालियों के कारण चिंताजनक दर से बढ़ रही है (उदाहरणार्थ, भारतीय संदर्भ में प्रमुख नदीतंत्रों-गंगा और ब्रह्मपुत्र के माध्यम से)। पर्वत के संदर्भ में, पर्वतीय मृदा का कम होता जा रहा आर्द्रता-धारण, हिमालयी क्षेत्र में अंतर्भौम झरनों और अपेक्षाकृत छोटी नदियों के सूखते जाने का श्रेय वन-आच्छादान में आए उग्र परिवर्तनों को दिया जा सकता है। एक अप्रत्यक्ष परिणाम, जल के माध्यम से होने वाले उच्चभूमि-निम्नभूमि की अन्योन्यक्रिया में आया उग्र बदलाव है। असम के चायरोपण करने वालों की तात्कालिक चिंता ब्रह्मपुत्र के कछारों के साथ आने वाले बारंबार आप्लावन के कारण चाय-बागानों को होने वाली क्षति के बारे में हैं, एवं चाय-बागान की क्षति और परिणामस्वरूप होने वाली चाय उत्पादकता की हानि, नदीतंत्र के बदलते मार्ग और गाद-भराई (सिल्टेशन) के कारण नदी-तल के बढ़ते जाते स्तर के कारण हैं। स्थल मरुभवन के अंतिम परिणाम हैं- मृदा निम्नीकरण, उपलब्ध जल और उसकी गुणता में परिवर्तन, और इसके परिणामस्वरूप, ग्रामीण समुदाय के आर्थिक कल्याण के लिये आवश्यक खाद्य, चारा और ईंधन-काष्ठ उत्पादन में होने वाला ह्रास। ***UPSC-2018***

180. इस परिच्छेद के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन-से वन-आच्छादन में आए ह्रास के परिणाम हैं?
    1. उपरिमृदा की हानि
    2. अपेक्षाकृत छोटी नदियों की हानि
    3. कृषि उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव
    4. भौमजल की हानि

    नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये।

    (a) केवल 1, 2 और 3 (b) केवल 2, 3 और 4
    (c) केवल 1 और 4 (d) 1, 2, 3 और 4

181. इस परिच्छेद से, निम्नलिखित में से कौन-सा/से सही निष्कर्ष (इंफेरेंस) निकाला जा सकता है/निकाले जा सकते हैं?
    1. वनोन्मूलन के कारण नदियों के मार्ग में परिवर्तन हो सकता है।
    2. भूमि का लवणीभवन केवल मानवीय क्रियाकलाप के कारण होता है।
    3. मैदानों में गहन एकधान्य कृषि-प्रथा, उष्णकटिबंधीय एशिया, अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका में मरुभवन का प्रमुख कारण है।

    नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये।

    (a) केवल 1
    (b) केवल 1 और 2
    (c) केवल 2 और 3
    (d) उपर्युक्त में से कोई भी सही निष्कर्ष नहीं है।

182. 'मरुभवन' के संदर्भ में, जैसा कि परिच्छेद में वर्णन किया गया है, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं-
    1. मरुभवन, केवल उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों की एक घटना है।
    2. बाढ़ और मरुभवन, वनोन्मूलन के अनिवार्य परिणाम हैं।

    उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?

    (a) केवल 1 (b) केवल 2
    (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

परिच्छेद–104

जलवायु परिवर्तन का सामना करने और उत्पादक कृषि, वानिकी तथा मत्स्यपालन को सुनिश्चित करने के लिये प्राकृतिक परिसंपत्तियों की विविधता की आवश्यकता होगी। उदाहरण के लिये, ऐसी फसल किस्मों की आवश्यशकता है जो सूखा, गर्मी और बढ़ी हुई CO_2 के अंतर्गत अच्छा निष्पादन करें। लेकिन फसलों को चुनने के लिये निजी-क्षेत्र और किसान-प्रेरित प्रक्रिया अतीत अथवा वर्तमान दशाओं में अपनाई गई एकरूप

किस्मों का समर्थन करती है न कि उन किस्मों का जो अपेक्षाकृत गर्म, आर्द्र अथवा शुष्क दशाओं में सतत उच्च उत्पादन देने में समर्थ हैं। वर्तमान फसलों, नस्लों और उनके वन्य संबंधियों के आनुवंशिक संसाधनों की अपेक्षाकृत व्यापक निकायों (पूल) को संरक्षित रखने के लिये त्वरित प्रजनन कार्यक्रमों की आवश्यकता है। अपेक्षाकृत अक्षुण्ण पारितंत्रों, जैसे कि वनारोपित जलग्रहण-क्षेत्र, मैंग्रोव, आर्द्रभूमियाँ जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को रोक सकते हैं। बदलती हुई जलवायु के अंतर्गत ये पारितंत्र स्वयं संकट में हैं और प्रबंधन उपागमों को अपेक्षाकृत अधिक पूर्व-सक्रिय और अनुकूली बनाना होगा। प्राकृतिक क्षेत्रों के बीच के संयोजनों, जैसे कि प्रवासन गलियारों, की आवश्यकता जातियों की गतिशीलता सुकर बनाने के लिये होगी जिससे कि जलवायु परिवर्तन का सामना किया जा सके। ***UPSC-2018***

183. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-से, जलवायु परिवर्तन का सामना करने के लिये सहायक होंगे?
    1. प्राकृतिक जल स्रोत का संरक्षण
    2. अपेक्षाकृत व्यापक जीन पूल का संरक्षण
    3. विद्यमान फसल प्रबंधन पद्धतियाँ
    4. प्रवासन गलियारे

    नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये।
    (a) केवल 1, 2 और 3 (b) केवल 1, 2 और 4
    (c) केवल 3 और 4 (d) 1, 2, 3 और 4

184. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं-
    1. जीविका का विविधीकरण, जलवायु परिवर्तन का सामना करने की एक योजना के रूप में कार्य करता है।
    2. एकधान्य फसल पद्धति को अपनाने से पादप किस्में और उनके वन्य संबंधी, समाप्ति की ओर अग्रसर होते हैं।

    उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?
    (a) केवल 1 (b) केवल 2
    (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

परिच्छेद–105

आज शीर्ष पर्यावरणीय चुनौती जन तथा इनकी आकांक्षाओं का समुच्चय है। यदि आकांक्षाएँ द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद की किफायती प्रकार की हों, तब बहुत अधिक संभावनाएँ बनती हैं, उस दृष्टिकोण की तुलना में जो पृथ्वी को एक विशालकाय शॉपिंग मॉल की भाँति देखता है। हमें चमक-दमक के आकर्षण के परे जाना चाहिये तथा यह समझना चाहिये कि पृथ्वी एक जैविक तंत्र की भाँति कार्य करती है। ***UPSC-2018***

185. उपर्युक्त परिच्छेद से, निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक निर्णायक और तार्किक निष्कर्ष (इंफेरेंस) निकाला जा सकता है?
    (a) पृथ्वी मानव की खाद्य, वस्त्र तथा आश्रय की केवल आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकती है।
    (b) पर्यावरणीय चुनौती का सामना करने का एकमेव मार्ग जनसंख्या को सीमित करना है।
    (c) हमारे लिये उपभोक्तावाद को कम करना अपने ही हित में है।
    (d) केवल जैविक तंत्रों का ज्ञान ही हमें पृथ्वी को बचाने में सहायक है।

परिच्छेद–106

कुछ लोगों का विश्वास है कि नेतृत्व एक ऐसा गुण है जो या तो जन्म से होता है या बिल्कुल नहीं होता। यह सिद्धांत मिथ्या है, क्योंकि नेतृत्व की कला अर्जित की जा सकती है और अवश्य ही सिखाई जा सकती है। यह खोज युद्ध के समय में की गई है और प्राप्त परिणाम प्रशिक्षकों को भी आश्चर्य में डाल सकते हैं। बाएँ जाने या दाएँ जाने के विकल्पों का सामना होने पर, हर सैनिक जल्दी ही समझ जाता है कि किसी भी तरफ जाने का एक त्वरित निर्णय लेना अंतहीन चर्चा में लगे रहने से बेहतर है। किसी भी दिशा का एक दृढ़ चुनाव कर लें तो उसमें सही होने का तब भी संयोग हो सकता है जबकि कुछ न करना लगभग निश्चित तौर पर गलत है। ***UPSC-2018***

186. इस परिच्छेद के लेखक का यह मत है कि
    (a) नेतृत्व को केवल युद्ध के अनुभव से ही सिखाया जा सकता है
    (b) नेतृत्व को अर्जित भी किया जा सकता है साथ ही सिखाया भी जा सकता है
    (c) प्रशिक्षण के परिणाम दिखाते हैं कि अपेक्षा से अधिक लोग नेतृत्व अर्जित कर लेते हैं
    (d) कठिन प्रशिक्षण के बावजूद बहुत कम नेता बनते हैं

परिच्छेद–107

सस्ते और प्रचुर माँस की तलाश के परिणास्वरूप फैक्टरी फार्म बनाए गए हैं जहाँ अधिक से अधिक पशुओं को क्रूर और शोचनीय दशाओं में छोटी-छोटी ढेरियों में ठूँसा जाता है। इस प्रकार के प्रचलनों के परिणामस्वरूप विश्व की अनेक स्वास्थ्य संबंधी देशांतरगामी महामारियाँ उठ खड़ी हुई हैं, जैसे कि एवियन फ्लू। विश्वभर में पशुधन का पालन लगातार बढ़ती हुई क्रूर और तंग दशाओं में किया जा रहा है, जहाँ पशु अपना लघु जीवन कृत्रिम प्रकाश, प्रतिजैविकों और वृद्धि हॉर्मोनों के ठसाठस इस्तेमाल के बीच वध होने के दिन तक व्यतीत करते हैं। माँस उत्पादन जल की अत्यधिक खपत मांगता है। माँस के प्रत्येक किलोग्राम के लिये 15000 लीटर जल की आवश्यकता होती है जबकि 1 किलोग्राम धान के लिये 3400 लीटर, 1 किलोग्राम अंडों के लिये 3300 लीटर और 1 किलोग्राम आलू के लिये 255 लीटर जल की आवश्यकता होती है। ***UPSC-2018***

187. इस परिच्छेद द्वारा दिया गया सर्वाधिक तर्कसंगत और निर्णायक संदेश कौन-सा है?
    (a) औद्योगिक पशुपालन (इंडस्ट्रियल फार्मिंग) से बड़े पैमाने पर माँस का उत्पादन करना सस्ता होता है और यह गरीब देशों को प्रोटीन पोषण प्रदान करने के लिये उपयुक्त है।
    (b) माँस उत्पादन उद्योग पशुओं के प्रति क्रूरता के विरुद्ध कानूनों का उल्लंघन करता है।
    (c) औद्योगिक पशुपालन के द्वारा बड़े पैमाने पर माँस उत्पादन अवांछनीय है और इसको तुरंत रोक देना चाहिये।
    (d) माँस उत्पादन की पर्यावरणीय लागत अधारणीय होती है जब इसका उत्पादन औद्योगिक पशुपालन से किया जाता है।

परिच्छेद–108

एक नर बाघ को पेंच बाघ अभयारण्य (टाइगर रिज़र्व) से हटाकर पन्ना राष्ट्रीय पार्क में ले जाकर रखा गया। बाद में, इस बाघ ने अपने घर की ओर 250 मील लंबी दूरी तय की। इस अकेले बाघ की यह यात्रा एक संकट पर प्रकाश डालती है। कई वन्य जीवन अभयारण्य मानवता के विशाल सागर के बीच भंगुर आवास के द्वीपों के रूप में विद्यमान हैं। फिर भी कोई बाघ शिकार, जोड़े और अपने क्षेत्र की तलाश में सौ मील के परास में घूम सकता है। भारत के लगभग एक-तिहाई बाघ, बाघ अभयारण्यों के बाहर रहते हैं। यह स्थिति मानव और पशु दोनों के लिये ही संकटपूर्ण है। बाघ और उसके शिकार तभी अलग रह सकते हैं यदि अभयारण्यों के बीच भूमि के मान्य गलियारे हों, ताकि वे बिना छेड़छाड़ के आ-जा सकें। ***UPSC-2018***

188. इस परिच्छेद द्वारा दिया गया सर्वाधिक तर्कसंगत और निर्णायक संदेश निम्नलिखित में से कौन-सा है?
   (a) मनुष्य और वन जीव के बीच संघर्ष को सुलझाया नहीं जा सकता चाहे हम जो भी प्रयत्न करें।
   (b) संरक्षित क्षेत्रों के बीच सुरक्षित वन्य जीव गलियारे, संरक्षण के प्रयत्नों का आवश्यक पहलू है।
   (c) भारत के लिये आवश्यक है कि वह और अधिक संरक्षित क्षेत्रों की घोषणा करे तथा और अधिक बाघ अभयारण्यों की स्थापना करे।
   (d) भारत के राष्ट्रीय पार्कों और बाघ अभयारण्यों का व्यावसायिक (प्रोफेशनल) प्रबंधन होना चाहिये।

189. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं-
   1. एक संरक्षित क्षेत्र से दूसरे संरक्षित क्षेत्र में स्थान-परिवर्तन हुए वन्य जीव के संरक्षण करने की रणनीति प्रायः सफल नहीं होती है।
   2. भारत में बाघों की सुरक्षा के लिये उपयुक्त कानून नहीं है और इसके संरक्षण के प्रयास असफल हो गए हैं जिसके कारण बाघ संरक्षित क्षेत्रों से बाहर रहने पर बाध्य हैं।

   उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?
   (a) केवल 1 (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

परिच्छेद-109

जलवायु परिवर्तन का निवारण करने की सभी कार्यवाहियों मे अंततः लागत अंतर्निहित होती है। भारत जैसे देशों के लिये अनुकूलन तथा प्रशमन योजनाओं और परियोजनाओं को अभिकल्पित एवं कार्यान्वित करने के लिये वित्तपोषण उचित रूप से बहुत अहम है। भारत जैसे विकासशील देश के लिये, जो कि जलवायु परिवर्तन की सर्वाधिक मार झेलनेवालों में से एक होगा, वित्तीय विकास की इसकी आवश्यकताओं को देखते हुए, यह समस्या और भी गंभीर है। अधिकतर देश निश्चित ही जलवायु परिवर्तन को वास्तविक खतरे के रूप में देखते हैं और अपने पास के सीमित संसाधनों को अधिक व्यापक और एकीकृत तरीके से प्रयोग कर इसके निवारण का प्रयास कर रहे हैं। ***UPSC-2018***

190. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं-
   1. जलवायु परिवर्तन, विकसित देशों के लिये चुनौती नहीं है।
   2. अनेक देशों के लिये, जलवायु परिवर्तन एक जटिल नीतिगत मुद्दा है और एक विकास का मुद्दा भी।
   3. वित्तीय तरीके और साधन खोजने होंगे ताकि विकासशील देश अपनी अनुकूलन क्षमता बढ़ा सकें।

   उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?
   (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 3
   (c) केवल 2 और 3 (d) 1, 2 और 3

परिच्छेद-110

भारत में जैव मात्रा तथा कोयले से खाना पकाना स्वास्थ्य समस्याओं के प्रमुख कारक के रूप में स्वीकृत है तथा निर्धन जनसमुदाय की स्त्रियाँ तथा बच्चे सर्वाधिक जोखिम का सामना करते हैं। प्रति वर्ष इन घरों में 10 लाख से अधिक असामयिक मृत्यु घरेलू वायु प्रदूषण, जो कि खाना बनाने में प्रयुक्त प्रदूषक ईंधन से होता है, के कारण होती है तथा ऐसे ईंधन से देश में बाह्य वायु प्रदूषण के चलते 1.5 लाख अन्य मृत्यु होती हैं। यद्यपि स्वच्छ खाना बनाने के ईंधन, जैसे कि एल.पी.जी, प्राकृतिक गैस तथा बिजली, का उपयोग करने वाले भारतीय जनसमुदाय का हिस्सा धीरे-धीरे बढ़ रहा है, प्रदूषक ठोस ईंधन को प्रमुख खाना बनाने वाले ईंधन के रूप में उपयोग में लाने वाली संख्या लगभग 30 वर्षों से 70 करोड़ पर स्थिर है। ***UPSC-2018***

191. उपर्युक्त परिच्छेद से, निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक निर्णायक और तार्किक निष्कर्ष (इंफेरेंस) निकाला जा सकता है?
   (a) ग्रामीण जन, स्वास्थ्य खतरों के प्रति बढ़ती जागरूकता के कारण प्रदूषक ठोस ईंधन के उपयोग को त्याग रहे हैं।
   (b) भारत में घर के अंदर के वायु प्रदूषण की समस्या का समाधान खाना बनाने के स्वच्छ ईंधन के उपयोग को आर्थिक सहायता देकर किया जा सकता है।
   (c) भारत को प्राकृतिक गैस के आयात को बढ़ाना चाहिये तथा अधिक बिजली उत्पादन करना चाहिये।
   (d) निर्धन घरों में खाना बनाने की गैस तक उनकी पहुँच बनाकर असामयिक मृत्यु को कम किया जा सकता है।

परिच्छेद-111

वैज्ञानिक ज्ञान के अपने संकट हैं लेकिन सभी बड़ी चीज़ों के साथ ऐसा ही है। उन संकटों के परे, जिनके द्वारा यह ज्ञात वर्तमान को डराता है, एक संभावित सुखी विश्व, जो कि गरीबी-रहित है, युद्ध-रहित है, रोगमुक्त है, का भविष्य निरूपण (विजन) करता है, जो और किसी से नहीं हो सकता। विज्ञान के चाहे कोई भी अप्रिय परिणाम हो सकते हों, वह अपनी विशेष प्रकृति में मुक्तिदाता है। ***UPSC-2018***

192. निम्नलिखित में से कौन-सा एक इस परिच्छेद का सबसे महत्त्वपूर्ण निहितार्थ है?
   (a) सुखी विश्व विज्ञान का स्वप्न है।
   (b) विज्ञान ही एक सुखी विश्व का निर्माण कर सकता है लेकिन

यह अकेला बड़ा संकट भी है।
(c) विज्ञान के बिना सुखी विश्व संभव नहीं है।
(d) सुखी विश्व का होना बिलकुल संभव नहीं है, विज्ञान हो या न हो।

परिच्छेद–112

आर्कटिक के जीवाश्म ईंधन, मत्स्य और खनिजों के विपुल भंडार अब वर्ष में कही अधिक लंबे समय तक सुलभ हैं। लेकिन अंटार्कटिका, जो कि शीत युद्ध (कोल्ड वार) के दौरान हुई अंटार्कटिक संधि के कारण शोषण से संरक्षित है और किसी भी देश द्वारा किये जाने वाले राज्यक्षेत्रीय दावों के अंतर्गत नहीं आता, के विपरीत आर्कटिक को उद्योगीकरण से सुरक्षित रखने के लिये कोई कानूनी व्यवस्था नहीं है, विशेषकर उस समय जब विश्व अधिक से अधिक संसाधनों के लिये लालायित है। हिम-मुक्त ग्रीष्म की सुस्पष्ट संभावना ने आर्कटिक तट वाले देशों को पिघलते सागर के बड़े खंड़ों से छीना-झपटी के लिये उत्साहित किया है। ***UPSC-2018***

193. निम्नलिखित में से कौन-सा एक इस परिच्छेद का सबसे महत्त्वपूर्ण निहितार्थ है?
(a) भारत आर्कटिक प्रदेश में राज्यक्षेत्रीय दावे कर सकता है और उसके संसाधनों तक इसकी मुक्त पहुँच हो सकती है।
(b) आर्कटिक में ग्रीष्म हिम का पिघलना भू-राजनीति में परिवर्तनों का कारण बनता है।
(c) आर्कटिक क्षेत्र में भविष्य में विश्व के संसाधनों की कमी की भारी समस्या को सुलझाएगा।
(d) आर्कटिक क्षेत्र में अंटार्कटिका से अधिक संसाधन हैं।

परिच्छेद–113

डब्ल्यू.टी.ओ. का सदस्य होने के कारण भारत उन समझौतों से बंधा हुआ है जिन पर भारत समेत इसके सदस्यों ने हस्ताक्षर किये हैं एवं अनुसमर्थन किया है। समझा जाता है कि कृषि समझौते के अनुच्छेद 6 के अनुसार कृषि उत्पादों के लिये न्यूनतम समर्थन मूल्य उपलब्ध कराने से विकृति आएगी और इसे सीमाओं के अधीन रखा गया है। 'न्यूनतम समर्थनों' से उत्पन्न आर्थिक सहायता विकासशील देशों के लिये कृषि उत्पादन के मूल्य के 10 प्रतिशत से अधिक नहीं हो सकती। भारत में पी.डी.एस. के लिये न्यूतमन समर्थन मूल्य और खाद्यान्न का सार्वजनिक स्टॉकहोल्डिंग आवश्यक है। यह संभव है कि कुछ वर्षों में उत्पादकों को दी जाने वाली आर्थिक सहायता कृषि उत्पादन के मूल्य के 10 प्रतिशत से अधिक बढ़ जाए। ***UPSC-2018***

194. उपर्युक्त परिच्छेद क्या निर्णायक संदेश देता है?
(a) भारत को अपने पी.डी.एस. को संशोधित करना चाहिये।
(b) भारत को डब्ल्यू.टी.ओ. का सदस्य नहीं होना चाहिये।
(c) भारत के लिये, खाद्य सुरक्षा व्यापार के साथ टकराव उत्पन्न करती है।
(d) भारत अपने गरीबों को खाद्य सुरक्षा देता है।

परिच्छेद–114

भारत की शिक्षा प्रणाली उस व्यापक शिक्षा प्रणाली के नमूने पर बनी है जो यूरोप में 19वीं शताब्दी में विकसित हुई और बाद में विश्व में फैल गई। इस व्यवस्था का उद्देश्य है कि बच्चों को 'अच्छे' नागरिक और उत्पादक श्रमिक के रूप में अनुकूलित किया जाए। यह व्यवस्था औद्योगिक युग के लिये उपयुक्त थी जिसमें सीमित क्षमतावाले अनुपालनकर्त्ता श्रमिकों की लगातार पूर्ति की मांग थी। हमारे शिक्षण संस्थान ऐसे कारखानों की तरह हैं जिनमें घंटियाँ होती हैं, वर्दियाँ होती हैं और शिक्षार्थियों के जत्थे तैयार किये जाते हैं, ऐसे शिक्षार्थी जो अनुपालन के लिये ही बनाए जा रहे हैं। किंतु, आर्थिक दृष्टिकोण से वर्तमान वातावरण पूर्णत: भिन्न है। यह एक जटिल, अस्थिर एवं भूमंडलीय रूप से अंत:संबंधित संसार है। ***UPSC-2018***

195. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं-
1. भारत अपनी त्रुटिपूर्ण शिक्षा प्रणाली के कारण तत्त्वत: विकासशील देश बना हुआ है।
2. आज के शिक्षार्थियों के लिये नए युग के कौशल-समूह प्राप्त करना आवश्यक है।
3. काफी संख्या में भारतीय शिक्षा प्राप्त करने के लिये कुछ विकसित देशों में जाते हैं क्योंकि वहाँ की शिक्षा प्रणालियाँ उन समाजों का पूर्ण प्रतिबिंब है जिनमें वे कार्य करती हैं।

उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?
(a) केवल 1 और 3
(b) केवल 2
(c) केवल 2 और 3
(d) 1, 2 और 3

परिच्छेद–115

आहार-नियंत्रण (डाइटिंग) का प्रचलन महामारी बन चुका है; हर कोई एक श्रेष्ठ शरीर प्राप्त करने के तरीके की तलाश में है। हम सभी संजातीयता, आनुवंशिकी, पारिवारिक इतिहास, लिंग, आयु, शारीरिक और मानसिक तथा आध्यात्मिक स्वास्थ्य स्थिति, जीवनशैली एवं वरीयता के संदर्भ में भिन्न हैं। इस कारण से हम किस आहार को सहन कर सकते हैं या किस आहार के प्रति संवेदनशील हैं, इस मामले में भी भिन्न हैं। अत: हम वास्तव में अनेक जटिलताओं में कमी एक आहार या आहार-पुस्तिका में नहीं ला सकते। यह विश्वभर मे मोटापे पर नियंत्रण रखने में आहारों (डाइट) की विफलता को स्पष्ट करता है। जब तक वजन बढ़ने के कारणों को भली-भाँति समझा नहीं जाएगा और उन्हें दूर नहीं किया जाएगा और जब तक आदतों को स्थायी तौर पर बदला नहीं जाएगा, कोई भी आहार शायद सफल नहीं होगा। ***UPSC-2018***

196. उपर्युक्त परिच्छेद से, कौन-सा सर्वाधिक तार्किक और तर्कसंगत निष्कर्ष (इंफेरेंस) निकाला जा सकता है?
(a) मोटापा विश्वभर में एक महामारी बन गया है।
(b) बहुत-से लोग श्रेष्ठ शरीर प्राप्त करने की धुन में लगे हैं।
(c) मोटापा तत्त्वत: एक असाध्य रोग है।
(d) मोटापे के लिये कोई पूर्ण आहार अथवा एक समाधान नहीं है।

परिच्छेद–116

एकधान्य कृषि करने में बड़े जोखिम हैं। कोई एकमात्र रोग या

पीड़क विश्वभर के खाद्य उत्पादन की कतारों का समूल नाश कर सकता है, एक भयप्रद संभावना यह है कि इसकी बढ़ती हुई और अपेक्षाकृत धनाढ्य जनसंख्या 2050 तक 70% और अधिक खाद्य का उपभोग करेगी। परिवर्तित होती जलवायु से ये जोखिम और अधिक बढ़ गए हैं। जैसे-जैसे ग्रह गर्म होगा और मानसून वर्षा में तीव्रता आएगी, एशिया की कृषिभूमियाँ बाढ़ग्रस्त हो जाएंगी। उत्तरी अमेरिका को अधिक गहन सूखे का सामना करना होगा और फसल के रोग नए परिमाणों तक विस्तारित हो जाएंगे। ***UPSC-2018***

197. निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तार्किक, तर्कसंगत और निर्णायक संदेश इस परिच्छेद द्वारा दिया गया है?
   (a) फसल आनुवंशिक विविधता को सुरक्षित रखना जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के विरुद्ध बीमा है।
   (b) बहुत अधिक जोखिम होने के बावजूद, विश्व में खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित करने का एकमात्र उपाय एकधान्य कृषि ही है।
   (c) अधिक से अधिक आनुवंशिक तौर पर रूपांतरित फसलें ही केवल सन्निकट खाद्य कमी से विश्व की रक्षा कर सकती है।
   (d) जलवायु परिवर्तन और तद्जनित खाद्य की कमी से एशिया और उत्तरी अमेरिका सबसे बुरी तरह आक्रांत होंगे।

परिच्छेद–117

अब शिक्षा की सार्वभौम पहुँच प्रदान करने की मात्र बात करना हमारे लिये पर्याप्त नहीं है। विद्यालयी सुविधाएँ उपलब्ध कराना एक आवश्यक पूर्वपेक्षा तो है, किंतु यह सुनिश्चित करने के लिये कि सभी बच्चे विद्यालय जाए और सीखने की प्रक्रिया में भाग लें, यह अपर्याप्त है। संभव है कि विद्यालय हो, किंतु बच्चे न जाए या कुछ माह बाद विद्यालय छोड़ दें। विद्यालय और सामाजिक सुव्यवस्था (सोशल मैपिंग) द्वारा, हमें व्यापक सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और अवश्य ही भाषाई और शैक्षिक मुद्दों को तथा उन कारकों को, जो कमज़ोर वर्गों और सुविधा-वंचित समूहों के बच्चों को, लड़कियों को भी, नियमित विद्यालय जाने और प्रारंभिक शिक्षा पूरी करने से रोकते हैं, सुलझाना चाहिये। हमारा ध्यान निर्धनतम और सबसे असुरक्षित वर्ग पर केंद्रित होना चाहिये क्योंकि ये सर्वाधिक अशक्त हैं और इन्हीं को अपने शिक्षा के अधिकार का अतिक्रमण होने या उससे वंचित होने का सबसे अधिक जोखिम है।

शिक्षा के अधिकार का दायरा नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा से कहीं आगे तक है और इसमें सभी के लिये गुणतापूर्ण शिक्षा शामिल है। गुणता शिक्षा के अधिकार का अभिन्न अंग है। यदि शिक्षा प्रक्रिया में गुणता का अभाव है, तो बच्चों को उनके अधिकार से वंचित किया जा रहा है। बच्चों का नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम यह अधिकथित करता है कि पाठ्यक्रम में कार्यकलाप, अन्वेषण और खोज के माध्यम से शिक्षा प्राप्ति का प्रावधान होना चाहिये। इससे हम पर यह बाध्यता आती है कि बच्चों को विद्या के निष्क्रिय प्राप्तकर्त्ता के रूप में देखने का नज़रिया बदला जाए और परीक्षाओं के आधार के रूप में पाठ्यपुस्तकों के उपयोग की परिपाटी से आगे बढ़ा जाए। शिक्षण और शिक्षा-ग्रहण प्रणाली को तनावमुक्त होना ही चाहिये और शिक्षार्थी-अनुकूली अधिगम प्रणाली की व्यवस्था के लिये पाठ्यक्रम सुधार का एक व्यापक कार्यक्रम शुरू किया जाना चाहिये जो अधिकाधिक संगत और सशक्तीकारक हो। शिक्षक उत्तरदायित्व प्रणालियों और प्रक्रियाओं से यह अवश्य सुनिश्चित होना चाहिये कि बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और शिक्षार्थी-अनुकूली वातावरण में शिक्षा प्राप्त करने के उनके अधिकार का उल्लंघन नहीं हो रहा है। परीक्षण और मूल्यांकन प्रणालियों की पुनर्परीक्षा कर उन्हें इस रूप में पुन: अभिकल्पित किया जाना चाहिये ताकि यह सुनिश्चित हो कि बच्चे विद्यालय और अनुशिक्षण (ट्यूशन) केंद्रों के बीच संघर्ष करते-करते अपने बचपन से वंचित रह जाने को बाध्य न हों। ***UPSC-2018***

198. इस परिच्छेद के अनुसार, निम्नलिखित में से किसका/किनका शिक्षा के अधिकार के अधीन सर्वोपरि महत्त्व है?
   1. सभी माता-पिता द्वारा अपने बच्चों को विद्यालय भेजा जाना
   2. विद्यालयों में पर्याप्त भौतिक आधारभूत संरचना की व्यवस्था
   3. शिक्षार्थी-अनुकूली शिक्षा-प्राप्ति प्रणाली विकसित करने हेतु पाठ्यक्रम सुधार करना

   नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये।
   (a) केवल 1 (b) केवल 1 और 2
   (c) केवल 3 (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

199. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं-
   1. शिक्षा का अधिकार बच्चों की शिक्षा-प्राप्ति प्रक्रिया के लिये शिक्षक का उत्तरदायित्व होने की गारंटी देता है।
   2. शिक्षा का अधिकार विद्यालयों में बच्चों के 100% नामांकन होने की गारंटी देता है।
   3. शिक्षा के अधिकार का आशय जनांकिकीय लाभांश का पूरा लाभ उठाने का है।

   उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?
   (a) केवल 1 (b) केवल 2 और 3
   (c) केवल 3 (d) 1, 2 और 3

200. इस परिच्छेद के अनुसार, शिक्षा में गुणता लाने हेतु निम्नलिखित में से कौन-सा एक निर्णायक है?
   (a) विद्यालय में बच्चों की और शिक्षकों की भी नियमित उपस्थिति सुनिश्चित करना
   (b) शिक्षकों को प्रोत्साहित करने के लिये उन्हें आर्थिक लाभ प्रदान करना
   (c) बच्चों को सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझाना
   (d) कार्यकलाप और खोज के माध्यम से शिक्षा-प्राप्ति का अंतर्निवेशन (लर्निंग)

201. इस परिच्छेद में सारभूत संदेश क्या है?
   (a) शिक्षा का अधिकार अब मूल अधिकार है।
   (b) शिक्षा का अधिकार समाज के निर्धन और दुर्बल वर्गों के बच्चों को विद्यालय जाने को समर्थ बनाता है।
   (c) नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के अधिकार में सभी के लिये गुणतापूर्ण शिक्षा शामिल होना चाहिये।
   (d) सरकार को, और माता-पिता को भी, यह सुनिश्चित करना चाहिये कि सभी बच्चे विद्यालय जाए।

परिच्छेद–118

विश्व की जनसंख्या 1990 में 1.6 अरब के लगभग थी- आज यह 7.2 अरब के लगभग है और बढ़ रही है। जनसंख्या वृद्धि दर किये

गए हाल के आकलनों से यह पूर्वानुमान होता है कि विश्व की जनसंख्या 2050 में 9.6 अरब और 2100 में 10.9 अरब हो जाएगी। यूरोप और उत्तरी अमेरिका के असदृश जहाँ केवल तीन से चार प्रतिशत जनसंख्या ही कृषि में लगी है, भारत की लगभग 47 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। यदि भारत सेवा क्षेत्र में लगातार प्रगति करता रहे और विनिर्माण क्षेत्र में तेज़ी से बढ़ता रहे, तो भी यह संभावना की जाती है कि 2030 के आस-पास जब भारत चीन से आगे निकल कर विश्व का सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश होगा, भारत की लगभग 42 प्रतिशत जनसंख्या प्रधान रूप से कृषि पर निर्भर होगी। ***UPSC-2018***

202. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तार्किक और तर्कसंगत निष्कर्ष (इंफेरेंस) निकाला जा सकता है?
   (a) कृषि क्षेत्र की समृद्धता भारत के लिये क्रांतिक महत्त्व की है।
   (b) भारतीय अर्थव्यवस्था प्रमुख रूप से इसकी कृषि पर निर्भर करती है।
   (c) भारत को अपनी तेज़ी से बढ़ती जनसंख्या को नियंत्रित करने के लिये कठोर उपाय अपनाने चाहिये।
   (d) भारत के कृषि-समुदायों को अपनी आर्थिक दशाओं में सुधार लाने के लिये अन्य व्यवसायों को अपना लेना चाहिये।

परिच्छेद–119

खाद्य-जात बीमारियाँ उत्पन्न करने वाले बहुत-से रोगाणुओं के विषय में जानकारी नहीं है। खाद्य संक्रमण खेत से लेकर थाली तक किसी भी चरण में हो सकता है। चूँकि खाद्य विषाक्तीकरण की अनेक घटनाएँ अप्रतिवेदित रह जाती हैं, वैश्विक खाद्य-जात बीमारियों का सही प्रसार अज्ञात है। अंतर्राष्ट्रीय परिवेक्षण में सुधार के कारण जन जागरूकता में बढ़ोतरी हुई है, तदपि खाद्य उत्पादन में तीव्र वैश्वीकरण से खाद्य को नियंत्रित करना तथा अनुरेखित करना कठिनतर होने के कारण उपभोक्ता की भेद्यता बढ़ गई है। डब्ल्यू.एच.ओ. के एक अधिकार का कथन है, "विश्व हमारी प्लेट पर है।" ***UPSC-2018***

203. निम्नलिखित में से कौन-सा उपर्युक्त परिच्छेद का सर्वाधिक तार्किक उपनिगमन (कोरोलरी) है?
   (a) खाद्य के विकल्प अधिक होने के कारण जोखिम अधिक आते हैं।
   (b) समस्त खाद्य-जात बीमारियों का उद्गम खाद्य प्रसंस्करण है।
   (c) हमें केवल स्थानीय उत्पादित खाद्य पर निर्भर रहना चाहिये।
   (d) खाद्य उत्पादन के वैश्वीकरण में कटौती लानी चाहिये।

परिच्छेद–120

मैं वैज्ञानिक हूँ, मेरा सौभाग्य है कि मै इस प्रकार का व्यक्ति हूँ जो विज्ञान के साधनों का उपयोग करके प्रकृति को समझ सकता है। लेकिन यह भी स्पष्ट है कि कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्न सचमुच में ऐसे हैं, जिनका उत्तर वास्तव में विज्ञान नहीं दे सकता, जैसे कि कुछ भी न होने के स्थान पर कुछ क्यों है? हम यहाँ क्यों है? उन दायरों में मैंने पाया कि आस्था इनकें उत्तरों के लिये बेहतर मार्ग उपलब्ध कराती है। मैं इसको विषम रूप से कालदोषयुक्त पाता हूँ कि आज की संस्कृति में एक व्यापक धारणा प्रतीत होती है कि वैज्ञानिक और आध्यात्मिक विचार असंगत है। ***UPSC-2018***

204. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तार्किक और तर्कसंगत निष्कर्ष (इंफेरेंस) निकाला जा सकता है?
   (a) यह विज्ञान न होकर आस्था है जो अंततः मानव-जाति की सभी समस्याओं को सुलझा सकती है।
   (b) विज्ञान और आस्था आपस में संपूरक हो सकते हैं यदि उनके समुचित दायरों को समझ लिया जाए।
   (c) कुछ ऐसे अत्यंत मूलभूत प्रश्न हैं जिनका उत्तर विज्ञान अथवा आस्था किसी से नहीं दे सकते हैं।
   (d) आज की संस्कृति में वैज्ञानिक विचारों को, आध्यात्मिक विचारों की तुलना में अधिक महत्त्व दिया जा रहा है।

परिच्छेद–121

यद्यपि मैंने बहुत-सी पुरानी परंपराओं एवं प्रथाओं को त्याग दिया है और मैं उत्सुक हूँ कि भारत स्वतः उन सभी बेड़ियों को उतार फेंके जो उसे बांधती हैं, रोकती हैं और उसके लोगों को विभाजित करती हैं, और उनमें से अधिसंख्य लोगों का दमन करती हैं तथा शरीर एवं आत्मा के स्वतंत्र विकास को रोकती हैं। यद्यपि मैं ये सब चाहता हूँ फिर भी अपने-आप को अतीत से पूरी तरह काटना नहीं चाहता। मुझे अपनी महान विरासत पर गर्व है जो हमारी रही है और है भी और मैं सचेत हूँ कि मैं भी, हम सभी की तरह, उस अटूट शृंखला की कड़ी हूँ जो इतिहास के उषाकाल के भारत के अविस्मरणीय अतीत से संबद्ध है। ***UPSC-2018***

205. लेखक चाहता है कि भारत अपने को अतीत के बंधनों से मुक्त करे, क्योंकि
   (a) वह भूतकाल के औचित्य को नहीं समझ पा रहा है
   (b) ऐसा कुछ नहीं है जिस पर गर्व किया जा सके
   (c) उसकी भारत के इतिहास में रुचि नहीं है
   (d) वे उसके भौतिक और आध्यात्मिक विकास को रोकते हैं

परिच्छेद–122

वायु गुणता सूचकांक [एयर क्वालिटी इंडेक्स (AQI)] बहुत से वायु प्रदूषकों की मापों को एकल संख्या अथवा अनुमतांक (रैटिंग) में जोड़कर दिखाने का एक तरीका है। आदर्श रूप में, इस सूचकांक को सतत रूप से अद्यतन (अपडेट) बनाए रखा जाता है और यह विभिन्न स्थानों पर उपलब्ध रहता है। AQI सर्वाधिक उपयोगी तब होता है जब बहुत सारे प्रदूषण-आँकड़े एकत्रित किये जा रहे हों, और जब प्रदूषण के स्तर, हमेशा तो नहीं, लेकिन आमतौर पर निम्न रहते हों। इन दशाओं में, यदि प्रदूषण-स्तर कुछ दिनों के लिये अचानक बढ़ जाए, तो जनता वायु गुणता चेतावनी की प्रतिक्रिया में शीघ्रता से निरोधक कार्रवाई (जैसे कि घर के भीतर रहना) कर सकती है। दुर्भाग्य से, शहरी भारत की हालत ऐसी नहीं है। कई बड़े भारतीय शहरों में प्रदूषण-स्तर इतने अधिक होते हैं कि वे वर्ष के ज़्यादातर दिनों में स्वास्थ्य के मानकों अथवा नियामक मानकों से ऊपर बने रहते हैं। यदि हमारा सूचकांक दिन पर दिन 'लाल/खतरनाक' दायरे में बना रहता है, तो किसी के लिये भी ज़्यादा कुछ करने लायक नहीं रहता सिवाय इसके कि इनकी उपेक्षा करने की आदत बना लें। ***UPSC-2017***

206. उपर्युक्त परिच्छेद से, निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तार्किक और तर्कसंगत निष्कर्ष (इंफरेंस) निकाला जा सकता है?
   (a) हमारे शहरों को प्रदूषण-मुक्त रखने के लिये हमारी सरकारें

पर्याप्त रूप से ज़िम्मेवार नहीं हैं।

(b) हमारे देश में वायु गुणता सूचकांकों की बिल्कुल ही आवश्यकता नहीं है।

(c) हमारे बड़े शहरों के बहुत-से निवासियों के लिये वायु गुणता सूचकांक सहायक नहीं है।

(d) प्रत्येक शहर में, प्रदूषण-संबंधी समास्याओं के बारे में जन-जागरूकता बढ़नी चाहिये।

परिच्छेद–123

उत्पादक नौकरियाँ (जॉब) विकास के लिये महत्त्वपूर्ण हैं और अच्छी नौकरी सर्वोत्तम प्रकार का समावेशन है। हमारी आधी से अधिक जनसंख्या कृषि पर आधारित है, परंतु अन्य देशों के अनुभव से पता चलता है कि यदि कृषि में प्रति व्यक्ति आय पर्याप्त रूप में बढ़ानी है, तो कृषि पर निर्भर व्यक्तियों की संख्या में कमी लानी चाहिये। जहाँ एक ओर उद्योग में नौकरियाँ सृजित की जा रही हैं, वहीं असंगठित क्षेत्र में ऐसी बहुत सारी नौकरियाँ निम्न उत्पादकता वाली गैर-संविदागत नौकरियाँ होती हैं, जिनमें कम आय और न के बराबर सुरक्षा दी जाती है तथा कोई हितलाभ नहीं दिये जाते। इनकी तुलना में सेवा-क्षेत्र की नौकरियाँ उच्च उत्पादकता वाली होती हैं, परंतु सेवाओं में रोज़गार-वृद्धि हाल के वर्षों में धीमी रही है। ***UPSC-2017***

207. उपर्युक्त परिच्छेद से, निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तार्किक और तर्कसंगत निष्कर्ष (इन्फरेंस) निकाला जा सकता है?

(a) रोज़गार-वृद्धि और समावेशन को सुनिश्चित करने के लिये हमें अत्यधिक उत्पादक सेवा-क्षेत्र की नौकरियों के तीव्रतर विकास की परिस्थितियों को उत्पन्न करना आवश्यक है।

(b) आर्थिक वृद्धि और समावेशन को सुनिश्चित करने के लिये हमें खेतिहर कामगारों को अत्यधिक उत्पादक विनिर्माण और सेवा-क्षेत्रों में स्थानांतरित करना आवश्यक है।

(c) हमें कृषि की उत्पादकता बढ़ाने के साथ-साथ कृषि-क्षेत्र से बाहर उत्पादक नौकरियों के तीव्रतर विकास की परिस्थितियों को उत्पन्न करना आवश्यक है।

(d) कृषि में प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि लाने के लिये हमें उच्च उपज वाली संकर किस्मों और आनुवंशिकत: रूपांतरित (जेनेटिकली मॉडिफाइड) फसलों की खेती पर बल देना आवश्यक है।

परिच्छेद–124

भूमि उपयोग में दृश्यभूमि पैमाने के उपागम (अप्रोच) से, संरक्षित क्षेत्रों के बाहर और अधिक जैव विविधता को प्रोत्साहन मिल सकता है। वर्ष 1998 में प्रभंजन (हरिकन) 'मिच' के दौरान, पर्यावरणीय कृषि पद्धतियों के उपयोग करने वाले फार्मों का, पारंपरिक तकनीकों के उपयोग करने वाले फार्मों की तुलना में, क्रमश: होंडुरास, निकारागुआ और ग्वाटेमाला में 58 प्रतिशत, 70 प्रतिशत और 99 प्रतिशत कम नुकसान हुआ। कोस्टारिका में, वानस्पतिक वात-रोधों (विंडब्रेक्स) और बाड़ कतारों के उपयोग से, पक्षी-विविधता में वृद्धि के साथ-साथ, किसानों की चरागाह और कॉफ़ी से होने वाली आय में अत्यधिक बढ़ोतरी हुई। प्राकृतिक अथवा अर्ध-प्राकृतिक आवास के निकटतर कृषि-भूमि होने पर मधुमक्खियों से होने वाला परागण अधिक प्रभावकारी होता है, यह निष्कर्ष महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि विश्व की 107 अग्रणी फसलों का 87 प्रतिशत परागण करने वाले जंतुओं पर निर्भर है। कोस्टारिका, निकारागुआ और कोलम्बिया में, वन-पशुचारी (सिल्वोपास्टरल) प्रणालियाँ, जिनमें पेड़ चरागाह-भूमियों के साथ एकीकृत हैं, पशु-उत्पादन की धारणीयता में सुधार ला रही हैं और किसानों की आय में विविधता और वृद्धि ला रही हैं। ***UPSC-2017***

208. उपर्युक्त परिच्छेद से, निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तार्किक और तर्कसंगत निष्कर्ष (इंफरेंस) निकाला जा सकता है?

(a) जैव विविधता को बढ़ाने वाली कृषि पद्धतियाँ प्राय: फार्म उत्पादन में वृद्धि और आपदाओं के प्रति असुरक्षितता को कम करती हैं।

(b) विश्व के सभी देशों को पर्यावरणीय कृषि के स्थान पर पारंपरिक कृषि करने के लिये प्रोत्साहित किया जाना चाहिये।

(c) संरक्षित क्षेत्रों में, वहाँ की जैव विविधता को नष्ट किये बिना, पर्यावरणीय कृषि की अनुमति दी जानी चाहिये।

(d) खाद्य फसलों की उपज तब अत्यधिक होगी, जब उनकी खेती में पर्यावरणीय कृषि पद्धतियाँ अपनाई जाए।

परिच्छेद–125

भारतीय विनिर्माण के लिये मध्यावधि चुनौती, निम्नतर से उच्चतर प्रौद्योगिक क्षेत्रों, निम्नतर से उच्चतर मूल्यवर्द्धित क्षेत्रों और निम्नतर से उच्चतर उत्पादकता क्षेत्रों की ओर बढ़ने की है। मध्यम प्रौद्योगिक उद्योगों में मुख्य रूप से अत्यधिक पूंजी लगी होती है और उनमें संसाधनों का प्रक्रमण होता है; और उच्च प्रौद्योगिक उद्योगों में मुख्य रूप से अत्यधिक पूंजी और प्रौद्योगिकी लगी हाती है। संपूर्ण GDP में विनिर्माण के हिस्से को प्रकल्पित 25 प्रतिशत तक बढ़ाने के लिये भारतीय विनिर्माण क्षेत्र को, विश्व-बाज़ार के उन क्षेत्रों पर कब्ज़ा करने की आवश्यकता है, जिनमें बढ़ती हुई मांग की प्रवृत्ति है। इन क्षेत्रों में अधिकांश रूप से उच्च प्रौद्योगिकी और पूंजी लगी होती है। ***UPSC-2017***

209. उपर्युक्त परिच्छेद से, निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तार्किक और तर्कसंगत निष्कर्ष (इंफरेंस) निकाला जा सकता है?

(a) मध्यम प्रौद्योगिकी और संसाधनों का प्रक्रमण करने वाले उद्योगों में, भारत की GDP, उच्च मूल्य-वर्द्धित तथा उच्च उत्पादकता स्तरों को दर्शाती है।

(b) भारत में अत्यधिक पूंजी और प्रौद्योगिकी वाले विनिर्माण का संवर्द्धन करना संभव नहीं है।

(c) भारत को, अनुसंधान एवं विकास, प्रौद्योगिकी उन्नयन और कौशल विकास में, सरकारी निवेश बढ़ाना चाहिये और गैर-सरकारी निवेशों को प्रोत्साहित करना चाहिये।

(d) भारत ने पहले से ही विश्व-बाज़ार के उन क्षेत्रों में बड़ा हिस्सा प्राप्त कर लिया है, जिनमें बढ़ती हुई मांग की प्रवृत्ति है।

परिच्छेद–126

पिछले दशक के दौरान भारतीय कृषि, खाद्यान्न व तिलहन का रिकॉर्ड

उत्पादन करने के साथ, और अधिक सुदृढ़ हुई है। इसके परिणामस्वरूप बढ़ी हुई खरीद से भंडारगृहों में खाद्यान्न के स्टॉक में भारी बढ़ोतरी हुई है। भारत चावल, गेहूँ, दूध, फलों व सब्ज़ियों के विश्व के शीर्ष उत्पादकों में से एक है। फिर भी विश्वभर के न्यूनपोषित लोगों का एक-चौथाई भाग भारत में है। औसत रूप से, देश के कुल परिवारों के लगभग आधे परिवारों में कुल व्यय का लगभग आधा व्यय भोजन पर होता है।

UPSC-2017

210. निम्नलिखित में से कौन-सा उपर्युक्त परिच्छेद का सर्वाधिक तार्किक उपनिगमन (कोरोलरी) है?
   (a) गरीबी और कुपोषण को कम करने के लिये खेत-से-थाली (फार्म-टु-फोर्क) तक की मूल्य शृंखला की दक्षता में बढ़ोतरी करना ज़रूरी है।
   (b) कृषि उत्पादकता में बढ़ोतरी करने से भारत में स्वत: ही गरीबी और कुपोषण दूर हो जाएगा।
   (c) भारत की कृषि उत्पादकता पहले से ही बहुत अधिक है और इसे और अधिक बढ़ाया जाना आवश्यक नहीं है।
   (d) सामाजिक कल्याण और गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों के लिये अधिक निधि का आबंटन करने से भारत से गरीबी और कुपोषण का अंतत: उन्मूलन हो जाएगा।

परिच्छेद–127

राज्य मोतियों के समान हैं तथा केंद्र वह धागा है जो उन्हें हार में पिरोता है; यदि धागा टूट जाए, तो मोती बिखर जाते हैं। ***UPSC-2017***

211. निम्नलिखित विचारों में से कौन-सा एक उपर्युक्त कथन की संपुष्टि करता है?
   (a) शक्तिशाली केंद्र और शक्तिशाली राज्य, एक मज़बूत संघ (फेडरेशन) बनाते हैं।
   (b) शक्तिशाली केंद्र, राष्ट्रीय अखंडता हेतु एक बंधनकारी शक्ति है।
   (c) शक्तिशाली केंद्र, राज्य स्वायत्तता में बाधा है।
   (d) राज्य की स्वायत्तता, संघ (फेडरेशन) के लिये पूर्वपेक्षा है।

परिच्छेद–128

वास्तव में, मेरा मानना है कि इंग्लैंड में निर्धनतम व्यक्ति को भी एक वैसा ही जीवन जीना है जैसा कि महानतम व्यक्ति को, और इसलिये सच में, मैं मानता हूँ कि यह स्पष्ट है कि हर उस व्यक्ति को, जिसे सरकार के अधीन रहना है, सबसे पहले अपनी सहमति से स्वयं को सरकार के अधीन कर देना चाहिये, और मेरा यह अवश्य मानना है कि इंग्लैंड का निर्धनतम व्यक्ति, सही अर्थ में ऐसी सरकार से कतई बंधा हुआ नहीं है जिसके अधीन स्वयं को करने में उसकी कोई राय नहीं रही हो। ***UPSC-2017***

212. उपर्युक्त कथन किसके समर्थन में तर्क प्रस्तुत करता है?
   (a) संपत्ति का सबको समान वितरण
   (b) शासितों की सहमति के अनुसार शासन
   (c) निर्धनों के हाथ में शासन
   (d) धनिकों का स्वत्वहरण (एक्सप्रोप्रिएशन)

परिच्छेद–129

परंपरागत संस्थाओं, पहचानों और निष्ठाओं के विघटन से दो-तरफा (ऐम्बिवैलेंट) स्थितियाँ उत्पन्न होने की संभावना होती है। यह संभव है कि कुछ लोग परंपरागत समूहों के साथ फिर से अपनी नई पहचान बनाएँ, जबकि अन्य लोग राजनीतिक विकास की प्रक्रियाओं से उत्पन्न होने वाले नए समूहों और प्रतीकों के साथ खुद को जोड़ लें। इसके अतिरिक्त, राजनीतिक विकास की यह प्रवृत्ति होती है कि वह विविध वर्गों, जनजातियों, क्षेत्रों, कुलों, भाषाओं, धर्मों, व्यवसायों एवं अन्य समूहों की समूह-चेतना का पोषण करती है। ***UPSC-2017***

213. निम्नलिखित में से कौन-सी एक उपर्युक्त परिच्छेद की सर्वश्रेष्ठ व्याख्या है?
   (a) राजनीतिक विकास एक दिशा में चलने वाली प्रक्रिया नहीं है, क्योंकि इसमें संवृद्धि और ह्रास दोनों शामिल होते हैं।
   (b) परंपरागत समाज राजनीतिक विकास के सकारात्मक पक्षों का प्रतिरोध करने में सफल होते हैं।
   (c) परंपरागत समाजों के लिये, लंबे समय से बनी हुई निष्ठाओं से मुक्त हो पाना असंभव है।
   (d) परंपरागत निष्ठाओं को बनाए रखना राजनीतिक विकास में सहायक होता है।

परिच्छेद–130

पूरे विश्व में सरकार में प्रादेशिकता की एक महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति रही है, जिसके परिणामस्वरूप 1990 के दशक से क्षेत्रों और समुदायों की ओर सत्ता का व्यापक अधोगामी हस्तांतरण होता रहा है। इस प्रक्रिया को, जिसके अंतर्गत अवराष्ट्रीय (सब-नैशनल) स्तर पर नई राजनीतिक सत्ताएँ और निकाय बनते हैं तथा उनकी क्षमता और शक्ति में वृद्धि होती है, प्रति-विकास (डीवोल्यूशन) कहते हैं। प्रति-विकास की विशेषता है कि यह तीन घटकों से मिलकर बनता है, वे घटक हैं- राजनीतिक वैधता, सत्ता का विकेंद्रीकरण और संसाधनों का विकेंद्रीकरण। यहाँ राजनीतिक वैधता से आशय है निचले जनसमुदाय से विकेंद्रीकरण की प्रक्रिया के लिये उठने वाली मांग, जिसमें विकेंद्रीकरण के लिये एक राजनीतिक बल निर्मित करने की क्षमता होती है। कई मामलों में, आधारिक स्तर पर इसके लिये पर्याप्त राजनीतिक संघटन हुए बिना ही सरकार के ऊपरी स्तर से विकेंद्रीकरण की प्रक्रिया प्रारंभ कर दी जाती है, और ऐसे मामलों में विकेंद्रीकरण की प्रक्रिया प्राय: अपने उद्देश्य पूरे नहीं कर पाती।

UPSC-2017

214. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तार्किक, तर्कसंगत और विवेचनात्मक निष्कर्ष (इंफरेंस) निकाला जा सकता है?
   (a) अवराष्ट्रीय राजनीतिक सत्ताओं के निर्माण के लिये और इस तरह सफल प्रति-विकास और विकेंद्रीकरण सुनिश्चित करने के लिये शक्तिशाली जन नेताओं का उभरना अनिवार्य है।
   (b) सरकार के ऊपरी स्तर से क्षेत्रीय समुदायों पर, कानून द्वारा या अन्यथा, प्रति-विकास और विकेंद्रीकरण को अधिरोपित किया जाना चाहिये।
   (c) प्रति-विकास को सफल होने के लिये ऐसे लोकतंत्र की अपेक्षा होती है, जिसमें निचले स्तर के लोगों की इच्छा की स्वतंत्र अभिव्यक्ति हो और आधारिक स्तर पर उनकी सक्रिय भागीदारी हो।
   (d) प्रति-विकास होने के लिये जनता में क्षेत्रवाद की प्रबल भावना

होनी आवश्यक है।

परिच्छेद–131

हम डिजिटल काल में रहते हैं। डिजिटल सिर्फ ऐसी कोई चीज़ नहीं है जिसका उपयोग कार्यनीतिक रूप से और विशिष्ट तौर पर कुछ कार्यों को पूरा करने के लिये किया जाता है। हमारा यह प्रत्यक्ष-ज्ञान कि हम कौन हैं, और हमारे चारों ओर की दुनिया से हम किस प्रकार जुड़ते हैं, और वे तरीके जिनसे हम अपने जीवन, श्रम और भाषा के प्रभाव-क्षेत्रों को परिभाषित करते हैं, बड़े पैमाने पर डिजिटल प्रौद्योगिकियों द्वारा ही संरचित हैं। डिजिटल हर जगह विद्यमान है और हवा की तरह अदृश्य है। हम डिजिटल व्यवस्थाओं के अंदर रहते हैं, हम अंतरंग गैजेटों (Gadgets) के साथ जीते हैं, हमारी पारस्परिक क्रियाएँ डिजिटल माध्यमों के द्वारा होती हैं, और डिजिटल की मौजूदगी तथा उसकी कल्पना ने हमारे जीवन को प्रभावशाली ढंग से पुनर्संरचित कर दिया है। डिजिटल, सिर्फ एक उपकरण मात्र होने से अधिक, वह दशा और संदर्भ है जो हमारे आत्म-बोध, समाज-बोध और शासन संरचना बोध के आकार और सीमाओं को परिभाषित करता है। ***UPSC-2017***

215. निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तार्किक और सारभूत संदेश है, जो उपर्युक्त परिच्छेद द्वारा व्यक्त किया गया है?
   (a) डिजिटल प्रौद्योगिकियों का उपयोग कर शासन की सभी समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।
   (b) डिजिटल प्रौद्योगिकियों की बात करना हमारे जीवन और जीवनचर्या की बात करना है।
   (c) हमारी रचनात्मकता और कल्पना को डिजिटल माध्यमों के बिना अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता।
   (d) डिजिटल तंत्रों का उपयोग भविष्य में मानव के अस्तित्व के लिये अत्यावश्यक है।

परिच्छेद–132

IMF ने ध्यान दिलाया है कि एशिया की तेज़ी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं के समक्ष 'मध्यम-आय जाल (मिडिल-इनकम ट्रैप)' में पड़ जाने का संकट बना हुआ है। इसका आशय यह है कि इन देशों की औसत आय, जो कि अब तक तेज़ी से बढ़ती रही है, एक बिंदु से आगे बढ़ना बंद कर देगी- एक ऐसा बिंदु जो कि विकसित पश्चिमी जगत् की आय से काफी कम है। IMF, आधारभूत संरचना से लेकर कमज़ोर संस्थाओं तक और अपर्याप्त रूप से अनुकूल समष्टि-आर्थिक (मैक्रोइकॉनॉमिक) दशाओं तक, मध्यम-आय जाल के कई कारणों की पहचान करता है- जिनमें से कोई भी आश्चर्यजनक नहीं है। परंतु, IMF कहता है कि सर्वरूपेण कारण उत्पादकता की वृद्धि में गिरावट है। ***UPSC-2017***

216. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तार्किक, तर्कसंगत और विवेचनात्मक निष्कर्ष (इंफरेंस) निकाला जा सकता है?
   (a) किसी देश के मध्यम-आय अवस्था में पहुँच जाने से उसकी उत्पादकता में ह्रास होने का खतरा होता है, जिसके परिणामस्वरूप आय की वृद्धि रुक जाती है।
   (b) मध्यम-आय जाल में फँसना तेज़ी से बढ़ रही अर्थव्यवस्थाओं की एक सामान्य विशेषता है।
   (c) एशिया की उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं के लिये वृद्धि की गति को बनाए रखने की कोई आशा नहीं है।
   (d) जहाँ तक उत्पादकता की वृद्धि का प्रश्न है, एशिया की अर्थव्यवस्थाओं का निष्पादन संतोषजनक नहीं है।

परिच्छेद–133

नवप्रवर्तनकारी (इनोवेटिव) भारत समावेशी होने के साथ-साथ प्रौद्योगिकी में भी उन्नत होगा जिससे सभी भारतीयों के जीवन में सुधार आएगा। नवप्रवर्तन तथा R&D बढ़ती हुई सामाजिक असमानता को कम कर सकते हैं और द्रुत शहरीकरण से उत्पन्न होने वाले दबावों से मुक्त कर सकते हैं। कृषि और ज्ञान-केंद्रित (नॉलेज-इंटेंसिव) निर्माण और सेवाओं के बीच उत्पादकता में बढ़ते हुए विभेद से, आय-असमानता के बढ़ने का खतरा है। भारत की R&D प्रयोगशालाओं और विश्वविद्यालयों को गरीब लोगों की ज़रूरतों पर ध्यान रखने के लिये प्रोत्साहित कर तथा ज्ञान-अर्जन के लिये अनौपचारिक प्रतिष्ठानों की क्षमता में उन्नयन कर, एक नवप्रवर्तन और अनुसंधान कार्यक्रम इस प्रभाव का सामना कर सकता है। समावेशी नवप्रवर्तन वस्तु और सेवाओं की लागत को कम कर सकता है तथा गरीब लोगों के लिये आय-अर्जन के अवसर उत्पन्न कर सकता है। ***UPSC-2017***

217. निम्नलिखित में से कौन-सी सर्वाधिक तार्किक और तर्कसंगत पूर्वधारणा है, जो कि उपर्युक्त परिच्छेद से बनाई जा सकती है?
   (a) गाँवों से शहरों के प्रवसन को कम करने के लिये नवप्रवर्तन तथा R&D ही एकमात्र रास्ता है।
   (b) तेज़ी से विकसित होने वाले प्रत्येक देश को कृषि और अन्य क्षेत्रों में उत्पादकता के बीच विभेद को न्यूनतम करने की आवश्यकता है।
   (c) समावेशी नवप्रवर्तन तथा R&D एक समतावादी समाज बनाने में सहायता कर सकते हैं।
   (d) द्रुत शहरीकरण केवल तभी होता है जब किसी देश की आर्थिक वृद्धि तीव्रगामी होती है।

परिच्छेद–134

यह संभावना है कि जलवायु परिवर्तन के कारण बहुत बड़ी संख्या में लोग बढ़ते हुए पर्यावरणीय जोखिम में पड़ जाएगे और फलस्वरूप प्रवसन के लिये विवश हो जाएंगे। अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को प्रवासियों की इस नई श्रेणी की पहचान अभी करनी है। अंतर्राष्ट्रीय कानूनों के अंतर्गत शरणार्थी शब्द का एक सुस्पष्ट अर्थ होने के कारण, जलवायु के कारण होने वाले शरणार्थियों की परिभाषा और स्थिति पर कोई सर्वसम्मति नहीं है। यह बात अभी भी समझ से बाहर है कि जलवायु परिवर्तन प्रवसन के मूल कारण के रूप में कैसे कार्य करेगा। यदि जलवायु के कारण होने वाले शरणार्थियों की पहचान हो, तब भी उन्हें संरक्षण कौन प्रदान करेगा? जलवायु परिवर्तन के कारण जो अंतर्राष्ट्रीय प्रवसन होता है, उस पर कहीं अधिक बल दिया गया है। परंतु आवश्यकता है कि जलवायु-प्रभावित लोगों के, देशों के अंदर में हुए प्रवसन की भी पहचान की जाए ताकि उनकी समस्याओं को उचित प्रकार से दूर किया जा सके। ***UPSC-2017***

218. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तर्कसंगत

निष्कर्ष (इंफरेंस) निकाला जा सकता है?

(a) विश्व, विशाल पैमाने पर जलवायु के कारण होने वाले शरणार्थियों के प्रवसन का सामना नहीं कर पाएगा।

(b) जलवायु परिवर्तन को और आगे बढ़ने से रोकने के लिये हमें तरीके और साधन ढूँढ़ने चाहिये।

(c) भविष्य में जलवायु परिवर्तन लोगों के प्रवसन का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कारण होगा।

(d) जलवायु परिवर्तन और प्रवसन के बीच संबंध अभी भी सही रूप में समझा नहीं गया है।

परिच्छेद–135

अनेक किसान फसल को हानि पहुँचाने वाले कीटों को मारने के लिये संश्लेषित कीटनाशकों का उपयोग करते हैं। कुछ विकसित देशों में तो कीटनाशकों की खपत 3000 ग्राम प्रति हेक्टेयर तक पहुँच रही है। दुर्भाग्यवश, ऐसी कई रिपोर्ट हैं कि ऐसे यौगिकों में अंतर्निहित विषाक्तता होती है जो खेती करने वालों के, उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य और पर्यावरण को खतरे में डालती हैं। संश्लेषित कीटनाशक सामान्यत: पर्यावरण में लगातार बने रहते है। खाद्य-शृंखला में प्रवेश कर वे सूक्ष्मजैविक विविधता को नष्ट कर पारिस्थितिक (इकोलॉजिकल) असंतुलन उत्पन्न करते हैं। इनके अंधाधुंध उपयोग के परिणामस्वरूप कीटों में कीटनाशकों के विरुद्ध प्रतिरोध विकसित हुआ है, प्राकृतिक संतुलन में गड़बड़ी हुई है और जिन समष्टियों का उपचार किया जा चुका है वे फिर से बढ़ गई हैं। वानस्पतिक कीटनाशक का उपयोग कर प्राकृतिक पीड़क नियंत्रण करना इनके उपयोगकर्त्ताओं एवं पर्यावरण के लिये अपेक्षाकृत सुरक्षित होता है, क्योंकि वे सूर्य के प्रकाश की मौजूदगी में कुछ घंटों अथवा दिनों में ही हानिरहित यौगिकों में टूट जाते हैं। कीटनाशी विशेषताओं से युक्त पौधे लाखों वर्षों से, पारिस्थितिक तंत्र पर कोई खराब या प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, प्रकृति में मौजूद हैं। अधिकांश मृदाओं में आमतौर पर पाए जाने वाले अनेक सूक्ष्मजीव इन्हें सरलता से विघटित कर देते हैं। वे परभक्षियों की जैविक विविधता को बनाए रखने और पर्यावरणीय संदूषण तथा मनुष्यों के स्वास्थ्य संकटों को कम करने में सहायक हैं। पौधों से बनाए गए वानस्पतिक कीटनाशक जैव निम्नीकरणीय (बायोडीग्रेडेबल) होते हैं और फसल सुरक्षा में उनका उपयोग करना व्यावहारिक रूप से एक धारणीय विकल्प है। ***UPSC-2017***

219. उपर्युक्त परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं:

1. आधुनिक कृषि में, संश्लेषित कीटनाशकों का उपयोग कभी भी नहीं करना चाहिये।
2. धारणीय कृषि का एक उद्देश्य अल्पतम पारिस्थितिक असंतुलन को सुनिश्चित करना है।
3. वानस्पतिक कीटनाशक, संश्लेषित कीटनाशकों की तुलना में, अधिक प्रभावकारी होते हैं।

उपर्युक्त पूर्वधारणाओं में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2

(c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

220. जैव कीटनाशकों के विषय में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

1. वे मानवीय स्वास्थ्य के लिये खतरनाक नहीं हैं।
2. वे पर्यावरण में लगातार बने रहते हैं।
3. वे किसी भी पारिस्थितिक तंत्र की जैव विविधता बनाए रखने के लिये अनिवार्य हैं।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये।

(a) केवल 1 (b) केवल 1 और 2

(c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

परिच्छेद–136

जलवायु परिवर्तन से एक चीज़ जो अकाट्य रूप से होती है, वह ऐसी घटनाओं का घटित होना या बढ़ना है जिनसे संसाधनों के कम होते जाने में और तेज़ी आती है। इन घटते जाते संसाधनों के ऊपर होने वाली प्रतिस्पर्धा के परिणामस्वरूप राजनीतिक या और भी हिंसक संघर्ष सामने आता है। संसाधन-आधारित संघर्ष शायद ही कभी खुलेआम हुए हैं, इसलिये उन्हें विलग रूप में देखना कठिन होता है। इसके बजाय वे ऊपरी परतें ओढ़कर राजनीतिक रूप से कहीं अधिक स्वीकार्य रूप में सामने आते हैं। जल-जैसे संसाधनों के ऊपर होने वाले संघर्ष प्राय: पहचान या विचारधारा के वेश का लबादा ओढ़े रहते हैं। ***UPSC-2017***

221. उपर्युक्त परिच्छेद का निहितार्थ क्या है?

(a) संसाधन-आधारित संघर्ष सदैव राजनीतिक रूप से प्रेरित होते हैं।

(b) पर्यावरणीय और संसाधन-आधारित संघर्षों के समाधान के लिये कोई राजनीतिक हल नहीं होते।

(c) पर्यावरणीय मुद्दे संसाधनों पर दबाव बनाए रखने और राजनीतिक संघर्ष में योगदान करते हैं।

(d) पहचान अथवा विचारधारा पर आधारित राजनीतिक संघर्ष का समाधान नहीं हो सकता।

परिच्छेद–137

जो व्यक्ति निरंतर इस हिचकिचाहट में रहता है कि दो चीज़ों में से किसे पहले करे, वह दोनों में से कोई भी नहीं करेगा। जो व्यक्ति संकल्प करता है, लेकिन उसकी काट में किसी मित्र द्वारा दिये गए पहले सुझाव पर ही अपने संकल्प को बदल देता है- जो कभी एक राय कभी दूसरी राय के बीच आगा-पीछा करता रहता है और एक योजना से दूसरी योजना तक रुख बदलता रहता है- वह किसी भी चीज़ को कभी पूरा नहीं कर सकता। ज़्यादा से ज़्यादा वह बस ठहरा रहेगा, और संभवत: सभी चीज़ों में पीछे हटता रहेगा। जो व्यक्ति पहले विवेकपूर्वक परामर्श करता है, फिर दृढ़ संकल्प करता है, और कमज़ोर मनोवृत्ति को भयभीत करने वाली तुच्छ कठिनाइयों से निर्भीक बने रहकर अटल दृढ़ता से अपने उद्देश्यों को पूरा करता है- केवल वही व्यक्ति किसी भी दिशा में उत्कर्ष की ओर आगे बढ़ सकता है। ***UPSC-2017***

222. इस परिच्छेद से निकलने वाला मूलभाव क्या है?

(a) हमें पहले विवेकपूर्वक परामर्श करना चाहिये, फिर दृढ़ संकल्प करना चाहिये

(b) हमें मित्रों के सुझावों को नकार देना चाहिये और बिना बदले अपनी राय पर कायम रहना चाहिये

(c) हमें विचारों में सदैव उदार होना चाहिये

(d) हमें सदैव कृतसंकल्प और उपलब्धि-अभिमुख होना चाहिये

परिच्छेद–138

आर्कटिक महासागर में ग्रीष्म ऋतु के दौरान समुद्री बर्फ अपेक्षाकृत अधिक पहले और तेज़ी से पिघल रही है, और शीत ऋतु की बर्फ के बनने में अधिक देरी लग रही है। पिछले तीन दशकों में, ग्रीष्म ऋतु की बर्फ का परिमाण लगभग 30 प्रतिशत तक घट गया है। ग्रीष्म-गलन की अवधि के लंबे हो जाने से संपूर्ण आर्कटिक खाद्यजाल के, जिसमें ध्रुवीय भालू शीर्ष पर हैं, छिन्न-भिन्न हो जाने का संकट सामने आ गया है।

UPSC-2017

223. उपर्युक्त परिच्छेद से, निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक निर्णायक संदेश व्यक्त होता है?
   (a) जलवायु परिवर्तन के कारण, आर्कटिक ग्रीष्म ऋतु अल्पावधि की परंतु उच्च तापमान वाली हो गई है।
   (b) ध्रुवीय भालुओं की उत्तरजीविता को सुनिश्चित करने के लिये उन्हें दक्षिणी ध्रुव में स्थानांतरित किया जा सकता है।
   (c) ध्रुवीय भालुओं के न होने से आर्कटिक क्षेत्र की खाद्य-शृंखलाएँ लुप्त हो जाएंगी।
   (d) जलवायु परिवर्तन से ध्रुवीय भालुओं की उत्तरजीविता के लिये संकट उत्पन्न हो गया है।

परिच्छेद–139

लोग क्यों खुले में शौच जाना ज़्यादा पसंद करते हैं और शौचालय रखना नहीं चाहते, या जिनके पास शौचालय है वे उसका उपयोग कभी-कभी ही करते हैं? हाल के अनुसंधान से दो खास बातें सामने आई हैं: शुद्धता और प्रदूषण के विचार, और न चाहना कि गड्ढे या सेप्टिक टैंक भरें, क्योंकि उन्हें खाली करना होता है। ये वे मुद्दे हैं जिन पर कोई बात नहीं करना चाहता, लेकिन यदि हम खुले में शौच की प्रथा का उन्मूलन करना चाहते हैं, तो इन मुद्दों का सामना करना होगा और इनसे समुचित तरीके से निपटना होगा। ***UPSC-2017***

224. उपर्युक्त परिच्छेद से, निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक निर्णायक संदेश व्यक्त होता है?
   (a) शुद्धता और प्रदूषण के विचार इतने गहरे समाए हैं कि उन्हें लोगों के दिमाग से हटाया नहीं जा सकता।
   (b) लोगों को समझना होगा कि शौचालय का उपयोग और गड्ढों का खाली किया जाना शुद्धता की बात है न कि अशुद्धता की।
   (c) लोग अपनी पुरानी आदतों को बदल नहीं सकते।
   (d) लोगों में न तो नागरिक बोध है और न ही एकांतता (प्राइवेसी) का बोध है।

परिच्छेद–140

पिछले दो दशकों में, विश्व के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में 50 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जबकि समावेशी संपदा मात्र 6 प्रतिशत बढ़ी है। हाल के दशकों में, GDP-संचालित आर्थिक निष्पादन ने मानव पूंजी जैसी समावेशी संपदा को और जंगल, जमीन एवं जल जैसी प्राकृतिक संपदा को केवल क्षति ही पहुँचाई है। पिछले दो दशकों में, विश्व की मानव पूंजी, जो कुल समावेशी संपदा का 57 प्रतिशत है, केवल 8 प्रतिशत ही बढ़ी, जबकि प्राकृतिक संपदा में, जो कुल समावेशी संपदा का 23 प्रतिशत है, विश्वस्तर पर 30 प्रतिशत की गिरावट आई।

UPSC-2017

225. निम्नलिखित में से कौन-सा, उपर्युक्त परिच्छेद का सर्वाधिक निर्णायक निष्कर्ष (इंफरेंस) है?
   (a) प्राकृतिक संपदा के विकास पर और अधिक बल दिया जाना चाहिये।
   (b) केवल GDP-संचालित संवृद्धि न तो वांछनीय है, न ही धारणीय है।
   (c) विश्व के देशों का आर्थिक निष्पादन संतोषजनक नहीं है।
   (d) वर्तमान परिस्थितियों में विश्व को और अधिक मानव पूंजी की आवश्यकता है।

परिच्छेद–141

2020 तक, जब वैश्विक अर्थव्यवस्था में 5.6 करोड़ (56 मिलियन) युवाओं की कमी होने की आशंका है तब भारत अपने 4.7 करोड़ (47 मिलियन) अधिशेष युवाओं से इस कमी को पूरा कर सकता है। भारत में दो अंकों में विकास निर्मुक्त करने के एक मार्ग के रूप में श्रम सुधारों को इसी संदर्भ में प्रायः उद्धृत किया जाता है। 2014 में, भारत का श्रमबल जनसंख्या का लगभग 40 प्रतिशत होने का आकलन था, लेकिन इस बल का 93 प्रतिशत असंगठित क्षेत्र में था। विगत पूरे दशक में रोज़गार की चक्रवृद्धि वार्षिक संवृद्धि दर [कंपाउंड एनुअल ग्रोथ रेट (CAGR)] 0.5 प्रतिशत तक मंद हो चुकी थी, जहाँ पिछले वर्ष के दौरान लगभग 1.4 करोड़ (14 मिलियन) नौकरियाँ सृजित हुईं जबकि श्रमबल में लगभग 1.5 करोड़ (15 मिलियन) की वृद्धि हुई। ***UPSC-2017***

226. निम्नलिखित में से कौन-सा, उपर्युक्त परिच्छेद का सर्वाधिक तार्किक निष्कर्ष (इंफरेंस) है?
   (a) भारत की अपनी जनसंख्या वृद्धि पर अवश्य ही नियंत्रण करना चाहिये, ताकि इसकी बेरोज़गारी दर कम हो सके।
   (b) भारत के विशाल श्रमबल का उत्पादक रूप से इष्टतम उपयोग करने के लिये भारत में श्रम सुधारों की आवश्यकता है।
   (c) भारत अतिशीघ्र दो अंकों का विकास प्राप्त करने की ओर अग्रसर है।
   (d) भारत अन्य देशों को कौशल-प्राप्त युवाओं की पूर्ति करने में सक्षम है।

परिच्छेद–142

सबसे पहला पाठ, जो हमें तब पढ़ाया जाना चाहिये जब हम उसे समझने के लिये पर्याप्त बड़े हो चुके हों, यह है कि कार्य करने की बाध्यता से पूरी स्वतंत्रता अप्राकृतिक है, और इसे गैर-कानूनी होना चाहिये, क्योंकि हम कार्य-भार के अपने हिस्से से केवल तभी बच सकते हैं, जब हम इसे किसी दूसरे के कंधों पर डाल दें। प्रकृति ने यह विधान किया है कि मानव प्रजाति, यदि कार्य करना बंद कर दे, तो भुखमरी से नष्ट हो जाएगी। हम इस निरंकुशता से बच नहीं सकते हैं। हमें इस प्रश्न को सुलझाना पड़ेगा कि हम अपने-आपको कितना अवकाश देने में समर्थ

हो सकते हैं। ***UPSC-2017***

227. उपर्युक्त परिच्छेद का यह मुख्य विचार है कि
(a) मनुष्यों के लिये यह आवश्यक है कि वे काम करें
(b) कार्य एवं अवकाश के मध्य संतुलन होना चाहिये
(c) कार्य करना एक निरंकुशता है जिसका हमें सामना करना ही पड़ता है
(d) मनुष्य के लिये कार्य की प्रकृति को समझना आवश्यक है

परिच्छेद–143

आदतों का पालन करने में कोई हानि नहीं है, जब तक कि वे आदतें हानिकारक न हों। वास्तव में हममें से अधिकांश लोग, आदतों के पुलिंदे से शायद कुछ अधिक ही व्यवस्थित होते हैं। हम अपनी आदतों से मुक्त हो जाए तो जो बचेगा उस पर शायद ही कोई ध्यान देना चाहे। हम इनके बिना नहीं चल सकते। वे जीवन की प्रक्रिया को सरल बनाती हैं। इनसे हम बहुत-सी चीज़ें अपने-आप करने में समर्थ होते हैं, जिन्हें, यदि हम हर बार नया और मौलिक विचार देकर करना चाहें, तो अस्तित्व एक असंभव उलझन बन जाए। ***UPSC-2017***

228. लेखक का सुझाव है कि आदतें
(a) हमारे जीवन को कठिन बनाती हैं
(b) हमारे जीवन में सटीकता लाती हैं
(c) हमारे लिये जीना आसान करती हैं
(d) हमारे जीवन को मशीन बनाती हैं

परिच्छेद–144

हमारे सामने कठोर परिश्रम है। जब तक हम अपने प्रण को संपूर्णत: पूरा नहीं कर लेते, जब तक हम भारत के सभी लोगों को वह नहीं बना देते जो कि नियति चाहती है कि वे हों, तब तक हममें से किसी को आराम नहीं करना है। हम एक महान देश के नागरिक हैं, सुस्पष्ट प्रगति के कगार पर हैं, और हमें उन उच्च आदर्शों को जीवन में उतारना है। हम सभी, चाहे हम किसी भी धर्म के हों, समान रूप से भारत की संतान हैं और हमारे अधिकार, विशेषाधिकार और दायित्व बराबर हैं। हम सांप्रदायिकता अथवा मानसिक संकीर्णता को बढ़ावा नहीं दे सकते, क्योंकि कोई भी देश, जिसके लोग विचारों अथवा आचरण में संकीर्ण हों, महान नहीं हो सकता। ***UPSC-2017***

229. उपर्युक्त परिच्छेद का लेखक लोगों को क्या प्राप्त करने की चुनौती देता है?
(a) उच्च जीवन आदर्श, प्रगति और विशेषाधिकार
(b) समान विशेषाधिकार, नियति की पूर्णता और राजनीतिक सहिष्णुता
(c) साहसिक उत्साह और आर्थिक समानता
(d) कठोर परिश्रम, भाईचारा और राष्ट्रीय एकता

परिच्छेद–145

"रूसो के अनुसार, व्यक्ति अपनी सत्ता को और अपनी पूरी शक्ति को सम्मिलित रूप से समष्टि-संकल्प (जेनरल विल) के सर्वोच्च निर्देश के अधीन रखता है, और हम अपनी समष्टिगत क्षमता में प्रत्येक सदस्य को संपूर्ण के अविच्छिन्न अंश के रूप में लेते हैं।" ***UPSC-2017***

230. उपर्युक्त परिच्छेद के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन-सा समष्टि-संकल्प के स्वरूप का सर्वोत्तम वर्णन है?
(a) व्यक्तियों की वैयक्तिक इच्छाओं का कुल योग
(b) व्यक्तियों के निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा जो स्पष्ट कहा गया है।
(c) सामूहिक कल्याण जो व्यक्तियों की वैयक्तिक इच्छाओं से भिन्न है।
(d) समुदाय के वस्तुपरक (मेटीरियल) हित

परिच्छेद–146

लोकतांत्रिक राज्य में, जहाँ लोगों में उच्च कोटि की राजनीतिक परिपक्वता होती है, सर्वसत्ताधारी विधिनिर्माता निकाय के संकल्प और जनता के संगठित संकल्प में बिरले ही संघर्ष होता है। ***UPSC-2017***

231. उपर्युक्त परिच्छेद का क्या निहितार्थ है?
(a) लोकतंत्र में, संप्रभुता के वास्तविक पालन में, बल प्रमुख तथ्य होता है।
(b) परिपक्व लोकतंत्र में, संप्रभुता के वास्तविक पालन में, बल एक बड़ी सीमा तक प्रमुख तथ्य होता है।
(c) परिपक्व लोकतंत्र में, संप्रभुता के वास्तविक पालन में, बल का प्रयोग अप्रासंगिक है।
(d) परिपक्व लोकतंत्र में, संप्रभुता के वास्तविक पालन में, बल घटकर एक उपांतिक तथ्य (मार्जिनल फेनॉमिनॉन) रह जाता है।

परिच्छेद–147

सफल लोकतंत्र राजनीति में व्यापक रुचि एवं भागीदारी पर निर्भर करता है, जिसमें मतदान एक आवश्यक अंग है। जान-बूझकर इस प्रकार की रुचि न रखना और मतदान न करना, एक प्रकार की अंतर्निहित अराजकता है; यह स्वतंत्र राजनीतिक समाज के लाभों का उपभोग करते हुए अपने राजनीतिक दायित्व से मुख मोड़ना है। ***UPSC-2017***

232. यह परिच्छेद किससे संबंधित है?
(a) मतदान का दायित्व
(b) मतदान का अधिकार
(c) मतदान की स्वतंत्रता
(d) राजनीति में भागीदारी का अधिकार

परिच्छेद–148

किसी स्वतंत्र देश में, नेता की स्थिति तक पहुँचने वाला व्यक्ति सामान्यत: उत्कृष्ट चरित्र और योग्यता वाला व्यक्ति होता है। इसके साथ ही, इसका पुर्वानुमान कर लेना भी सामान्यत: संभव होता है कि वह इस स्थिति तक पहुँचेगा, क्योंकि जीवन के प्रारंभिक वर्षों में ही उसके चारित्रिक गुणों को देखा जा सकता है। किंतु किसी तानाशाह के मामले में यह हमेशा सत्य नहीं होता; वह प्राय: अपनी सत्ता की स्थिति तक संयोग से पहुँच जाता है, अनेक बार तो सिर्फ अपने देश की दुखद स्थिति के कारण ही। ***UPSC-2017***

233. इस परिच्छेद में यह सुझाया गया प्रतीत होता है कि
(a) नेता अपनी भावी स्थिति का पूर्वानुमान कर लेता है
(b) नेता सिर्फ किसी स्वतंत्र देश के द्वारा ही चुना जाता है
(c) किसी भी नेता को इस बात पर ध्यान रखना चाहिये कि उसका

देश निराशा से मुक्त रहे

(d) किसी देश में बनी हुई निराशा की परिणति कभी-कभी तानाशाही में होती है

परिच्छेद–149

तकनीकी प्रगति में निहित मानव-जाति के लिये सबसे बड़ा वरदान, निश्चित रूप से, भौतिक संपदा का संचय नहीं है। किसी व्यक्ति के द्वारा जीवन में इनकी जितनी मात्रा का वास्तविक रूप में उपभोग किया जा सकता है, वह बहुत अधिक नहीं है। किंतु फुरसत के समय के उपभोग की संभावनाएँ उसी संकीर्ण सीमा तक सीमित नहीं हैं। जिन्होंने फुरसत के समय के उपहार के सदुपयोग का कभी अनुभव नहीं किया है, वे लोग इसका दुरुपयोग कर सकते हैं। फिर भी, समाजों की एक अल्पसंख्या द्वारा फ़ुरसत के समय का रचनात्मक उपयोग किया जाना ही आदिम स्तर के बाद सभी मानव-प्रगति का मुख्य प्रेरणास्रोत रहा है। ***UPSC-2017***

234. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं:

1. फुरसत के समय को लोग सदैव उपहार के रूप में देखते हैं तथा इसका उपयोग और अधिक भौतिक संपदा अर्जित करने के लिये करते हैं।
2. कुछ लोगों द्वारा फ़ुरसत के समय का, नूतन और मौलिक चीज़ों के उत्पादन के लिये, उपयोग किया जाना ही मानव-प्रगति का मुख्य स्रोत रहा है।

इनमें से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

परिच्छेद–150

इस अभिकथन में किंचित से कहीं अधिक सच्चाई है कि "सामयिक घटनाओं की बुद्धिमत्तापूर्ण व्याख्या के लिये प्राचीन इतिहास का कार्यसाधक ज्ञान होना आवश्यक है।" किंतु जिस बुद्धिमान ने समझदारी के ये शब्द कहे थे, उसने विशेष रूप से इतिहास की प्रसिद्ध लड़ाइयों के अध्ययन से होने वाले फायदों पर अवश्य ही कुछ-न-कुछ कहा होगा, क्योंकि इनमें हममें से उनके लिये सबक शामिल हैं जो नेतृत्व करते हैं या नेता बनने की अभिलाषा रखते हैं। इस तरह के अध्ययन से कुछ ऐसे गुण और विशेषताएँ उद्घाटित होंगी, जिनसे विजेताओं के लिये जीत परिचालित हुई–और वे कतिपय कमियाँ भी, जिनके कारण हारने वालों की हार हुई; और विद्यार्थी यह देखेगा कि यही प्रतिरूप सदियों से लगातार, बार-बार पुनर्घटित होता है। ***UPSC-2017***

235. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं:

1. इतिहास की प्रसिद्ध लड़ाइयों का अध्ययन हमें आधुनिक युद्धस्थिति को समझने में सहायता करेगा।
2. जो भी नेतृत्व की इच्छा रखता है, उसके लिये इतिहास का अध्ययन अनिवार्य है।

इनमें से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

परिच्छेद–151

पारदर्शिता और प्रतियोगिता को समाप्त करने से, क्रोनी-पूंजीवाद (क्रोनी-कैपिटलिज़्म) मुक्त उद्यम, अवसर और आर्थिक प्रगति के लिये हानिकारक है। क्रोनी-पूंजीवाद, जिसमें धनाढ्य और प्रभावशाली व्यक्तियों पर यह आरोप लगता है कि उन्होंने भ्रष्टाचारी राजनीतिज्ञों को घूस देकर ज़मीन और प्राकृतिक संसाधन तथा विभिन्न लाइसेन्स प्राप्त किये हैं, अब एक प्रमुख मुद्दा बन गया है जिससे निपटने की ज़रूरत है। भारत जैसी विकासशील अर्थव्यवस्थाओं की संवृद्धि के लिये एक बहुत बड़ा खतरा मध्य-आय-जाल (मिडिल इनकम ट्रैप) है, जहाँ क्रोनी-पूंजीवाद अल्पतंत्रों (ऑलिगार्कीज़) को निर्मित करता है जो संवृद्धि को धीमा कर देते हैं। ***UPSC-2016***

236. उपर्युक्त परिच्छेद का सर्वाधिक तार्किक उपनिगमन (कोरोलरी) निम्नलिखित में से कौन-सा है?

(a) अपेक्षाकृत अधिक कल्याणकारी स्कीमों को आरंभ करने और चालू स्कीमों के लिये अपेक्षाकृत अधिक वित्त आवंटित करने की तत्काल आवश्यकता है

(b) आर्थिक विकास को अन्य माध्यमों से प्रोत्साहित करने एवं निर्धनों को लाइसेंस जारी करने का प्रयास किया जाना चाहिये

(c) वर्तमान में सरकार की कार्य-प्रणाली को और पारदर्शी तथा वित्तीय समावेशन को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है

(d) हमें सेवा क्षेत्रक की जगह निर्माण क्षेत्रक का विकास करने पर अधिक ध्यान केंद्रित करना चाहिये

परिच्छेद–152

जलवायु अनुकूलन अप्रभावी हो सकता है यदि दूसरे विकास संबंधी सरकारों के संदर्भ में नीतियों को अभिकल्पित नहीं किया जाता। उदाहरण के तौर पर, एक व्यापक रणनीति, जो जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में खाद्य सुरक्षा की अभिवृद्धि करने का प्रयास करती है, कृषि प्रसार, फसल विविधता, एकीकृत जल एवं पीड़क प्रबंधन और कृषि सूचना सेवाओं से संबंधित समन्वित उपायों के एक समुच्चय को, सम्मिलित कर सकती है। इनमें से कुछ उपाय जलवायु परिवर्तन से और अन्य उपाय आर्थिक विकास से संबंधित हो सकते हैं। ***UPSC-2016***

237. उपर्युक्त परिच्छेद से कौन-सा सर्वाधिक तर्कसंगत और निर्णायक निष्कर्ष (इंफेरेंस) निकाला जा सकता है?

(a) विकासशील देशों में जलवायु अनुकूलन जारी रखना कठिन है

(b) खाद्य सुरक्षा की अभिवृद्धि करना, जलवायु अनुकूलन की अपेक्षा कहीं अधिक जटिल विषय है

(c) प्रत्येक विकासात्मक क्रियाकलाप प्रत्यक्षत: या अप्रत्यक्षत: जलवायु अनुकूलन से जुड़ा है

(d) जलवायु अनुकूलन की दूसरे आर्थिक विकास विकल्पों के संबंध में परीक्षा की जानी चाहिये

परिच्छेद–153

जलीय चक्र में जैव-विविधता की भूमिका की समझ बेहतर नीति-निर्माण में सहायक होती है। जैव-विविधता शब्द अनेक किस्मों के पादपों, प्राणियों, सूक्ष्मजीवों को और उन पारितंत्रों को, जिसमें वे पाए जाते हैं, निर्दिष्ट करता है। जल और जैव-विविधता एक दूसरे पर

निर्भर हैं। वास्तव में, जलीय चक्र से यह निश्चित होता है कि जैव-विविधता कैसे कार्य करती है। क्रम से, वनस्पति और मृदा जल के प्रवाह को निर्धारित करते हैं। हर एक गिलास जल जो हम पीते हैं, कम से कम उसका कोई अंश, मछलियों, वृक्षों, जीवाणुओं, मिट्टी और अन्य जीवों (ऑर्गैनिज़्म्स) से होकर गुज़रा होता है। इन पारितंत्रों से गुज़रते हुए वह शुद्ध होता है और उपभोग के लिये उपयुक्त होता है। जल की पूर्ति एक महत्त्वपूर्ण सेवा है जो पर्यावरण प्रदान करता है।

UPSC-2016

238. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक निर्णायक निष्कर्ष (इंफेरेंस) निकाला जा सकता है?
   (a) जैव-विविधता, प्रकृति की जल के पुनर्चक्रण की सामर्थ्य बनाए रखती है
   (b) जीवित जीवों (ऑर्गैनिज़्म्स) के अस्तित्व के बिना हम पेय जल प्राप्त नहीं कर सकते
   (c) पादप, प्राणी और सूक्ष्मजीव आपस में सतत अन्योन्यक्रिया करते रहते हैं
   (d) जलीय चक्र के बिना, जीवित जीव (ऑर्गैनिज़्म्स) अस्तित्व में नहीं आये होते

परिच्छेद–154

पिछले दशक में, बैंकिंग क्षेत्र को, मुख्यत: मध्यवर्ग और उच्च मध्यवर्ग समाज को सेवा प्रदान करने वाले उच्च कोटि के स्वचालन और उत्पादों से पुन: संरचित किया गया है। आज बैंकिंग और गैर-बैंकिंग वित्तीय सेवाओं के लिये ऐसे नए कार्यक्रम की आवश्यकता है जो आम आदमी की पहुँच से बाहर न हो। ***UPSC-2016***

239. उपर्युक्त परिच्छेद में निम्नलिखित में से कौन-सा संदेश अनिवार्यत: अंतर्निहित है?
   (a) बैंकों के और अधिक स्वचालन और उत्पादों की आवश्यकता
   (b) हमारी संपूर्ण लोक वित्त व्यवस्था की आमूल पुनर्संरचना की आवश्यकता
   (c) बैंकिंग और गैर-बैंकिंग संस्थाओं का एकीकरण करने की आवश्यकता
   (d) वित्तीय समावेशन को संवर्द्धित करने की आवश्यकता

परिच्छेद–155

मलिन बस्तियों में सुरक्षित तथा संधारणीय सफ़ाई से महिलाओं और लड़कियों को उनके स्वास्थ्य, सुरक्षा, निजता तथा सम्मान के रूप में असीमित लाभ मिलता है। तथापि शहरी सफ़ाई पर बनने वाली अधिकतर योजनाओं और नीतियों में महिलाएँ प्रतिलक्षित नहीं होतीं। यह तथ्य कि मैला ढोने की प्रथा आज भी अस्तित्व में है, यह दिखाता है कि प्रवाही-फ्लश शौचालयों को बढ़ावा देने तथा शुष्क शौचालयों को बंद करने को लेकर अभी तक बहुत कुछ नहीं किया गया है। स्वच्छता के अधिकार की दिशा में बहुत बड़े पैमाने पर अधिक स्थायी और मज़बूत अभियान शुरू किया जाना चाहिये। यह मुख्य रूप से मैला ढोने के उन्मूलन पर ध्यान केंद्रित करने वाला होना चाहिये। ***UPSC-2016***

240. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
   1. शहरी सफ़ाई समस्या का पूर्ण निराकरण केवल मैला ढोने के उन्मूलन से ही किया जा सकता है।
   2. शहरी क्षेत्रों में सुरक्षित सफ़ाई व्यवहार की जागरूकता को अधिक प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
   (a) केवल 1 (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

परिच्छेद–156

मानव के लिये उपयुक्त, सरकार की प्रकृति और परिमाण को समझने के लिये यह आवश्यक है कि मानव के स्वभाव को समझा जाए। चूँकि प्रकृति ने उसे सामाजिक जीवन के लिये बनाया है, उसे उस स्थान के लिये भी युक्त किया है जिसे उसने नियत किया है। सभी परिस्थितियों में उसने उसकी नैसर्गिक आवश्यकताओं को उसकी व्यक्तिगत शक्तियों से बड़ा बनाया है। कोई भी एक व्यक्ति समाज की सहायता के बिना अपनी इच्छाओं की पूर्ति करने में सक्षम नहीं है; और वही आवश्यकताएँ प्रत्येक व्यक्ति पर क्रियाशील होकर समग्र रूप से उनको एक समाज के रूप में रहने के लिये प्रेरित करती हैं। ***UPSC-2016***

241. निम्नलिखित में से कौन-सा, उपर्युक्त परिच्छेद का सर्वाधिक तार्किक और तर्कसंगत निष्कर्ष (इंफेरेंस) निकाला जा सकता है?
   (a) प्रकृति ने मानव समाज में भारी विविधता का निर्माण किया है
   (b) किसी भी मानव समाज को सदा उसकी आवश्यकताओं से कम मिलता है
   (c) सामाजिक जीवन मानव का विशिष्ट लक्षण है
   (d) विविध प्राकृतिक आवश्यकताओं ने मानव को सामाजिक प्रणाली की ओर बाध्य किया है

परिच्छेद–157

यदि हम 2050 की ओर देखें, जब हमें दो अरब से अधिक लोगों को आहार खिलाने की आवश्यकता होगी, तो यह प्रश्न कि कौन-सा आहार सर्वोत्तम है, एक नई अत्यावश्यकता बन गया है। आने वाले दशकों में हम जिन खाद्य पदार्थों को खाने के लिये चुनेंगे, उनके इस ग्रह के लिये गंभीर रूप से बहुशाखन होंगे। सामान्य रूप से कहें तो समूचे विकासशील देशों में खानपान की जो मांस और डेरी उत्पाद के आहार के इर्द-गिर्द ही घूमते रहने वाली प्रवृत्ति बढ़ रही है, वह भूमंडलीय संसाधनों पर, अपरिष्कृत अनाज, गिरी, फलों और सब्ज़ियों पर निर्भर करने वाली प्रवृत्ति की तुलना में अधिक दबाव डालेगी। ***UPSC-2016***

242. उपर्युक्त परिच्छेद से क्या निर्णायक संदेश निकलता है?
   (a) पशु आधारित खाद्य स्रोत की बढ़ती मांग हमारे प्राकृतिक संसाधनों पर अपेक्षाकृत अधिक बोझ डालती है।
   (b) अनाजों, गिरी, फलों और सब्ज़ियों पर आधारित आहार

विकासशील देशों में स्वास्थ्य के लिये सर्वाधिक सुयोग्य हैं

(c) मनुष्य स्वास्थ्य मामलों को बिना ध्यान में रखे, समय समय पर अपनी खाने की आदतों को बदलते हैं।

(d) भूमंडलीय परिप्रेक्ष्य में, हम अभी तक यह नहीं जानते कि कौन-सा आहार हमारे लिये सर्वोत्तम है

परिच्छेद–158

सभी मनुष्य शैशवावस्था में माँ के दूध को पचाते हैं, परंतु 10,000 वर्ष पहले मवेशियों की पालन प्रणाली के आरंभ होने तक, शिशुओं को एक बार दूध छुड़ाने पर उनको दूध पचाने की आवश्यकता नहीं होती थी। इसके परिणामस्वरूप उनमें लैक्टेज एंजाइम का बनना बंद हो गया, जो लैक्टोज़ शर्करा को सरल शर्कराओं में तोड़ता है। मानव के मवेशी चराने की प्रणाली आरंभ होने के बाद दूध को पचाना अत्यधिक लाभदायक हो गया और यूरोप, मध्यपूर्व (मिडिल ईस्ट) और अफ्रीका में मवेशी चराने वालों में स्वतंत्र रूप से लैक्टोज़ सहन-शक्ति का विकास हुआ। चीनी और थाई लोग जो मवेशियों पर निर्भर नहीं थे, वे लैक्टोज़ असहनशील बने हुए हैं। ***UPSC-2016***

243. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन-सी सर्वाधिक तार्किक पूर्वधारणा प्राप्त की जा सकती है?

(a) लगभग 10,000 वर्ष पहले विश्व के कुछ भागों में पशुपालन शुरू हुआ

(b) एक समुदाय में खाने की आदतों में स्थायी परिवर्तन, समुदाय के सदस्यों में आनुवंशिक परिवर्तन ला सकता है

(c) केवल लैक्टोज़ सहनशील लोगों में ही अपने शरीरों में सरल शर्कराओं को पाने की क्षमता होती है

(d) जो लोग लैक्टोज़ सहनशील नहीं होते, वे किसी भी डेरी उत्पाद को नहीं पचा सकते

परिच्छेद–159

"अल्पविकसित और औद्योगीकृत देशों की राष्ट्रीय आयों के बीच तुलना करते समय आने वाली संकल्पनात्मक कठिनाइयाँ विशेष रूप से गंभीर होती हैं क्योंकि विभिन्न अल्पविकसित देशों में राष्ट्रीय उत्पाद के एक भाग का उत्पादन वाणिज्यिक माध्यमों से गुज़रे बिना होता है।"

UPSC-2016

244. इन कथन से लेखक का तात्पर्य है कि:

(a) औद्योगीकृत देशों में उत्पादित और उपभुक्त समस्त राष्ट्रीय उत्पाद वाणिज्यिक माध्यमों में से गुजरता है

(b) विभिन्न अल्पविकसित देशों में अ-वाणिज्यीकृत क्षेत्रक का अस्तित्व देशों की राष्ट्रीय आयों की परस्पर तुलना को कठिन बना देता है

(c) राष्ट्रीय उत्पाद के किसी भाग का उत्पादन और उपभोग वाणिज्यिक माध्यमों से गुजरे बिना नहीं होना चाहिये

(d) राष्ट्रीय उत्पाद के एक भाग का उत्पादन और उपभोग वाणिज्यिक माध्यमों से गुज़रे बिना होना अल्पविकास का चिह्न है।

परिच्छेद–160

वायुमंडल में मानव निर्मित कार्बन डाइऑक्साइड के बढ़ने से पादपों और सूक्ष्मजीवों के बीच एक शृंखला अभिक्रिया प्रारंभ हो सकती है जो कि इस ग्रह पर कार्बन के सबसे बड़े भंडार-मृदा को अव्यवस्थित कर सकती है। एक अध्ययन में यह पाया गया कि वह मृदा जिसमें कार्बन की मात्रा, सभी पादपों और पृथ्वी के वायुमंडल में उपस्थित कुल कार्बन की दुगुनी है, लोगों के द्वारा वायुमंडल में और अधिक कार्बन छोड़ते जाने पर वर्धमान रूप से अस्थिर होती जाएगी। ऐसा अधिकांशत: पादपवृद्धि में बढ़ोतरी के कारण होता है। यद्यपि कार्बन डाइऑक्साइड एक ग्रीनहाउस गैस और एक प्रदूषक है, यह पादपवृद्धि को प्रोत्साहित भी करती है। चूँकि वृक्ष और दूसरी वनस्पतियाँ भविष्य में होने वाली कार्बन डाईऑक्साइड की प्रचुरता में फलती-फूलती हैं, उनकी जड़ें मृदा में सूक्ष्मजीवों की क्रियाशीलता को प्रेरित कर सकती हैं जो परिणामस्वरूप मृदा-कार्बन के अपघटन को और तेज कर वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड के उत्सर्जन में वृद्धि कर सकती है।

UPSC-2016

245. निम्नलिखित में से कौन-सा, उपर्युक्त परिच्छेद का सबसे अधिक तर्कसंगत उपनिगमन (कोरोलरी) है?

(a) सूक्ष्मजीवों और पादपों के अस्तित्व के लिये कार्बन डाइऑक्साइड परमावश्यक है

(b) वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड विमुक्त करने के लिये मनुष्य पूरी तरह उत्तरदायी है

(c) पादपवृद्धि की बढ़ोतरी के लिये मुख्य रूप से सूक्ष्मजीव और मृदा कार्बन उत्तरदायी हैं

(d) वर्धमान हरित आवरण मृदा में युक्त कार्बन की मोचन को प्रेरित कर सकता है

परिच्छेद–161

ऐतिहासिक रूप से, विश्व-कृषि के सामने, खाद्य की मांग और पूर्ति के बीच संतुलन प्राप्त करना सबसे बड़ी चुनौती रही है। वैयक्तिक देशों के स्तर पर, मांग-पूर्ति संतुलन बंद अर्थव्यवस्था के लिये एक निर्णायक नीतिगत मुद्दा हो सकता है, विशेषकर यदि वह एक जनसंख्याबहुल अर्थव्यवस्था है और उसकी घरेलू कृषि, स्थायी आधार पर पर्याप्त खाद्य पूर्ति नहीं कर पा रही है। यह उस मुक्त और बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था के लिये, जिसके पास विदेशों से खाद्य क्रय करने हेतु पर्याप्त विनिमय अधिशेष है, उतनी बड़ी, और न ही सदैव होने वाली, बाध्यता है। विश्व के लिये समग्र रूप से, मांग-पूर्ति संतुलन, भूख तथा भुखमरी से बचाव हेतु, सदैव ही एक अपरिहार्य पूर्व-शर्त है। तथापि पर्याप्त पूर्ति की विश्वव्यापी उपलब्धता का आवश्यक रूप से यह मतलब नहीं है कि खाद्य स्वत: अधिशेष वाले देशों से उन अभावग्रस्त देशों की ओर, जिनके पास क्रय-शक्ति का अभाव है, चला जाएगा। अत: विश्व स्तर पर भूख, भुखमरी, न्यून पोषण या कुपोषण आदि का असमान वितरण, खाली जेबों वाले भूखे लोगों की मौजूदगी की वजह से है, जो वृहद् रूप में अविकसित अर्थव्यवस्थाओं तक सीमित हैं। जहाँ तक आधारभूत मानवीय अस्तित्व के लिये "दो वक्त का भरपेट भोजन" का प्राथमिक महत्त्व है, उसमें

खाद्य की विश्वव्यापी पूर्ति के मुद्दे को, हाल के वर्षों में, महत्त्व मिलता रहा है, क्योंकि मांग की मात्रा और संरचना दोनों में बड़े परिवर्तन हो रहे हैं, और क्योंकि हाल के वर्षों में, अलग-अलग देशों की खाद्य-पूर्तियों की अबाधित शृंखला निर्मित करने की क्षमताओं में कमी आई है। खाद्य-उत्पादन, विपणन और कीमतें, विशेषकर विकासशील विश्व में गरीबों द्वारा कीमत वहन करने की क्षमता, विश्वव्यापी मुद्दे बन गए हैं, जिनका विश्वव्यापी चिंतन और विश्वव्यापी समाधान आवश्यक है।

UPSC-2016

246. उपर्युक्त परिच्छेद के अनुसार, विश्व खाद्य सुरक्षा के लिये निम्नलिखित में कौन-से मूलभूत हल हैं?
   1. अपेक्षाकृत अधिक कृषि-आधारित उद्योग स्थापित करना
   2. गरीबों द्वारा कीमत वहन करने की क्षमता को सुधारना
   3. विपणन की दशाओं का नियमन करना
   4. हर एक को खाद्य सहायिकी प्रदान करना

   नीचे दिये गए कूटों का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:
   (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2 और 3
   (c) केवल 1, 3 और 4 (d) 1, 2, 3 और 4

247. उपर्युक्त परिच्छेद के अनुसार, विश्व कृषि के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती क्या है?
   (a) कृषि हेतु पर्याप्त भूमि प्राप्त करना और खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों का विस्तार करना
   (b) अल्पविकसित देशों में भुखमरी का उन्मूलन करना
   (c) खाद्य एवं गैर-खाद्य (नान-फूड) वस्तुओं के उत्पादन के बीच संतुलन प्राप्त करना
   (d) खाद्य की मांग और आपूर्ति के बीच संतुलन प्राप्त करना

248. उपर्युक्त परिच्छेद के अनुसार, विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में भूख और भुखमरी घटाने में, निम्नलिखित में से किससे/किनसे सहायता मिलती है?
   1. खाद्य की मांग और आपूर्ति के बीच संतुलन करना
   2. खाद्य आयात में वृद्धि करना
   3. निर्धनों की क्रयशक्ति में वृद्धि करना
   4. खाद्य उपभोग प्रतिमानों और प्रयासों में बदलाव लाना

   नीचे दिये गए कूटों का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:
   (a) केवल 1 (b) केवल 2, 3 और 4
   (c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2, 3 और 4

249. विश्वव्यापी खाद्य-पूर्ति के मुद्दे को मुख्यत: किसके/किनके कारण महत्त्व प्राप्त हुआ है?
   1. विश्वव्यापी रूप से जनसंख्या की अतिवृद्धि
   2. खाद्य-उत्पादन के क्षेत्र में तीव्र गिरावट
   3. सतत खाद्यपूर्ति हेतु क्षमताओं में परिसीमन

   नीचे दिये गए कूटों का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:
   (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 3
   (c) केवल 2 और 3 (d) 1, 2 और 3

परिच्छेद-162

शासन और लोक प्रशासन में कमियों के मूल में स्थित एक कारक, आमतौर से शासन में, और मुख्य रूप से सिविल सेवाओं में, जवाबदेही का होना या न होना है। जवाबदेही का एक प्रभावी ढाँचा रूपांकित करना सुधार कार्यसूची का एक मुख्य तत्त्व रहा है। मूलभूत मुद्दा यह है कि क्या सिविल सेवाओं को तत्कालीन राजनीतिक कार्यपालिका के प्रति जवाबदेह होना चाहिये, अथवा व्यापक रूप में समाज के प्रति। दूसरे शब्दों में, आंतरिक और बाह्य जवाबदेही के बीच सामंजस्य कैसे स्थापित किया जाए? आंतरिक जवाबदेही को आंतरिक निष्पादन के परिवीक्षण, केंद्रीय सतर्कता आयोग एवं नियंत्रक- महालेखापरीक्षक जैसे निकायों के अधिकारिक निरीक्षण तथा अधिशासी निर्णयों के न्यायिक पुनर्विलोकन के द्वारा प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। भारत के संविधान के अनुच्छेद 311 और 312 सिविल सेवाओं, खास कर अखिल भारतीय सेवाओं, में नौकरी की सुरक्षा एवं रक्षोपाय का उपबंध करते हैं। संविधान निर्माताओं ने यह ध्यान में रखा था कि इन संरक्षण उपबंधों के परिणामस्वरूप ऐसी सिविल सेवा बनेगी जो राजनीतिक कार्यपालिका की पूर्णत: अनुसेवी नहीं होगी वरन् उसमें वृहत्तर लोकहित में कार्य करने की शक्ति होगी। इस प्रकार संविधान में आंतरिक और बाह्य जवाबदेही के बीच संतुलन रखने की आवश्यकता सन्निहित है। प्रश्न यह है कि दोनों के बीच रेखा कहाँ खींची जाए। वर्षों बाद, सिविल सेवाओं की अधिकतर आंतरिक जवाबदेही का ज़ोर तत्कालीन राजनीतिक नेताओं के पक्ष में अधिक झुका दिखाई देता है, जिनसे, बदले में, निर्वाचन प्रक्रिया के माध्यम से व्यापक समाज के प्रति बाह्य रूप से जवाबदेह होने की अपेक्षा की जाती है। समाज के प्रति जवाबदेही लाने के प्रयास करने की इस प्रणाली से कोई समाधान प्राप्त नहीं हुआ है, और इससे शासन के लिये अनेक प्रतिकूल परिणाम सामने आए हैं।

सिविल सेवाओं में जवाबदेही के सुधार के लिये कुछ विशेष उपायों पर विचार किया जा सकता है। अनुच्छेद 311 और 312 के उपबंधों का पुनरीक्षण किया जाना चाहिये और सिविल सेवाओं की बाह्य जवाबदेही के लिये विधि एवं विनिमय बनाए जाने चाहिये। प्रस्तावित सिविल सेवा विधेयक इनमें से कुछ आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास करता है। वृत्तिक (प्रोफेशनल) सिविल सेवाओं और राजनीतिक कार्यपालिका की अपनी-अपनी भूमिकाएँ परिभाषित की जानी चाहिये ताकि वृत्तिक प्रबंधकीय कार्य और सिविल सेवाओं के प्रबंधन का अराजनीतिकरण हो सके। इस प्रयोजन के लिये, केंद्र और राज्यों में प्रभावी सांविधिक सिविल सेवा बोर्ड बनाए जाने चाहिये। शासन और निर्णयन को लोगों के अधिक समीप लाने हेतु सत्ता का विकेंद्रीकरण और अवक्रमण (डीवोल्यूशन) भी जवाबदेही के संवर्द्धन में सहायक होता है। ***UPSC-2016***

250. परिच्छेद के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन से कारक/कारकों के कारण शासन/लोक प्रशासन के लिये प्रतिकूल परिणाम सामने आए हैं?
   1. आंतरिक एवं बाह्य जवाबदेहियों के बीच संतुलन बनाने में सिविल सेवाओं की अक्षमता
   2. अखिल भारतीय सेवाओं के अधिकारियों के लिये पर्याप्त वृत्तिक

प्रशिक्षण का अभाव
3. सिविल सेवाओं में उपयुक्त सेवा हितलाभों की कमी
4. इस संदर्भ में राजनीतिक कार्यपालिका के, और उसकी तुलना में, वृत्तिक सिविल सेवाओं के अपनी-अपनी भूमिकाओं को परिभाषित करने वाले सांविधानिक उपबंधों का अभाव

नीचे दिये गए कूटों का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:

(a) केवल 1 (b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 4 (d) 2, 3 और 4

251. परिच्छेद का संदर्भ लेते हुए, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं:
1. समाज के प्रति सिविल सेवाओं की जवाबदेही में राजनीतिक कार्यपालिका एक अवरोध है
2. भारतीय राजनीति-व्यवस्था के वर्तमान ढाँचे में, राजनीतिक कार्यपालिका समाज के प्रति जवाबदेह नहीं रह गई है

इन पूर्वधारणाओं में कौन-सी वैध है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

252. निम्नलिखित में से कौन-सा एक, इस परिच्छेद में अंतर्निहित अनिवार्य संदेश है?
(a) सिविल सेवाएँ उस समाज के प्रति जवाबदेह नहीं हैं, जिसकी सेवा वे कर रही हैं।
(b) शिक्षित तथा प्रबुद्ध व्यक्ति राजनीतिक नेतृत्व नहीं ले रहे हैं।
(c) संविधान निर्माताओं ने सिविल सेवाओं के समक्ष आने वाली समस्याओं का विचार नहीं किया।
(d) सिविल सेवाओं की जवाबदेही में संवर्द्धन हेतु सुधारों की आवश्यकता और गुंजाइश है।

253. परिच्छेद के अनुसार, निम्नलिखित में कौन-सा एक, सिविल सेवाओं की आंतरिक जवाबदेही के संवर्द्धन का साधन नहीं है?
(a) बेहतर कार्य-सुरक्षा और रक्षोपाय
(b) केंद्रीय सतर्कता आयोग द्वारा निरीक्षण
(c) अधिशासी निर्णयों का न्यायिक पुनर्विलोकन
(d) निर्णयन प्रक्रिया में लोगों की बढ़ी हुई सहभागिता द्वारा जवाबदेही खोजना

परिच्छेद-163

सामान्य रूप में, धार्मिक परंपराएँ ईश्वर के या किसी सार्वभौम नैतिक सिद्धांत के प्रति हमारे कर्त्तव्य पर बल देती हैं। एक-दूसरे के प्रति हमारे कर्त्तव्य इन्हीं से व्युत्पन्न होते हैं। अधिकारों की धार्मिक संकल्पना मुख्यत: इस देवत्व या सिद्धांत के साथ हमारे संबंध से, और हमारे अन्य संबंधों पर पड़ने वाले इसके निहितार्थ से ही व्युत्पन्न हुई है। अधिकारों और कर्त्तव्यों के बीच यह संगतता न्याय के किसी उच्चतर बोध के लिये महत्त्वपूर्ण है। किंतु, न्याय को आचरण में लाने के लिये, सद्गुण, अधिकार और कर्त्तव्य औपचारिक अमूर्त तत्त्व नहीं रह सकते। उन्हें सामान्य मिलन (कम्युनियन) के संवेदन से बंधे हुए समुदाय (सामान्य एकता) में उतारना परमावश्यक है। वैयक्तिक सद्गुण के रूप में भी यह एकात्मता, न्याय की साधना और बोध के लिये आवश्यक है। ***UPSC-2016***

254. परिच्छेद का संदर्भ लेते हुए, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं:
1. मानव संबंध उनकी धार्मिक परंपराओं से व्युत्पन्न होते हैं
2. मनुष्य कर्त्तव्य से तभी बंधे हो सकते हैं जब वे ईश्वर में विश्वास करें
3. न्याय की साधना और बोध के लिये धार्मिक परम्पराएँ आवश्यक हैं

इनमें से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएं वैध है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

255. निम्नलिखित में कौन-सा एक, इस परिच्छेद का मर्म है?
(a) एक-दूसरे के प्रति हमारे कर्त्तव्य हमारी धार्मिक परम्पराओं से व्युत्पन्न होते हैं
(b) दिव्य सिद्धांत से संबंध रखना महान सद्गुण है
(c) अधिकारों और कर्त्तव्यों के बीच संतुलन समाज में न्याय दिलाने के लिये निर्णायक है
(d) अधिकारों की धार्मिक संकल्पना मुख्यत: ईश्वर के साथ हमारे संबंध से व्युत्पन्न हुई है

परिच्छेद-164

शक्ति, ऊष्मा और परिवहन के ईंधन के रूप में जैवमात्रा (बायोमास) की न्यूनीकरण समर्थता सभी नवीकरणीय स्रोतों से अधिक है। यह कृषि और वन अवशिष्टों, साथ ही ऊर्जा-फसलों से प्राप्त होती है। जैवमात्रा अवशिष्टों का उपयोग करने में सबसे बड़ी चुनौती शक्ति-संयंत्रों में उचित लागत पर की जाने वाली उनकी विश्वसनीय दीर्घावधि पूर्ति ही है, मुख्य समस्याएँ सुप्रचालनिक (लॉजिस्टिकल) अवरोध और ईंधन-संग्रहण की लागत हैं। यदि ऊर्जा-फसलों का उचित रीति से प्रबंधन न हो तो, वे अन्न उत्पादन के साथ प्रतिस्पर्धा करती हैं और अन्न की कीमतों पर उनका अवांछित असर पड़ सकता है। जैवमात्रा का उत्पादन परिवर्तनशील जलवायु के भौतिक प्रभावों के प्रति भी संवेदनशील होता है।

जब तक नव-प्रौद्योगिकियाँ उत्पादकता को सारभूत रूप में न बढ़ाएँ, तब तक धारणीय जैवमात्रा पूर्ति की सीमाओं को देखते हुए, जैवमात्रा की भावी भूमिका का संभवत: वास्तविकता से अधिक अनुमान लगाया गया है। जलवायु-ऊर्जा प्रतिरूप यह प्रकल्पित करते हैं कि 2050 में बायोमास का उपयोग लगभग चार गुना बढ़ कर 150-200 एक्साजूल हो सकता है जो कि विश्व की प्राथमिक ऊर्जा का लगभग एक-चौथाई है। परंतु खाद्य एवं वन्य संसाधनों का कोई विनाश किये बिना, 2050 तक प्रतिवर्ष बायोमास संसाधनों की अधिकतम धारणीय तकनीकी क्षमता (अवशिष्ट और ऊर्जा फसल दोनों) 80-170 एक्साजूल के परिसर में होगी और इसका सिर्फ एक अंश वास्तविक और आर्थिक रूप से साध्य होगा। इसके अतिरिक्त, कुछ जलवायु प्रतिरूप ऋणात्मक उत्सर्जन प्राप्त करने और शताब्दी के पूर्वार्ध में कुछ मुहलत जुटाने के लिये बायोमास आधारित कार्बन प्रग्रहण एवं संचयन पर, जो कि एक अप्रमाणित प्रौद्योगिकी है, आश्रित है।

कुछ द्रव्य जैव ईंधन, जैसे- मकई आधारित इथेनोल, प्रमुख रूप से परिवहन हेतु, जीवन चक्र आधार पर कार्बन उत्सर्जनों में सुधार लाने की जगह उन्हें और बदतर कर सकते हैं। लिग्नो-सेलुलोसिक चारा आधारित

दूसरी पीढ़ी के कुछ जैवईंधन जैसे कि पुआल, खोई, घास और काष्ठ ऐसे धारणीय उत्पादन की संभाव्यता रखते हैं जो उच्च उत्पादकता वाले हों तथा ग्रीनहाउस गैस के निम्न स्तर का उत्सर्जन करें, किंतु वे अभी तक अनुसंधान और विश्लेषण के चरण में हैं। ***UPSC-2016***

256. शक्ति-जनन के लिये जैवमात्रा को ईंधन के रूप में इस्तेमाल करने में मौजूदा बाधा/बाधाएँ क्या है/हैं?
   1. जैवमात्रा की धारणीय पूर्ति का अभाव
   2. जैवमात्रा उत्पादन अन्न-उत्पादन के साथ प्रतिस्पर्धी हो जाता है
   3. जैव-ऊर्जा, जीवन-चक्र आधार पर, सदैव निम्न-कार्बन नहीं हो सकती

   नीचे दिये गए कूटों का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:
   (a) केवल 1 और 2
   (b) केवल 3
   (c) केवल 2 और 3
   (d) 1, 2 और 3

257. निम्नलिखित में से किसके/किनके कारण खाद्य-सुरक्षा की समस्या हो सकती है?
   1. शक्ति-जनन हेतु कृषि एवं वन अवशिष्टों का भरण-सामग्री (फीडस्टॉक) के रूप में उपयोग करना
   2. जैवमात्रा का कार्बन प्रग्रहण एवं संचयन के लिये उपयोग करना
   3. ऊर्जा-फसलों की कृषि को बढ़ावा देना

   नीचे दिये गए कूटों का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:
   (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 3
   (c) केवल 2 और 3 (d) 1, 2 और 3

258. जैवमात्रा के उपयोग के संदर्भ में, निम्नलिखित में कौन-सी/कौन-कौन-सी, जैव ईंधन के धारणीय उत्पादन की विशेषता/विशेषताएँ है/हैं?
   1. 2050 तक, शक्ति-जनन के ईंधन के रूप में जैवमात्रा से विश्व की सभी प्राथमिक ऊर्जा-आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकती है
   2. शक्ति-जनन के ईंधन के रूप में जैवमात्रा से, खाद्य एवं वन संसाधनों का आवश्यक रूप से विनाश नहीं होता है
   3. कुछ उदीयमान प्रौद्योगिकियों की मान लें तो शक्ति-जनन के ईंधन के रूप में जैवमात्रा, ऋणात्मक उत्सर्जन प्राप्त करने में सहायक हो सकती है

   नीचे दिये गए कूटों का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:
   (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 3
   (c) केवल 2 और 3 (d) 1, 2 और 3

259. इस परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं:
   1. कुछ जलवायु-ऊर्जा प्रतिरूप यह सुझाते हैं कि शक्ति-जनन के ईंधन के रूप में बायोमास का उपयोग ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जनों को कम करने में सहायक होता है
   2. शक्ति-जनन के ईंधन के रूप में बायोमास का उपयोग करना, खाद्य एवं वन संसाधनों को बाधित किये बिना संभव नहीं है

   इन पूर्वधारणाओं में कौन-सी वैध है/हैं?
   (a) केवल 1 (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

परिच्छेद–165

हम अपनी खाद्य-पूर्ति में जैव-विविधता की खतरनाक कमी देख रहे हैं। हरित क्रांति एक मिला-जुला वरदान है। समय के साथ-साथ किसानों की निर्भरता व्यापक रूप से अपनाई गई उच्च उपज वाली फसलों पर बहुत अधिक बढ़ती गई है और वे स्थानीय दशाओं से अनुकूलता रखने वाली किस्मों को छोड़ते गए हैं। विशाल खेतों में आनुवंशिकत: एकसमान (जेनेटिकली यूनिफॉर्म) बीजों की एक-फसली खेती से बढ़ी हुई उपज प्राप्त करने और भूख की तात्कालिक ज़रूरतों को पूरा करने में मदद मिलती है। तथापि, उच्च उपज वाली किस्में आनुवंशिकत: दुर्बल फसलें भी होती हैं जिनके लिये महँगे रासायनिक उर्वरकों और विषाक्त कीटनाशकों की ज़रूरत होती है। उगाए जा रहे खाद्य-पदार्थों की मात्रा बढ़ाने पर ही आज अपना ध्यान केंद्रित कर, हम अनजाने में स्वयं को भावी खाद्य-अभाव होने के जोखिम में डाल चुके हैं। ***UPSC-2016***

260. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन-सा, सबसे तर्कसंगत और निर्णायक निष्कर्ष (इंफेरेंस) निकाला जा सकता है?
   (a) अपनी कृषि पद्धतियों में हम केवल हरित क्रांति के कारण महँगे रासायनिक उर्वरकों और विषाक्त कीटनाशकों पर अत्यधिक निर्भर हो गए हैं
   (b) विशाल खेतों में उच्च उपज वाली किस्मों की एक-फसली खेती हरित क्रांति के कारण संभव है
   (c) उच्च उपज वाली किस्मों की एक-फसली खेती करोड़ों लोगों के लिये खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने का एकमात्र तरीका है
   (d) हरित क्रांति, दीर्घ काल में खाद्य-पूर्ति और खाद्य सुरक्षा में जैव-विविधता के लिये खतरा प्रस्तुत कर सकती है

परिच्छेद–166

जलवायु परिवर्तन के कारण फसलों की उपज में रुकावट और कीमतों में वृद्धि होने की वजह से, पूरे विश्व में बहुत सारे लोग पहले से ही भुखमरी का शिकार हैं। और जलवायु परिवर्तन के कारण केवल खाद्य ही नहीं बल्कि पोषक-तत्त्व भी अपर्याप्त होते जा रहे हैं। जैसे-जैसे फसलों की उपज और जीविका पर खतरे की स्थिति बन रही है, सबसे गरीब समुदायों को ही, भुखमरी और कुपोषण के बढ़ने के समेत, जलवायु परिवर्तन के सबसे बुरे प्रभावों से ग्रस्त होना पड़ेगा। दूसरी ओर, गरीबी जलवायु परिवर्तन का कारक है, क्योंकि निराशोन्मत्त समुदाय अपनी वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये संसाधनों के अधारणीय (अनसस्टेनबल) उपयोग का आश्रय लेते हैं। ***UPSC-2015***

261. निम्नलिखित में से कौन-सा, उपर्युक्त परिच्छेद का सर्वाधिक तार्किक उपनिगमन (कोरोलरी) है?
   (a) सरकार को गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों के लिये अधिक निधियों का आवंटन करना चाहिये और निर्धन समुदायों को दिये जाने वाले खाद्य उपदानों (सब्सिडीज़) में वृद्धि करनी चाहिये।
   (b) निर्धनता तथा जलवायु के प्रभाव एक-दूसरे को बढ़ावा देते हैं इसलिये हमें अपनी खाद्य प्रणालियों की पुनर्कल्पना करनी होगी।

(c) विश्व के सभी देशों को ग़रीबी और कुपोषण से लड़ने के लिये एकजुट होना ही चाहिये और गरीबी को एक सार्वभौम समस्या की भाँति देखना चाहिये।

(d) हमें तुरंत अधारणीय (अनसस्टेनबल) कृषि पद्धतियों को बंद कर देना चाहिये और खाद्य कीमतों को नियंत्रित करना चाहिये।

परिच्छेद–167

विश्व वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट (ग्लोबल फाइनेंशियल स्टेबिलिटी रिपोर्ट) ने पाया है कि उन्नत अर्थव्यवस्थाओं से, उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं के कुल ऋण और ईक्विटी निवेशों में, किया गया पोर्टफोलियो निवेश का अंश पिछले दशक में दुगुना होकर 12 प्रतिशत हो गया है। इस घटना के भारतीय नीति निर्माताओं पर प्रभाव संभावित हैं क्योंकि ऋण तथा ईक्विटी बाज़ारों में विदेशी पोर्टफोलियो निवेश बढ़ता रहा है। इस घटना को एक आशंका भी बताया जा रहा है कि यूनाइटेड स्टेट्स फेडरल रिज़र्व की–"मात्रात्मक ढील (क्वांटिटेटिव ईजिंग)" नीति में आसन्न उत्क्रमण (इम्मिनेंट रिवर्सल) होने की दशा में, एक श्रृंखलाबद्ध प्रतिक्रिया के रूप में विश्व की वित्तीय स्थिरता खतरे में पड़ सकती है। ***UPSC-2015***

262. उपर्युक्त परिच्छेद से, निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तर्कसंगत और निर्णायक अनुमान (इंफेरेंस) निकाला जा सकता है?

(a) उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं के लिये विदेशी पोर्टफोलियो निवेश अच्छे नहीं हैं।

(b) उन्नत अर्थव्यवस्थाएँ विश्व की वित्तीय स्थिरता को खोखला करती हैं।

(c) भारत को भविष्य में विदेशी पोर्टफोलियो निवेश स्वीकार करने से बचना चाहिये।

(d) उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं को, उन्नत अर्थव्यवस्थाओं से मिलने वाले आघात का खतरा रहता है।

परिच्छेद–168

खुले में मलत्याग अनर्थकारी हो सकता है, जब यह अति सघन आबादी वाले क्षेत्रों में व्यवहार में लाया जा रहा हो, जहाँ मानव मल को फसलों, कुओं, खाद्य सामग्रियों और बच्चों के हाथों से दूर रखना असंभव होता है। भौम जल (ग्राउंडवाटर) भी खुले में किये गए मलत्याग से संदूषित हो जाता है। आहार में गए अनेक रोगाणु और कृमियाँ बीमारियाँ फैलाते हैं। वे शरीर को कैलोरियों और पोषक-तत्त्वों का अवशोषण करने लायक नहीं रहने देते। भारत के लगभग आधे बच्चे कुपोषित बने रहते हैं। उनमें से लाखों, उन रोग दशाओं से मर जाते हैं जिनसे बचाव संभव था। अतिसार (डायरिया) के कारण भारतीयों के शरीर औसत रूप से उन लोगों से छोटे हैं जो अपेक्षाकृत गरीब देशों के हैं, जहाँ लोग खाने में अपेक्षाकृत कम कैलोरियाँ लेते हैं। न्यून-भार (अंडरवेट) माताएँ ऐसे अविकसित (स्टंटेड) बच्चे पैदा करती हैं जो आसानी से बीमारी का शिकार हो सकते हैं और अपनी पूरी संज्ञानात्मक संभावनाओं (कोग्निटिव पोटेंशियल) को विकसित करने में असफल रह सकते हैं। जो रोगाणु पर्यावरण में निर्मुक्त हो जाते हैं वे न केवल अमीर और गरीब, बल्कि शौचालयों का प्रयोग करने वालों को भी एकसमान हानि पहुँचाते हैं। ***UPSC-2015***

263. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन-सा सबसे निर्णायक अनुमान (इंफेरेंस) निकाला जा सकता है?

(a) भारत की केंद्रीय और राज्य सरकारों के पास इतने पर्याप्त संसाधन नहीं हैं कि प्रत्येक घर के लिये एक शौचालय सुलभ करा सकें।

(b) खुले में मलत्याग भारत की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण लोक स्वास्थ्य समस्या है।

(c) खुले में मलत्याग, भारत के कार्यबल (वर्क फोर्स) की मानव-पूंजी (ह्यूमन कैपिटल) में ह्रास लाता है।

(d) खुले में मलत्याग सभी विकासशील देशों की लोक स्वास्थ्य समस्या है।

परिच्छेद–169

हम सामान्यत: लोकतंत्र की बात करते हैं पर जब किसी विषय-विशेष पर बात आती है, तो हम अपनी जाति या समुदाय या धर्म से संबंध रखना ज़्यादा पसंद करते हैं। जब तक हम इस तरह के प्रलोभन से ग्रस्त रहेंगे, हमारा लोकतंत्र एक बनावटी लोकतंत्र बना रहेगा। हमें इस स्थिति में होना चाहिये कि मनुष्य को मनुष्य की इज़्ज़त मिले और विकास के अवसर उन तक पहुँचें जो उसके योग्य हैं न कि उन्हें जो अपने समुदाय या प्रजाति के हैं। हमारे देश में पक्षपात का यह तथ्य बहुत असंतोष और दुर्भावना के लिये उत्तरदायी रहा है। ***UPSC-2015***

264. निम्नलिखित में से कौन-सा, उपर्युक्त परिच्छेद का सर्वोत्तम सारांश प्रस्तुत करता है?

(a) हमारे देश में अनेक जातियों, समुदायों और धर्मों की अत्यधिक विविधता है।

(b) सच्चा लोकतंत्र सभी को समान अवसर देकर ही स्थापित किया जा सकता है।

(c) अब तक हममें से कोई भी वास्तव में लोकतंत्र का अर्थ समझ नहीं सका है।

(d) हमारे लिये कभी संभव नहीं होगा कि हम अपने देश में सच्चा लोकतांत्रिक शासन स्थापित कर सकें।

परिच्छेद–170

बचत संग्रहण हेतु, सुरक्षित, विश्वसनीय और वैकल्पिक वित्तीय साधन (फाइनेंशियल इन्स्ट्रूमेंट्स) प्रदान करने वाली औपचारिक वित्तीय संस्थाओं का होना/स्थापित किया जाना मूलभूत रूप से आवश्यक है। बचत करने के लिये, व्यक्तियों को बैंक जैसी सुरक्षित और विश्वसनीय वित्तीय संस्थाओं के सुलभ होने की, और उपयुक्त वित्तीय साधनों और पर्याप्त वित्तीय प्रोत्साहनों की आवश्यकता होती है। इस तरह की सुलभता भारत जैसे विकासशील देशों में, और उस पर भी ग्रामीण क्षेत्रों में, सभी लोगों को हमेशा उपलब्ध नहीं है। बचत से गरीब परिवारों को नकदी प्रवाह की अस्थिरता के प्रबंधन में मदद मिलती है, उपभोग में आसानी होती है, और कार्यशील पूंजी के निर्माण में मदद मिलती है। औपचारिक बचत तंत्र के सुलभ न होने से गरीब परिवारों में तुरंत खर्च कर देने के प्रलोभनों को बढ़ावा मिलता है। ***UPSC-2015***

265. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार

कीजिये:

1. भारतीय वित्तीय संस्थाएँ ग्रामीण परिवारों को, अपनी बचत के संग्रहण के लिये कोई वित्तीय साधन उपलब्ध नहीं करातीं।
2. गरीब परिवार, उपयुक्त वित्तीय साधनों के सुलभ न होने के कारण अपनी आय/बचत को व्यय करने की ओर प्रवृत्त होते हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

266. इस परिच्छेद के द्वारा क्या महत्त्वपूर्ण संदेश दिया गया है?
(a) अधिक बैंकों को स्थापित करना।
(b) सकल घरेलू उत्पाद (GDP) की संवृद्धि दर को बढ़ाना।
(c) बैंक जमा (डिपॉजिट) पर ब्याज दर को बढ़ाना।
(d) वित्तीय समावेशन को प्रोत्साहित करना।

परिच्छेद–171

सरकारों को ऐसे कदम उठाने पड़ सकते हैं जो अन्यथा व्यक्तियों के मौलिक अधिकारों का अतिलंघन करते हैं, जैसे किसी व्यक्ति की इच्छा के विरुद्ध उसकी भूमि का अधिग्रहण करना या किसी भवन-निर्माण की अनुमति देने से इनकार करना, किंतु जिस बृहत्तर लोकहित के लिये ऐसा किया जाता है, उसे जनता (संसद) द्वारा प्राधिकृत किया जाना आवश्यक है। प्रशासन के विवेकाधिकार को समाप्त किया जा सकता है। चूँकि, सरकार को अनेक कार्य करने पड़ रहे हैं, इस अधिकार को सीमा में रखना निरंतर कठिन होता जा रहा है। जहाँ विवेकाधिकार का प्रयोग करना होता है, वहाँ उस अधिकार के दुरुपयोग को रोकने के लिये नियम एवं रक्षोपाय अवश्य होने चाहिये। ऐसी व्यवस्था की युक्ति करनी होगी, जो विवेकाधिकारों के दुरुपयोग को, यदि रोक न सके, तो न्यूनतम ही कर सके। सरकारी कार्य मान्य नियमों और सिद्धांतों के ढाँचे के अंतर्गत ही किये जाने चाहिये, तथा निर्णय समान रूप तथा पूर्वानुमेय (प्रिडिक्टेबल) होने चाहिये। ***UPSC-2015***

267. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन-सी, सर्वाधिक तार्किक धारणा बनाई जा सकती है?
(a) सरकार को प्रशासन के सभी विषयों पर हमेशा विस्तृत विवेकाधिकार दिया जाना चाहिये।
(b) प्राधिकार के अनन्य विशेषाधिकार के प्रभावी होने की अपेक्षा, नियमों और रक्षोपायों की सर्वोच्चता अभिभावी होनी चाहिये।
(c) संसदीय लोकतंत्र तभी संभव है, यदि सरकार को अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत विवेकाधिकार प्राप्त हों।
(d) उपर्युक्त में से कोई भी कथन ऐसी तार्किक धारणा नहीं है जो इस परिच्छेद से बनाई जा सके।

परिच्छेद–172

भारत सतत उच्च मुद्रास्फीति से ग्रस्त रहा है। निर्देशित कीमतों में वृद्धि, मांग और पूर्ति में असंतुलन, रुपये के अवमूल्यन से बदतर हुई आयातित मुद्रास्फीति और सट्टेबाज़ी– इन सबने मिलकर उच्च मुद्रास्फीति, को बनाए रखा है। यदि इन सभी में कोई एक समान तत्त्व है, तो वह यह है कि इनमें से कई आर्थिक सुधारों के परिणाम हैं। अंतर्राष्ट्रीय कीमतों में बदलाव के प्रभावों के प्रति भारत की सुभेद्यता (वल्नरेबिलिटी) व्यापार उदारीकरण के साथ-साथ और बढ़ी है। उपदानों को कम करने के प्रयासों के कारण उन वस्तुओं की कीमतों में निरंतर वृद्धि हुई है जो निर्देशित हैं। ***UPSC-2015***

268. उपर्युक्त परिच्छेद में अंतर्निहित सर्वाधिक तार्किक, तर्कसंगत और महत्त्वपूर्ण संदेश क्या है?
(a) मौजूदा परिस्थितियों में, भारत को पूरी तरह से व्यापार उदारीकरण की नीतियों एवं सभी उपदानों से बचना चाहिये।
(b) अपनी विशिष्ट सामाजिक-आर्थिक स्थिति के कारण, भारत अभी व्यापारिक उदारीकरण की प्रक्रिया के लिये तैयार नहीं है।
(c) निकट भविष्य में भारत में सतत निर्धनता एवं मुद्रास्फीति की समस्याओं का कोई समाधान नहीं दिखता।
(d) आर्थिक सुधार प्राय: उच्च मुद्रास्फीति वाली अर्थव्यवस्था उत्पन्न कर सकते हैं।

परिच्छेद–173

कोई भी अधिकार परम, अनन्य और अनुल्लंघनीय नहीं है। इसी तरह, व्यक्तिगत संपत्ति के अधिकार को उसकी कल्पित वैधता के बृहत्तर संदर्भ में देखा जाना चाहिये। व्यक्तिगत संपत्ति के अधिकार में, स्वतंत्रता के सिद्धांत का समता के सिद्धांत के साथ, और इन दोनों का सहयोग के सिद्धांत के साथ समन्वय होना चाहिये। ***UPSC-2015***

269. उपर्युक्त परिच्छेद में दिये गए तर्क के आलोक में, निम्नलिखित में से कौन-सा एक कथन सबसे अधिक विश्वासप्रद स्पष्टीकरण है?
(a) व्यक्तिगत संपत्ति का अधिकार, संविधियों और धर्मग्रंथों द्वारा विधिवत समर्थित, एक नैसर्गिक अधिकार है।
(b) व्यक्तिगत संपत्ति एक चोरी है तथा शोषण का उपकरण है। अत: व्यक्तिगत संपत्ति का अधिकार आर्थिक न्याय का उल्लंघन है।
(c) व्यक्तिगत संपत्ति का अधिकार वितरक न्याय का उल्लंघन है तथा सहयोग के सिद्धांत को नकारता है।
(d) आर्थिक न्याय का व्यापक विचार इस बात की मांग करता है कि प्रत्येक व्यक्ति के संपत्ति अर्जन के अधिकार को, दूसरों के संपत्ति अर्जन के अधिकार के साथ सामंजस्यपूर्ण होना चाहिये।

परिच्छेद–174

मानव एवं राज्य के मध्य संघर्ष उतना ही पुराना है जितना कि राज्य का इतिहास। यद्यपि सदियों से राज्य एवं व्यक्ति के प्रतिस्पर्धी दावों के बीच तालमेल बनाने के प्रयास हुए हैं, किंतु समाधान अभी भी दूर प्रतीत होता है। यह मुख्यत: इसलिये है क्योंकि मानव समाज की प्रकृति गतिशील है जिसमें पुराने मूल्यों और विचारों ने निरंतर नए मूल्यों और विचारों को स्थान दिया है। यह स्पष्ट है कि यदि व्यक्तियों को बोलने और कार्य करने की निरपेक्ष स्वतंत्रता दे दी गई, तो उसका परिणाम अव्यवस्था, विनाश एवं अराजकता में हो सकता है। ***UPSC-2015***

270. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक, लेखक के दृष्टिकोण का सर्वोत्तम सारांश प्रस्तुत करता है?
(a) राज्य और व्यक्ति के दावों के बीच संघर्ष अनसुलझा बना रहता है।
(b) अराजकता और अव्यवस्था लोकतांत्रिक परंपराओं के स्वाभाविक

परिणाम हैं।

(c) मानव समाज की गतिशील प्रकृति के बावजूद प्राचीन मूल्य, विचार और परंपराएँ बनी रहती हैं।

(d) वाक् स्वातंत्र्य (फ्रीडम ऑफ स्पीच) की संवैधानिक गारंटी समाज के हित में नहीं है।

परिच्छेद–175

जलवायु परिवर्तन एक ऐसा जटिल नीतिगत मुद्दा है जो वित्त पर व्यापक प्रभाव डालता है। जलवायु परिवर्तन से निपटने वाले हर प्रयास में अंततः लागत शामिल है। भारत जैसे देशों के लिये, अनुकूलन (अडैप्टेशन) तथा न्यूनीकरण (मिटिगेशन) की योजनाओं और परियोजनाओं के अभिकल्पन और कार्यान्वयन के लिये निधियन (फंडिंग) अत्यावश्यक है। निधि का अभाव अनुकूलन योजनाओं के कार्यान्वयन में एक बड़ी बाधा है। जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (यूनाइटेड नेशन्स फ्रेमवर्क कन्वेंशन ऑन क्लाइमेट चेंज) (UNFCCC) के अंतर्गत बहुस्तरीय वार्त्ताओं में, विकासशील देशों द्वारा उनके घरेलू न्यूनीकरण तथा अनुकूलन कार्यों के संवर्द्धन के लिये अपेक्षित वित्तीय सहायता का पैमाना तथा परिमाण सघन चर्चा के विषय हैं। यह सम्मेलन विकसित देशों पर वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों (GHGs) के जमाव में उनके योगदान के आधार पर, वित्तीय सहायता का प्रावधान करने की समान रूप से ज़िम्मेदारी डालता है। इस कार्य की मात्रा तथा उसके लिये निधियों की आवश्यकता को देखते हुए, विकासशील देशों की मौजूदा तथा अनुमानित (प्रोजेक्टेड) आवश्यकताओं के लिये ज़रूरी घरेलू वित्तीय संसाधन कम पड़ने की संभावना है। इस सम्मेलन (कन्वेंशन) की बहुपक्षीय क्रियाविधि के माध्यम से किया गया वैश्विक निधियन, न्यूनीकरण प्रयासों के वित्तपोषण के लिये उनकी घरेलू क्षमता की वृद्धि करेगा। ***UPSC-2015***

271. इस परिच्छेद के अनुसार, जलवायु परिवर्तन में विकासशील देशों की भूमिका के संदर्भ में UNFCCC के अंतर्गत बहुपक्षीय वार्त्ताओं में, निम्नलिखित में से कौन-सा/से, गहन चर्चा का/के विषय है हैं?
    1. अपेक्षित वित्तीय सहायता का पैमाना तथा परिमाण।
    2. विकासशील देशों में जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाली उपज की हानि।
    3. विकासशील देशों में न्यूनीकरण तथा अनुकूलन कार्यों का संवर्द्धन करना।

    नीचे दिये गए कूटों का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:

    (a) केवल 1 (b) केवल 2 और 3
    (c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

272. इस परिच्छेद में, यह सम्मेलन विकसित देशों पर वित्तीय सहायता का प्रावधान करने की ज़िम्मेदारी किस कारण डालता है?
    1. उनका प्रति व्यक्ति आय का उच्चतर स्तर।
    2. उनकी GDP की अधिक मात्रा।
    3. वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों (GHGs) के जमाव में उनका बृहत योगदान।

    नीचे दिये गए कूटों का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:

    (a) केवल 1 (b) केवल 1 और 2
    (c) केवल 3 (d) 1, 2 और 3

273. विकासशील देशों के संबंध में, परिच्छेद से यह अनुमान निकाला जा सकता है कि जलवायु परिवर्तन से उनके
    1. घरेलू वित्त पर प्रभाव पड़ना संभावित है।
    2. बहुपक्षीय व्यापार की क्षमता पर प्रभाव पड़ना संभावित है।

    नीचे दिये गए कूटों का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:

    (a) केवल 1
    (b) केवल 2
    (c) 1 और 2 दोनों
    (d) न तो 1 और न ही 2

274. इस परिच्छेद में, निम्नलिखित में से किस एक पर अनिवार्यतः विचार-विमर्श किया गया है?
    (a) न्यूनीकरण हेतु सहायता देने के बारे में, विकसित और विकासशील देशों के बीच द्वंद्व
    (b) विकसित देशों द्वारा प्राकृतिक संसाधनों के अतिशय दोहन के कारण जलवायु परिवर्तन का होना
    (c) अनुकूलन योजनाओं को कार्यान्वित करने में सभी देशों की राजनीतिक इच्छाशक्ति में कमी
    (d) जलवायु परिवर्तन के परिणाम के कारण, विकासशील देशों की शासन समस्याएँ

परिच्छेद–176

अपेक्षाकृत समृद्ध राज्यों की यह ज़िम्मेदारी बनती है कि वे कार्बन उत्सर्जन को कम करें और स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन में निवेश को प्रोत्साहित करें। ये वे राज्य हैं, जिनको बिजली उपलब्ध है, जिनका विकास अपेक्षाकृत तीव्र गति से हुआ है और जिनकी प्रति व्यक्ति आय अब उच्च है, जिस कारण वे भारत को पर्यावरण-अनुकूली बनाने का भार वहन करने हेतु सक्षम हुए हैं। दिल्ली, उदाहरण के लिये, इस रूप में मदद कर सकती है कि वह छतों के ऊपर सौर पैनल के प्रयोग से अपने स्वयं के उपयोग की स्वच्छ बिजली उत्पादित करे या वह निर्धन राज्यों को उनकी स्वच्छ ऊर्जा परियोजनाओं के लिये वित्तपोषण करके भी मदद कर सकती है। यह कोई छिपी हुई बात नहीं है कि राज्य विद्युत बोर्ड, जो वितरण परिपथ-जाल (डिस्ट्रिब्यूशन नेटवर्क) के 95% भाग को नियंत्रित करते हैं, अत्यधिक गहरे घाटे में डूबे हुए हैं। ये घाटे आगे राज्य के सेवा प्रदाताओं (युटिलिटीज) को नवीकरणीय ऊर्जा को अपनाने से हतोत्साहित करते हैं क्योंकि नवीकरणीय ऊर्जा को अपनाना जीवाश्मी ईंधनों को अपनाने से अधिक महँगा है। ***UPSC-2015***

275. निम्नलिखित में से कौन-सी सर्वाधिक तार्किक और युक्तिसंगत पूर्वधारणा उपर्युक्त परिच्छेद से बनाई जा सकती है?
    (a) अपेक्षाकृत समृद्ध राज्यों को नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादित करने और अपनाने में अग्रणी होना चाहिये।
    (b) निर्धन राज्यों को विद्युत के लिये सदा समृद्ध राज्यों पर निर्भर रहना पड़ता है।
    (c) राज्य विद्युत बोर्ड स्वच्छ ऊर्जा परियोजनाओं को अपनाकर अपनी वित्तीय स्थिति में सुधार ला सकते हैं।

(d) समृद्ध और निर्धन राज्यों के बीच अत्यधिक आर्थिक असमानता, भारत में अधिक कार्बन उत्सर्जन का प्रमुख कारण है।

परिच्छेद–177

'स्टेंच ऑफ केरोसीन', ग्रामीण पृष्ठभूमि में सजाई गई अनेक वर्षों से विवाहित किंतु नि:संतान दंपति गुलेरी और मानक की कहानी है। मानक की माँ खानदान के नाम को आगे जारी रखने हेतु एक पोता पाने के लिये तड़प रही है। अत: वह गुलेरी की गैर-मौजूदगी में मानक का पुनर्विवाह करा देती है। मानक को, जो अनिच्छुक और निष्क्रिय दर्शक-सा बना रहता है, इस बीच उसका एक मित्र सूचित करता है कि गुलेरी ने पति के दूसरे विवाह की बात सुनकर अपने कपड़ों पर केरोसीन डाल कर आग लगा ली थी। इससे मानक का दिल टूट जाता है और वह एक मुर्दा इंसान की तरह जीवन व्यतीत करने लगता है। जब उसकी दूसरी पत्नी एक पुत्र को जन्म देती है, तो मानक बच्चे को बहुत देर तक घूरता रहता है और फिर फूट पड़ता है, "इसे यहाँ से दूर करो! इससे केरोसीन की दुर्गंध आती है।" ***UPSC-2015***

276. यह संवेदनशील समस्या-आधारित कहानी, पाठकों को किसके बारे में जागरूक करने का प्रयास करती है?
(a) पुरुषवाद (मेल शोविनिज़्म) और अन्यगमन (इनफिडेलिटी)
(b) प्यार और विश्वासघात
(c) महिलाओं के लिये विधिक संरक्षण की कमी
(d) पितृतंत्रात्मक मनोवृत्ति का प्रभाव

परिच्छेद–178

सरकार का चरम लक्ष्य डराकर शासन करना या नियंत्रण करना नहीं है, और न ही आज्ञाकारिता की अपेक्षा रखना है, बल्कि उसके विपरीत, प्रत्येक व्यक्ति को डर से मुक्त करना है जिससे वह हर तरह से संभव सुरक्षित जीवन जी सके। दूसरे शब्दों में लोगों के, बिना खुद को या दूसरों को हानि पहुँचाए, अस्तित्व बनाए रखने और काम करने के नैसर्गिक अधिकार को सशक्त करना है। सरकार का उद्देश्य लोगों को विवेकशील व्यक्तियों से बदल कर उन्हें पशु या कठपुतलियाँ बनाना नहीं है। सरकार को इस प्रकार सहायक होना चाहिये कि लोग सुरक्षित महसूस करते हुए अपनी बुद्धि और शरीर को विकसित करने और मुक्त हो कर अपने विवेक का प्रयोग करने में समर्थ बन सकें। ***UPSC-2015***

277. निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तार्किक और युक्तिसंगत अनुमान (इंफेरेंस) उपर्युक्त परिच्छेद से निकाला जा सकता है?
(a) सरकार का वास्तविक लक्ष्य नागरिकों की सामाजिक एवं राजनीतिक स्वतंत्रता सुरक्षित करना है।
(b) सरकार का प्राथमिक सरोकार अपने सभी नागरिकों को पूर्ण सामाजिक सुरक्षा प्रदान करना है।
(c) सर्वश्रेष्ठ सरकार वह है जो नागरिकों को जीवन के सभी विषयों में पूर्ण स्वतंत्रता देती है।
(d) सर्वश्रेष्ठ सरकार वह है जो देश के लोगों को पूर्ण शारीरिक सुरक्षा प्रदान करती है।

परिच्छेद–179

हमारे नगर निगमों में कर्मचारियों की कमी है। कर्मचारियों के कौशलों और सक्षमताओं का मुद्दा और भी बड़ी चुनौती खड़ी करता है। शहरी सेवाओं के प्रदान किये जाने की और आधारिक संरचना की योजना बनाना और निष्पादित करना बहुत जटिल कार्य है। इनके लिये उच्च कोटि की विशेषज्ञता और वृत्ति-दक्षता (प्रोफेशनलिज़्म) की आवश्यकता है। वर्तमान में जिस ढाँचे के अंतर्गत नगर निगमों में वरिष्ठ प्रबंधकों समेत कर्मचारियों की भर्ती की जा रही है, उसमें अपेक्षित तकनीकी और प्रबंधकीय सक्षमताओं के लिये पर्याप्त रूप से प्रावधान नहीं है। काडर और भर्ती नियम सिर्फ न्यूनतम शैक्षिक योग्यताओं का निर्धारण करते हैं। उनमें प्रबंधकीय या तकनीकी सक्षमताओं का, या संगत कार्य अनुभव का, कोई उल्लेख नहीं होता। अधिकांश नगर निगमों की यही स्थिति है। उनका संगठनीय अभिकल्प (डिज़ाइन) और संरचना भी कमज़ोर है।

UPSC-2015

278. निम्नलिखित में से कौन-सी सर्वाधिक तार्किक और युक्तिसंगत पूर्वधारणा (अज़म्प्शन) उपर्युक्त परिच्छेद से बनाई जा सकती है?
(a) शहरी सेवाओं के प्रदान किये जाने का कार्य बहुत जटिल मुद्दा है, जिसके लिये पूरे देश में नगर निकायों के संगठन-विस्तार की आवश्यकता है।
(b) हमारे शहर बेहतर गुणतायुक्त जीवन उपलब्ध करा सकते हैं यदि हमारे स्थानीय शासकीय निकायों के पास अपेक्षित कौशल और सक्षमताओं वाले यथेष्ट कर्मचारी हों।
(c) कौशलयुक्त कर्मचारियों की कमी ऐसी संस्थाओं के अभाव के कारण है जो नगर प्रबंधन में अपेक्षित कौशल प्रदान करें।
(d) हमारा देश तीव्रता से हो रहे शहरीकरण की समस्याओं के प्रबंधन के लिये जनांकिकीय लाभांश (डेमोग्राफिक डिविडेंड) का लाभ नहीं उठा रहा है।

परिच्छेद–180

वनों में बड़े झुंडों में रहने वाले फ्लेमिंगो सामाजिक और अत्यंत निष्ठावान होते हैं। वे समूह संगम नृत्य करते हैं। नर और मादा पक्षी अपने चूज़ों से बहुत प्यार करते हैं, और जब नर और मादा दोनों भोजन की तलाश में दूर उड़ जाते हैं तब सुरक्षा के लिये उन चूज़ों को क्रेशों (creches) में एकत्र रख जाते हैं। ***UPSC-2015***

279. निम्नलिखित में से कौन-सा, उपर्युक्त परिच्छेद का सबसे तर्कसंगत उपनिगमन (कोरोलरी) है?
(a) सभी स्पीशीज़ के पक्षियों में सामूहिक नीड़न (मास नेस्टिंग) अनिवार्य है, ताकि उनकी संततियाँ पूरी तरह जीवित बनी रहें।
(b) सिर्फ पक्षियों में सामाजिक व्यवहार विकसित करने की क्षमता होती है, अत: वे अपने चूज़ों को सुरक्षापूर्वक पालने के लिये सामूहिक नीड़न अपना सकते हैं।
(c) कुछ स्पीशीज़ के पक्षियों में सामाजिक व्यवहार, असुरक्षित विश्व में जीवित बने रहने की विषमताओं को बढ़ा देता है।
(d) सभी स्पीशीज़ के पक्षी अपने चूज़ों को सामाजिक व्यवहार और निष्ठा सिखाने के लिये क्रेशों (creches) की स्थापना करते हैं।

परिच्छेद–181

बहुत बड़ी संख्या में ऐसे भारतीय नागरिक ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं, जिनके बैंक खाते नहीं है। ये वित्तीय और प्रकार्यात्मक (फंक्शनल) रूप से अशिक्षित हैं, और प्रौद्योगिकी के साथ इनका अनुभव नगण्य है। एक विशेष क्षेत्र में, जहाँ महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी योजना (MGNREGS) के अंतर्गत इलेक्ट्रॉनिक भुगतान के रूप में मजदूरी सीधे निर्धनों को दी जानी होती है, एक अनुसंधानपरक अध्ययन किया गया। यह पाया गया कि मज़दूरी प्राप्त करने वाले प्रायः यह मान लेते हैं कि इस प्रक्रिया में गाँव के नेता की मध्यस्थता आवश्यक है, जैसा कि पूर्व में कागज़ों पर आधारित व्यवस्था में होता था। इस अनुसंधानपरक अध्ययन के अंतर्गत, कम से कम एक बैंक खाता रखने का दावा करने वाले परिवारों में से एक-तिहाई से अधिक परिवारों ने बताया कि वे अभी भी MGNREGS की मज़दूरी नकद रूप में सीधे गाँव के नेता से प्राप्त कर रहे हैं। ***UPSC-2015***

280. उपर्युक्त परिच्छेद में निहित सर्वाधिक तार्किक, तर्कसंगत और महत्त्वपूर्ण संदेश क्या है?
   (a) MGNREGS का प्रसार सिर्फ उन तक किया जाना चाहिये जिनके पास बैंक खाता है।
   (b) वर्तमान परिदृश्य में कागज़ों पर आधारित भुगतान व्यवस्था इलेक्ट्रॉनिक भुगतान व्यवस्था से अधिक दक्ष है।
   (c) मज़दूरी के इलेक्ट्रॉनिक भुगतान का लक्ष्य गाँव के नेताओं की मध्यस्थता को समाप्त करना नहीं था।
   (d) ग्रामीण निर्धनों को वित्तीय साक्षरता उपलब्ध कराना आवश्यक है।

परिच्छेद–182

मानव विकास को संवर्द्धित करने वाले व्यक्ति, समूह और नेता कड़ी संस्थागत, संरचनात्मक और राजनीतिक बाध्यताओं के अंतर्गत कार्य करते हैं, जिनसे नीति के विकल्प प्रभावित होते हैं। किंतु अनुभव यह सुझाव देता है कि मानव विकास हेतु एक उपयुक्त कार्यसूची को आकार देने के लिये व्यापक सिद्धांतों की आवश्यकता होती है। अनेक दशकों के मानव विकास के अनुभव से इस एक महत्त्वपूर्ण बात का पता लगा है कि आर्थिक संवृद्धि पर ही अनन्य रूप से ध्यान केंद्रित करने से समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। हमारे पास स्वास्थ्य और शिक्षा को उन्नत करने के तरीकों की अच्छी जानकारी तो है, लेकिन संवृद्धि किन कारणों से होती है इसे समझने में काफी कमी है और संवृद्धि प्रायः भ्रामक है। साथ ही, संवृद्धि पर असंतुलित रूप से बल देने से प्रायः पर्यावरण पर नकारात्मक परिणाम और वितरण में प्रतिकूल प्रभाव होते हैं। संवृद्धि के प्रभावशाली कीर्तिमान वाला चीन का अनुभव, इन व्यापक सरोकारों को प्रतिबिंबित करता है और मानव विकास के गैर-आय पहलुओं में निवेश को प्रमुखता देने वाले संतुलित दृष्टिकोणों के साथ आगे बढ़ने के महत्त्व पर बल देता है। ***UPSC-2015***

281. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
   1. विकासशील देशों में, मानव विकास और नीति विकल्पों के लिये मज़बूत संस्थागत संरचना ही एकमात्र आवश्यकता है।
   2. मानव विकास और आर्थिक संवृद्धि सदैव सकारात्मक रूप से परस्पर संबंधित नहीं हैं।
   3. केवल मानव विकास पर ही बल देना, आर्थिक संवृद्धि का लक्ष्य होना चाहिये।

   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
   (a) केवल 1 (b) केवल 2 और 3
   (c) केवल 2 (d) 1, 2 और 3

282. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित धारणाएँ बनाई गई हैं:
   1. आर्थिक असमानता में कमी सुनिश्चित करने के लिये उच्चतर आर्थिक संवृद्धि अनिवार्य है।
   2. पर्यावरण का निम्नीकरण, कभी-कभी आर्थिक संवृद्धि का ही परिणाम होता है।

   उपर्युक्त में से कौन-सी वैध धारणा/धारणाएँ है/हैं?
   (a) केवल 1 (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

परिच्छेद–183

मानव इतिहास ऐसे दावों और सिद्धांतों से भरा पड़ा है, जो शासन करने का अधिकार केवल कुछ चुनिंदा नागरिकों तक सीमित करते हैं। अधिकांश लोगों को इसमें शामिल न करना इस आधार पर न्यायोचित ठहराया गया है कि मानव को, समाज की भलाई और राजनीतिक प्रक्रिया की व्यवहार्यता के लिये न्यायसंगत रूप से पृथक्कृत किया जा सकता है। ***UPSC-2015***

283. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक, उपर्युक्त परिच्छेद में युक्ति (आर्गुमेंट) के एक अंश के रूप में न्यूनतम आवश्यक है?
   (a) मानव, उसे प्रभावित करने वाली बाह्य वस्तुओं पर नियंत्रण पाने का प्रयास करता है।
   (b) समाज में, 'अधिमानव (सुपरह्यूमन)' और 'अवमानव (सबह्यूमन)' होते हैं।
   (c) सर्वजनीन नागरिक भागीदारी में अपवाद पूरे तंत्र की क्षमता के लिये सहायक हैं।
   (d) शासन करने में यह मान्यता निहित है कि अलग-अलग व्यक्तियों की क्षमताओं में असमानताएँ होती हैं।

परिच्छेद–184

वर्ष 2050 तक, पृथ्वी पर जनसंख्या संभावित रूप से सात अरब (बिलियन) से बढ़ कर नौ अरब हो चुकी होगी। उन सबका पेट भरने के लिये–उपभोग के बदलते हुए प्रतिरूपों, जलवायु परिवर्तन और कृषि-योग्य भूमि तथा पेय जल की सीमित मात्रा को ध्यान में रखते हुए –कुछ विशेषज्ञों का कहना है कि खाद्य उत्पादन दुगुना करना पड़ेगा। हम इसे किस प्रकार उपलब्ध कर सकते हैं? विशेषज्ञ कहते हैं कि अपेक्षाकृत अधिक उपज देने वाली फसलों की किस्में तथा कृषि के अपेक्षाकृत अधिक कुशल तरीके निर्णायक होंगे। इसी प्रकार संसाधनों को कम-से-कम व्यर्थ जाने देना भी निर्णायक होगा। विशेषज्ञों का आग्रह है कि नगरों की अपशिष्ट जलधाराओं (वेस्ट स्ट्रीम्स) से पोषक-तत्त्वों और जल को पुनः प्राप्त किया जाए, एवं कृषि भूमि का संरक्षण करें। वे कहते हैं कि निर्धन राष्ट्र अपने फसल भंडारण एवं पैकेजिंग में सुधार

कर सकते हैं और समृद्ध राष्ट्र मांस जैसे संसाधन-सघन (रिसोर्स-इंटेन्सिव) खाद्यों में कटौती कर सकते हैं। ***UPSC-2015***

284. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक, उपर्युक्त परिच्छेद का सर्वोत्तम सारांश रूप प्रस्तुत करता है?
   (a) विश्व की जनसंख्या बहुत तेज़ी से बढ़ रही है।
   (b) खाद्य सुरक्षा केवल विकासशील देशों में ही एक चिरस्थायी समस्या है।
   (c) खाद्य के सन्निकट अभाव को पूरा करने के लिये विश्व के पास पर्याप्त संसाधन नहीं हैं।
   (d) खाद्य सुरक्षा एक लगातार बढ़ती हुई सामूहिक चुनौती है।

परिच्छेद–185

भारत में अनेक लोगों का यह विचार है कि यदि हम शस्त्र-निर्माण पर अपने रक्षा व्यय को कम कर दें, तब हम अपने पड़ोसियों के साथ शांति का वातावरण बना सकते हैं, जिससे उत्तरोत्तर संघर्ष कम होगा अथवा युद्ध-मुक्त स्थिति बनेगी। जो लोग इस प्रकार के विचार घोषित करते हैं, वे या तो युद्ध पीड़ित हैं अथवा मिथ्या तर्क फैलाने वाले हैं। ***UPSC-2015***

285. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सी एक सर्वाधिक वैध पूर्वधारणा (अज़म्प्शन) है?
   (a) हमारे शस्त्र-प्रणालियों के निर्माण से हमारे पड़ोसी हमारे विरुद्ध युद्ध के लिये उत्तेजित हुए हैं।
   (b) हम शस्त्र-निर्माण पर जितना अधिक व्यय करेंगे, हमारे पड़ोसियों के साथ सशस्त्र संघर्ष की संभावना उतनी ही कम होगी।
   (c) राष्ट्रीय सुरक्षा के लिये यह आवश्यक है कि हमारे पास अत्याधुनिक शस्त्र-प्रणालियाँ हों।
   (d) भारत में अनेक लोगों का विश्वास है कि हम शस्त्र-निर्माण में अपने संसाधनों का अपव्यय कर रहे हैं।

परिच्छेद–186

विश्व की बाल मृत्यु में लगभग पाँचवा भाग भारत का है। संख्या के आधार पर, यह दुनिया में सर्वाधिक बाल-मृत्यु है– लगभग 16 लाख प्रति वर्ष। इनमें से, आधे से अधिक की जीवन के प्रथम मास में ही मृत्यु हो जाती है। जैसा कि अधिकारियों का विश्वास है, इसका कारण यह है कि स्तनपान और प्रतिरक्षीकरण (इम्यूनाइज़ेशन) से संबंधित आधारभूत स्वास्थ्य आचरणों के प्रसार के लिये कदम नहीं उठाए गए हैं। साथ ही, 2.6 करोड़ की विशाल गर्भधारण-योग्य जनसंख्या गर्भावस्था तथा प्रसव-पश्चात् के संकटपूर्ण समय के दौरान देखभाल से वंचित भी बनी रहती है। इसमें बाल विवाहों का प्रचलन, युवतियों में अरक्तता (अनीमिया) तथा किशोरावस्था की स्वच्छता पर विशेष ध्यान न होना भी शामिल है, जो सभी बाल-मृत्यु दरों को प्रभावित करते हैं। ***UPSC-2015***

286. उपर्युक्त परिच्छेद से, कौन-सा निर्णायक अनुमान (इंफेरेंस) निकाला जा सकता है?
   (a) बहुत से भारतीय निरक्षर हैं इसलिये आधारभूत स्वास्थ्य आचरणों का मूल्य नहीं पहचानते हैं।
   (b) भारत की जनसंख्या अति विशाल है और केवल सरकार ही लोक स्वास्थ्य सेवाओं का प्रबंधन नहीं कर सकती।
   (c) मातृ स्वास्थ्य तथा बाल स्वास्थ्य सेवाओं को एकीकृत करने और सबको सुलभ कराने से इस समस्या को प्रभावी रूप से हल किया जा सकता है।
   (d) गर्भधारण-योग्य महिलाओं का पोषण बाल मृत्यु दर को प्रभावित नहीं करता।

परिच्छेद–187

खाद्य पदार्थ, उनको खाने वाले मनुष्यों की अपेक्षा, अधिक यात्रा करते हैं। किराना भंडार और सुपर बाज़ार परिरक्षित (प्रिजर्व्ड) और प्रसंस्कृत (प्रॉसेंस्ड) खाद्य पदार्थों से भरे पड़े हैं। तथापि, प्रायः उससे पर्यावरणीय खतरे भी बढ़ते हैं, जैसे, लंबी दूरी तक खाद्य पदार्थों के परिवहन से होने वाला प्रदूषण तथा प्रसंस्करण एवं परिवहन के दौरान खाद्य पदार्थ का व्यर्थ जाना, वर्षा-प्रचुर वनों का विनाश, पोषक अंश में कमी, परिरक्षण और पैकेजिंग की बढ़ी हुई मांग। खाद्य असुरक्षा भी बढ़ जाती है क्योंकि ये उत्पाद उन क्षेत्रों से आते हैं जो अपनी जनसंख्या को उपयुक्त खाद्य पदार्थ नहीं खिला पाते। ***UPSC-2015***

287. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
   1. क्षेत्रीय रूप से उगाए गए खाद्य पदार्थों का उपभोग करना और लंबी यात्रा से लाए गए खाद्य पदार्थों पर निर्भर न होना पर्यावरण-अनुकूली व्यवहार का एक हिस्सा है।
   2. खाद्य प्रसंस्करण (प्रोसेसिंग) उद्योग हमारे प्राकृतिक संसाधनों (रिसोर्सेज़) पर बोझ डालता है।

   नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:

   (a) केवल 1 (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

परिच्छेद–188

मैं पक्के तौर पर कह सकता हूँ कि मेरे स्वाभाविक शर्मीलेपन के कारण, सिवाय यदा-कदा हास्य का पात्र बन जाने के, मेरा किसी भी तरह और कोई नुकसान नहीं हुआ। वास्तव में, आज मुझे लगता है, कि इसके विपरीत, मुझे कुछ फायदा ही हुआ। बोलने का जो संकोच मुझे पहले कष्टकर था, वह अब सुखकर है। इसका सबसे बड़ा लाभ तो यह हुआ कि इसने मुझे शब्दों की मितव्ययिता सिखाई। मुझे अपने विचारों पर काबू रखने की आदत सहज ही पड़ गई। और अब मैं खुद को यह प्रमाण-पत्र दे सकता हूँ कि मेरी जीभ या कलम से बिना विचारे शायद ही कोई शब्द निकलता हो। मुझे याद नहीं पड़ता कि अपने भाषण या लेख के किसी अंश के लिये मुझे कभी पछताना पड़ा हो। इस तरह मैं अनेक खतरों से बचा हूँ और मेरा बहुत-सा समय बचा है। अनुभव ने मुझे यह सिखाया है कि सत्य के उपासक के लिये मौन उसके आध्यात्मिक अनुशासन का अंग है। मनुष्य की यह स्वाभाविक कमज़ोरी है कि वह जाने-अनजाने में अक्सर बढ़ा-चढ़ा कर बोलता है अथवा जो कहने योग्य है उसे छिपाता है या भिन्न रूप में कहता है। इस पर विजय पाने के लिये मौन आवश्यक है, कम बोलने वाला बिना विचारे न बोलेगा; अपने प्रत्येक शब्द को तौलेगा। हम देखते हैं कि बहुत से मनुष्य बोलने के

लिये आतुर रहते हैं। किसी बैठक का ऐसा कोई सभापति न होगा जिसे बोलने की अनुमति मांगने वाली चिटों से परेशान न होना पड़ा हो। और जब भी बोलने का समय दिया जाता है तो वक्ता आमतौर पर समय-सीमा से आगे बढ़ जाता है, और अधिक समय की मांग करता है, और बिना इजाज़त के भी बोलता रहता है। इस सारे बोलने से दुनिया का कोई लाभ हुआ हो ऐसा शायद ही कहा जा सकता है। यह समय का घोर अपव्यय है। मेरी लज्जाशीलता दरअसल मेरी ढाल और आड़ ही बनी रही। उससे मुझे परिपक्व होने का लाभ मिला। सत्य को पहचानने में मुझे उससे सहायता मिली। ***UPSC-2015***

288. लेखक कहता है कि उसकी जीभ या कलम से बिना विचारे शायद ही कोई शब्द निकलता हो। निम्नलिखित में से कौन-सा एक, इसका वैध कारण नहीं है?
(a) अपना समय बर्बाद करने का उसका कोई इरादा नहीं है।
(b) वह शब्दों की मितव्ययिता में विश्वास करता है।
(c) वह अपने विचारों पर काबू रखने में विश्वास करता है।
(d) उसे बोलने में संकोच होता है।

289. लेखक के अनेक खतरों से बचे रहने का सर्वाधिक उपयुक्त कारण क्या है?
(a) वह बिना विचारे शायद ही कोई शब्द बोलता या लिखता है।
(b) वह अत्यंत धैर्यशाली व्यक्ति है।
(c) उसका विश्वास है कि वह एक आध्यात्मिक व्यक्ति है।
(d) वह सत्य का उपासक है।

290. लेखक के लिये, किस पर विजय पाने के लिये मौन आवश्यक है?
(a) स्वाभाविक शर्मीलापन
(b) बोलने में संकोच
(c) विचारों पर काबू रखना
(d) बढ़ा-चढ़ाकर बोलने की प्रवृत्ति

परिच्छेद–189

हाल के वर्षों में, भारत न केवल खुद अपने अतीत की तुलना में, बल्कि अन्य देशों की तुलना में भी, तेज़ी से विकसित हुआ है। किंतु इसमें किसी आत्मसंतोष की गुंजाइश नहीं हो सकती, क्योंकि भारतीय अर्थव्यवस्था के लिये इससे भी अधिक तीव्र विकास करना और इस संवृद्धि के लाभों को, अब तक जितना किया गया है उससे कहीं अधिक व्यापक रूप से, अधिकाधिक लोगों तक पहुँचाना संभव है। उन सूक्ष्म-संरचनात्मक परिवर्तनों के प्रकारों के ब्योरों में जाने से पहले, जिनकी हमें संकल्पना करने और फिर उन्हें कार्यान्वित करने की ज़रूरत है, समावेशी संवृद्धि के विचार को विस्तार से देखना सार्थक होगा, जो कि इस सरकार की विभिन्न आर्थिक नीतियों और निर्णयों के पीछे एक निरूपक संकल्पना निर्मित करता है। समावेशी संवृद्धि में रुचि रखने वाला राष्ट्र इसी संवृद्धि को एक भिन्न रूप में देखता है जो इस पर आधारित है कि क्या संवृद्धि के लाभों का जनसंख्या के एक छोटे हिस्से पर ही अंबार लगा दिया गया है या इनमें सभी लोगों की व्यापक रूप से साझेदारी है। अगर संवृद्धि के लाभों में व्यापक रूप से साझेदारी है तो यह खुशी की बात है, पर अगर संवृद्धि के लाभ एक हिस्से पर ही केंद्रित हैं, तो नहीं। दूसरे शब्दों में, संवृद्धि को अपने आप में एक साध्य की तरह नहीं देखा जाना चाहिये, बल्कि इसे सभी तक संपन्नता पहुँचाने के एक साधन के रूप में देखा जाना चाहिये। भारत के स्वयं के अतीत के अनुभव तथा दूसरे राष्ट्रों के अनुभव भी, यह सुझाते हैं कि संवृद्धि गरीबी के उन्मूलन के लिये आवश्यक तो है परंतु यह एक पर्याप्त शर्त नहीं है। दूसरे शब्दों में, संवृद्धि को बढ़ाने की नीतियों को ऐसी और नीतियों से संपूरित किया जाना आवश्यक है जो यह सुनिश्चित करें कि अधिकाधिक लोग संवृद्धि की प्रक्रिया में शामिल हों, और यह भी, कि ऐसी क्रियाविधियाँ उपलब्ध हों जिनसे कुछ लाभ ऐसे लोगों में पुनर्वितरित किये जाए जो बाज़ार-प्रक्रिया में भागीदार होने में अक्षम हैं और इस कारण पीछे छूट जाते हैं।

समावेशी संवृद्धि के इस विचार को एक अधिक सुस्पष्ट रूप देने का एक सरल तरीका यह है कि किसी राष्ट्र की उन्नति को उसके सबसे गरीब हिस्से, उदाहरणार्थ, जनसंख्या के सबसे निचले 20% की उन्नति के आधार पर मापा जाए। जनसंख्या के इस सबसे निचले पाँचवें हिस्से की प्रति व्यक्ति आय को मापा जा सकता है और आय की वृद्धि-दर की गणना भी की जा सकती है; और सबसे गरीब हिस्से से संबंधित इन मापकों के आधार पर हमारी आर्थिक सफलता का आकलन किया जा सकता है। यह दृष्टि आकर्षक है, क्योंकि यह संवृद्धि की उस तरह उपेक्षा नहीं करती जैसी कि कुछ पहले के परंपराविरुद्ध मानदंडों में की जाती थी। यह बस जनसंख्या के सबसे गरीब हिस्से की आय की वृद्धि को ही देखती है। यह इसे भी सुनिश्चित करती है कि ऐसे लोगों की भी उपेक्षा न हो जो इस निचले पाँचवें हिस्से से बाहर हैं। अगर ऐसा हो, तो पूरी संभावना है कि वे लोग भी इस निचले पाँचवें हिस्से में आ जाए और इस प्रकार अपने-आप ही हमारी इन नीतियों का सीधा लक्ष्य बन जाए। इस प्रकार यहाँ सुझाए गए मानदंड समावेशी संवृद्धि के विचार का सांख्यिकीय समाकलन हैं जो परिणामतः दो उपसिद्धांतों की ओर ले जाते हैं: यह इच्छा करना कि आवश्यक रूप से भारत ऊँची संवृद्धि प्राप्त करने का प्रयास करे और हम इसे सुनिश्चित करने के लिये कार्य करें कि संवृद्धि से सबसे गरीब हिस्से लाभान्वित हों। ***UPSC-2014***

291. इस परिच्छेद में, लेखक की दृष्टि का केंद्र बिंदु क्या है?
(a) भारत की, न केवल इसके खुद के पूर्व के निष्पादन की तुलना में बल्कि अन्य राष्ट्रों की तुलना में भी, आर्थिक संवृद्धि की प्रशंसा करना।
(b) आर्थिक संवृद्धि की आवश्यकता पर बल देना, जो देश की संपन्नता की एकमात्र निर्धारक है।
(c) उस समावेशी संवृद्धि पर बल देना, जिसमें जनसंख्या व्यापक रूप से संवृद्धि के लाभों में सहभागी होती है।
(d) उच्च संवृद्धि पर बल देना।

292. इस परिच्छेद में, लेखक उन नीतियों का समर्थन करता है, जो
(a) आर्थिक संवृद्धि को बढ़ाने में सहायक होंगी।
(b) आय के बेहतर वितरण में सहायक होंगी, चाहे वृद्धि दर कुछ भी हो।

(c) आर्थिक संवृद्धि बढ़ाने और आर्थिक उपलब्धियों को उनमें पुनर्वितरित करने में सहायक होंगी, जो पीछे छूट रहे हैं।
(d) समाज के सबसे गरीब हिस्सों के विकास पर बल देने में सहायक होंगी।

293. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
लेखक के अनुसार, भारत की अर्थव्यवस्था विकसित हुई है किंतु यहाँ आत्मसंतोष के लिये कोई गुंजाइश नहीं है, क्योंकि
1. संवृद्धि से गरीबी का उन्मूलन होता है।
2. संवृद्धि सभी की संपन्नता में परिणमित हुई है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 न ही 2

परिच्छेद–190

जलवायु परिवर्तन, भारत की कृषि पर संभावित रूप से विध्वंसकारी प्रभाव रखता है। जबकि, जलवायु परिवर्तन के समग्र प्राचल वर्धमानत: स्वीकृत हैं- अगले 30 वर्ष में 1°C की औसत ताप वृद्धि, इसी अवधि में 10 cm से कम की समुद्र तल वृद्धि, और क्षेत्रीय मानसून विचरण तथा संगत अनावृष्टि- भारत में प्रभाव काफी स्थल एवं फसल विशिष्ट होने संभावित हैं। कुछ फसलें परिवर्तनशील दशाओं के प्रति अनुकूल प्रतिक्रिया दे सकती हैं, दूसरी नहीं भी दे सकती हैं। इससे कृषि अनुसंधान को प्रोत्साहन देने और प्रणाली में अनुकूलन हो सके इस हेतु, अधिकतम नम्यता बनाने की आवश्यकता पर बल पड़ता है।

"अनावृष्टि रोधन" का मुख्य संघटक अंत: जलस्तर का प्रबंधित पुनर्भरण है। महत्त्वपूर्ण आधारिक फ़सलों (जैसे, गेहूँ) की लगातार उपज सुनिश्चित करने के लिये, ताप परिवर्तनों तथा जल उपलब्धता को देखते हुए इन फसलों की उगाई वाले स्थानों को बदलना भी आवश्यक हो सकता है। दीर्घावधि निवेश के निर्णय करने में जल उपलब्धता एक मुख्य कारक होगा।

उदाहरण के लिये, अगले 30 वर्षों में जैसे-जैसे हिमनद पिघलते जाते हैं, हिमालय क्षेत्र से जल के बहाव के बढ़ते जाने, और तदनंतर अत्यधिक घटते जाने का पूर्वानुमान किया गया है। कृषि-पारिस्थितिक दशाओं में बड़े पैमाने पर आने वाले इन बदलावों के लिये योजना बनाने हेतु प्रोत्साहन प्रदान करना निर्णायक होगा।

भारत के लिये कृषि अनुसंधान और विकास में दीर्घावधि निवेश करना आवश्यक है। यह संभावित है कि भारत को भविष्य में एक बदले हुए मौसम प्रतिरूप का सामना करना होगा। ***UPSC-2014***

294. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
जलवायु परिवर्तन वर्तमान फसलों के स्थानों में बदलाव लाने के लिये किस कारण से मजबूर करेंगे?
1. हिमनदों का पिघलना
2. दूसरे स्थानों पर जल उपलब्धता और ताप उपयुक्तता
3. फसलों की हीन उत्पादकता
4. सस्य पादपों की अपेक्षाकृत व्यापक अनुकूलता
उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(a) 1, 2 और 3 (b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 4 (d) 1, 2, 3 और 4

295. इस परिच्छेद के अनुसार, भारत में कृषि अनुसंधान को बढ़ावा देना महत्त्वपूर्ण क्यों है?
(a) मानसून प्रतिरूपों में विचरण का पूर्वानुमान करना और जल संसाधनों का प्रबंधन करना
(b) आर्थिक संवृद्धि के लिये दीर्घावधि निवेश के निर्णय करना
(c) फ़सलों की व्यापक अनुकूलता को सुकर बनाना
(d) अनावृष्टि दशाओं का पूर्वानुमान करना और अंत:जलस्तरों का पुनर्भरण करना

परिच्छेद–191

यह परमावश्यक है कि हम ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन घटाएँ और इस तरह आगामी वर्षों और दशकों में होने वाले जलवायु परिवर्तन के कुछ बदतरीन प्रभावों से बचें। उत्सर्जन कम करने के लिये ऊर्जा के उत्पादन और उपभोग के हमारे तरीकों में एक बड़ा बदलाव अपेक्षित होगा। जीवाश्म ईंधनों पर अत्यधिक निर्भरता से हटना अतिविलंबित है, किंतु दुर्भाग्य से, प्रौद्योगिकीय विकास धीमा और अपर्याप्त रहा है, मोटे तौर पर इसलिये, कि तेल की अपेक्षाकृत निम्न कीमतों से जन्मी अदूरदर्शिता के कारण सरकारी नीतियाँ अनुसंधान और विकास में निवेश को प्रोत्साहन नहीं देती रही है। इसलिये अब राष्ट्रीय अनिवार्यता के रूप में वृहत पैमाने पर नवीकरणीय ऊर्जा को काम में लाने के अवसर का लाभ उठाना भारत जैसे देश के लिये अत्यावश्यक है। यह देश ऊर्जा के सौर, वायु और जैवमात्रा स्रोतों से अत्यधिक संपन्न है। दुर्भाग्य से, जहाँ हम पीछे हैं, वह है इन स्रोतों को काम में लाने के लिये प्रौद्योगिकीय समाधान विकसित और सर्जित करने की हमारी क्षमता।

जलवायु परिवर्तन पर अंत:सरकारी पैनल (IPCC) द्वारा निर्धारित रूप में ग्रीनहाउस गैसों को सख़्ती से कम करने के लिये विशिष्ट प्रक्षेप-पथ स्पष्ट रूप से यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता को दिखाता है कि ग्रीनहाउस गैसों के भूमंडलीय उत्सर्जनों का चरम बिंदु 2015 को पार न करे और उसके आगे तेज़ी से घटने लगे। ऐसे प्रक्षेप-पथ के साथ संबद्ध लागत वस्तुत: मर्यादित है और इसकी राशि, IPCC के आकलन में, 2030 में विश्व GDP के 3 प्रतिशत से अधिक नहीं होगी। दूसरे शब्दों में, संपन्नता के जिस स्तर पर विश्व बिना उत्सर्जन में कमी लाए पहुँच सकता, ख़राब-से-ख़राब हालत में कुछ मास या अधिक-से-अधिक एक वर्ष तक टल जाएगी। स्पष्टत: यह, जलवायु परिवर्तन से जुड़े बदतरीन ख़तरों से करोड़ों लोगों को बचाने के लिये चुकाई जाने वाली कोई बहुत बड़ी कीमत नहीं है। तथापि, ऐसे किसी प्रयास के लिये जीवन-शैलियों को भी उपयुक्त रूप से बदलना होगा। ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी लाना सिर्फ़ एक प्रौद्योगिकीय उपाय भर नहीं है, और इसके लिये स्पष्टत: जीवन-शैलियों में बदलाव और देश की आर्थिक संरचना में रूपांतरण अपेक्षित है, जिसके द्वारा, उत्सर्जन को प्रभावी रूप से कम किया जाए, जैसे कि जीव प्रोटीन के काफी कम मात्राओं में उपभोग के

माध्यम से। खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) ने यह निर्धारित किया है कि पशुधन क्षेत्रक से उत्सर्जन कुल उत्सर्जन का 18 प्रतिशत होता है। इस स्रोत से हो रहे उत्सर्जन में कमी लाना पूरी तरह मनुष्यों के हाथ में है, जिन्होंने अपनी अधिक से अधिक जीव प्रोटीन के उपभोग की आहार-आदतों के कारण पड़ने वाले प्रभाव पर कभी कोई प्रश्न नहीं उठाया। वस्तुतः उत्सर्जन में कमी लाने के विशाल सह-सुलाभ हैं, जैसे अपेक्षाकृत कम वायु प्रदूषण और स्वास्थ्य संबंधी लाभ, उच्चतर ऊर्जा सुनिश्चितता तथा और अधिक रोज़गार। ***UPSC-2014***

296. परिच्छेद के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन-से ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने में सहायक होंगे?
1. माँस के उपभोग में कमी लाना
2. तीव्र आर्थिक उदारीकरण
3. उपभोक्तावाद में कमी लाना
4. पशुधन की आधुनिक प्रबंधन प्रक्रियाएँ

नीचे दिये गए कूटों का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:
(a) 1, 2 और 3 (b) 2, 3 और 4
(c) केवल 1 और 3 (d) केवल 2 और 4

297. हम जीवाश्म ईंधनों पर अत्यधिक निर्भर क्यों बने हुए हैं?
1. अपर्याप्त प्रौद्योगिकीय विकास
2. अनुसंधान और विकास के लिये अपर्याप्त निधियाँ
3. ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों की अपर्याप्त उपलब्धता

नीचे दिये कूटों का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:
(a) केवल 1 (b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

298. परिच्छेद के अनुसार, ग्रीनहाउस गैसों में कमी लाना हमारे लिये किस तरह सहायक है?
1. इससे लोक स्वास्थ्य पर व्यय घटता है।
2. इससे पशुधन पर निर्भरता घटती है।
3. इससे ऊर्जा आवश्यकताएँ घटती हैं।
4. इससे भूमंडलीय जलवायु परिवर्तन की दर घटती है।

नीचे दिये गए कूटों का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:
(a) 1, 2 और 3 (b) 1, 3 और 4
(c) 2, 3 और 4 (d) केवल 1 और 4

299. इस परिच्छेद का सारभूत संदेश क्या है?
(a) हम जीवाश्म ईंधनों पर अत्यधिक निर्भर बने हुए हैं।
(b) ग्रीनहाउस गैसों में कमी लाना अत्यावश्यक है।
(c) हमें अनुसंधान और विकास में निवेश करना ही चाहिये।
(d) लोगों को अपनी जीवन-शैली बदलनी ही चाहिये।

परिच्छेद–192

हिमालय का पारितंत्र भूवैज्ञानिक कारणों और जनसंख्या के बढ़े हुए बोझ, प्राकृतिक संसाधनों के दोहन और अन्य संबंधित चुनौतियों से जन्य दबाव के कारण, क्षति के प्रति अत्यंत सुभेद्य हैं। सुभेद्यता के ये पहलू जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के कारण उत्तेजित हो सकते हैं। यह सम्भव है कि जलवायु परिवर्तन हिमालय के पारितंत्र पर, बढ़े हुए तापमान, परिवर्तित वर्षण प्रतिरूप, अनावृष्टि की घटनाओं और जीवीय प्रभावों के माध्यम से, प्रतिकूल प्रभाव डाले। यह न केवल उच्चभूमियों में रहने वाले देशज समुदायों के पूरे निर्वाह पर, बल्कि सारे देश में और उसके परे अनुप्रवाह क्षेत्र में रहने वाले निवासियों के जीवन पर भी असर डालेगा। इसलिये, हिमालय के पारितंत्र की धारणीयता बनाए रखने के लिये विशेष ध्यान देने की तत्काल आवश्यकता है। इसके लिये सभी निरूपक प्रणालियों के संरक्षण के लिये सचेत प्रयत्न करने की आवश्यकता होगी।

आगे, इस पर बल देने की आवश्यकता है कि सीमित व्याप्ति वाले, और बहुधा विशेषीकृत आवासीय आवश्यकताओं वाले विशेषक्षेत्री घटक सर्वाधिक सुभेद्य घटकों में से हैं। इस संदर्भ में, हिमालय का जैवविविधता वाला तप्तस्थल, जो विशेषक्षेत्री विविधता से संपन्न है, जलवायु परिवर्तन के प्रति सुभेद्य है। इसके खतरों में, आनुवंशिक संसाधनों और जातियों, आवासों का संभावित क्षय और सहगामी रूप से, पारितंत्र के लाभों में कमी का आना शामिल है। इसलिये, इस क्षेत्र के लिये संरक्षण योजनाएँ बनाते समय, निरूपक पारितंत्रों/आवासों में विशेषक्षेत्री घटकों के संरक्षण का अत्यंत महत्त्व हो जाता है।

उपर्युक्त को हासिल करने की दिशा में, हमें समकालीन संरक्षण उपागमों की ओर ध्यान अंतरित करना होगा, जिसमें संरक्षित क्षेत्र-प्रणालियों के बीच दृश्यभूमि स्तर की अंतर्संयोजकता का प्रतिमान शामिल है। यह संकल्पना, जाति-आवास पर ध्यान केंद्रित करने की जगह जैवभौगोलिक परास को विस्तारित करने पर समावेशी ध्यान-संकेंद्रण करने का पक्षसमर्थन करती है, ताकि जलवायु परिवर्तन के प्राकृतिक समंजन सीमित हुए बिना आगे बढ़ सकें। ***UPSC-2014***

300. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
परिच्छेद के अनुसार, पारितंत्र पर जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावस्वरूप
1. इसके वनस्पतिजात और प्राणिजात में से कुछ का स्थायी विलोपन हो सकता है।
2. स्वयं पारितंत्र का स्थायी विलोपन हो सकता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1 और न ही 2

301. निम्नलिखित में से किस एक कथन का सबसे सटीक निहितार्थ यह है कि समकालीन संरक्षण उपागम की ओर ध्यान अंतरित करने की आवश्यकता है?
(a) प्राकृतिक संसाधनों का दोहन हिमालय के पारितंत्र पर दबाव डालता है।
(b) जलवायु परिवर्तन के कारण वर्षण प्रतिरूपों में बदलाव, अनावृष्टि की घटनाएँ और जीवीय हस्तक्षेप होता है।
(c) समृद्ध जैवविविधता, जिसमें विशेषक्षेत्री विविधता शामिल है, हिमालय क्षेत्र को एक जैवविविधता तप्तस्थल बनाता है।
(d) हिमालय के जैवभौगोलिक क्षेत्र को इस तरह समर्थ बनाना

चाहिये कि वह अबाध रूप से जलवायु परिवर्तन के प्रति अनुकूल बनता रहे।

302. इस परिच्छेद द्वारा क्या सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण संदेश दिया गया है?
(a) विशेषक्षेत्रीयता हिमालयी क्षेत्र की लाक्षणिक विशेषता है।
(b) संरक्षण प्रयासों का बल कतिपय जातियों या आवासों के स्थान पर जैवभौगोलिक परासों पर होना चाहिये।
(c) जलवायु परिवर्तन का हिमालय के पारितंत्र पर प्रतिकूल प्रभाव हुआ है।
(d) हिमालय के पारितंत्र के अभाव में, उच्चभूमियों और अनुप्रवाह क्षेत्रों के समुदायों के जीवन का कोई धारण-आधार नहीं होगा।

303. परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं:
1. प्राकृतिक पारितंत्र बनाए रखने के लिये, प्राकृतिक संसाधनों के दोहन का पूरी तरह परिहार किया जाना चाहिये।
2. पारितंत्र को, न केवल मानवोद्भविक, बल्कि प्राकृतिक कारण भी प्रतिकूलत: प्रभावित कर सकते हैं।
3. विशेषक्षेत्री विविधता के क्षय से पारितंत्र का विलोपन होता है।
उपर्युक्त धारणाओं में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(a) 1 और 2
(b) केवल 2
(c) 2 और 3
(d) केवल 3

परिच्छेद–193

यह अक्सर भुला दिया जाता है कि विश्वव्यापीकरण केवल अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संबंधों और लेन-देन संबंधी नीतियों के बारे में ही नहीं है, बल्कि इसका सरोकार समान रूप से राष्ट्र की घरेलू नीतियों से भी है। अंतर्राष्ट्रीय रूप से (WTO आदि द्वारा) मुक्त व्यापार और निवेश प्रवाह संबंधी नियत दशाओं को पूरा करने हेतु किये गए आवश्यक नीतिगत परिवर्तन प्रत्यक्षत: घरेलू उत्पादकों तथा निवेशकों को प्रभावित करते हैं। किंतु विश्वव्यापीकरण में अध:शायी आधारभूत दर्शन कीमतों, उत्पादन तथा वितरण प्रतिरूप के निर्धारण के लिये बाज़ारों की अबाध स्वतंत्रता पर बल देता है, तथा सरकारी हस्तक्षेपों को उन प्रक्रियाओं के रूप में देखता है जो विकृति उत्पन्न करती हैं तथा अदक्षता लाती हैं। अत: सार्वजनिक उद्यमों का विनिवेशों तथा विक्रयों द्वारा निजीकरण हो; और अभी तक जो क्षेत्र और कार्यकलाप सार्वजनिक क्षेत्र के लिये आरक्षित हैं, आवश्यक है कि उन्हें प्राइवेट क्षेत्र के लिये खोल दिया जाए। इस तर्क का विस्तार शिक्षा तथा स्वास्थ्य जैसी सामाजिक सेवाओं तक है। कामगारों की छँटनी के माध्यम से श्रम-बल का समायोजन करने पर लगे प्रतिबंध हटा लिये जाने चाहिये तथा तालाबंदी पर लगे प्रतिबंधों को हटाकर निर्गमन को अपेक्षाकृत आसान बनाया जाना चाहिये। रोज़गार तथा वेतन बाज़ार शक्तियों की स्वतंत्र गतिविधियों द्वारा शासित होना चाहिये, क्योंकि उनको नियंत्रित करने में कोई भी उपाय निवेश को हतोत्साहित कर सकते हैं तथा उत्पादन में अदक्षता भी उत्पन्न कर सकते हैं। सर्वोपरि रूप से, राज्य की भूमिका में कमी लाने के समग्र दर्शन के अनुरूप, ऐसे राजकोषीय सुधार किये जाने चाहिये जिनसे आमतौर पर कराधान के स्तर निम्न हों तथा वित्तीय विवेक के सिद्धांत के पालन हेतु शासकीय खर्च न्यूनतम हो। ये सब घरेलू स्तर पर किये जाने वाले नीतिगत कार्य हैं तथा विश्वव्यापीकरण कार्यसूची के सारभाग विषयों-यथा माल और वित्त के स्वतंत्र अंतर्राष्ट्रीय प्रवाह से प्रत्यक्षत: संबंधित नहीं हैं। ***UPSC-2014***

304. इस परिच्छेद के अनुसार, विश्वव्यापीकरण के अंतर्गत सरकारी हस्तक्षेपों को ऐसी प्रक्रियाओं के रूप में देखा जाता है, जिनके कारण
(a) अर्थव्यवस्था में विकृतियाँ और अदक्षता आती है।
(b) संसाधनों का इष्टतम उपयोग होता है।
(c) उद्योगों को अपेक्षाकृत अधिक लाभप्रदता होती है।
(d) उद्योगों के संबंध में बाज़ार शक्तियों की गतिविधि स्वतंत्र होती है।

305. इस परिच्छेद के अनुसार, विश्वव्यापीकरण का आधारभूत दर्शन क्या है?
(a) कीमतों और उत्पादन के निर्धारण के लिये उत्पादकों को पूर्ण स्वतंत्रता देना
(b) वितरण प्रतिरूप विकसित करने हेतु उत्पादकों को स्वतंत्रता देना
(c) कीमतों, उत्पादन और रोज़गार के निर्धारण हेतु बाज़ारों को पूर्ण स्वतंत्रता देना
(d) आयात और निर्यात के लिये उत्पादकों को स्वतंत्रता देना

306. इस परिच्छेद के अनुसार, विश्वव्यापीकरण सुनिश्चित करने के लिये निम्नलिखित में से कौन-सा/से आवश्यक है/हैं?
1. सार्वजनिक उद्यमों का निजीकरण
2. सार्वजनिक व्यय की विस्तार-नीति
3. वेतन और रोज़गार निर्धारित करने की बाज़ार शक्तियों की स्वतंत्र गतिविधि
4. शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी सामाजिक सेवाओं का निजीकरण
नीचे दिये गए कूटों का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:
(a) केवल 1
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1, 3 और 4
(d) केवल 2, 3 और 4

307. इस परिच्छेद के अनुसार, विश्वव्यापीकरण की प्रक्रिया में राज्य की भूमिका कैसी होनी चाहिये?
(a) विस्तृत होती हुई
(b) घटती हुई
(c) सांविधिक
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

परिच्छेद–194

अनेक राष्ट्र अब पूंजीवाद में विश्वास रखते हैं तथा सरकारें अपने लोगों के लिये संपत्ति सर्जित करने की रणनीति के रूप में इसे चुनती

हैं। ब्राज़ील, चीन और भारत में उनकी अर्थव्यवस्थाओं के उदारीकरण के पश्चात् देखी गई भव्य आर्थिक संवृद्धि इसकी विशाल संभाव्यता और सफलता का प्रमाण है। तथापि, विश्वव्यापी बैंकिंग संकट तथा आर्थिक मंदी कइयों के लिये विस्मयकारी रहा है। चर्चाओं का केंद्र बिंदु मुक्त बाज़ार संक्रियाओं और बलों, उनकी दक्षता और स्वयं सुधार करने की उनकी योग्यता की ओर हुआ है। विश्वव्यापी बैंकिंग प्रणाली की असफलता को दर्शाने हेतु न्याय, सत्यनिष्ठा और ईमानदारी के मुद्दों का वर्णन विरले ही किया जाता है। इस प्रणाली के समर्थक पूंजीवाद की सफलता का औचित्य ठहराते ही जाते हैं और उनका तर्क है कि वर्तमान संकट एक धक्का था।

उनके तर्क उनके विचारधारागत पूर्वग्रह को इस पूर्वधारणा के साथ प्रकट करते हैं कि अनियंत्रित बाज़ार न्यायोचित तथा समर्थ होता है, और निजी लालच का व्यवहार वृहत्तर लोकहित में होगा।

कुछ लोग पूंजीवाद और लालच के बीच द्विदिशिक संबंध होने की पहचान करते हैं; कि दोनों एक-दूसरे को परिपुष्ट करते हैं। निश्चित रूप से, इस व्यवस्था से लाभ पाने वाले धनाढ्य और सशक्त खिलाड़ियों के बीच हितों के टकराव, उनके झुकाव और विचारधाराओं के अपेक्षाकृत अधिक ईमानदार संप्रत्ययीकरण की आवश्यकता है; साथ ही संपत्ति सर्जन को केंद्र बिंदु में रखने के साथ उसके परिणामस्वरूप जनित सकल असमानता को भी दर्शाया जाना चाहिये। ***UPSC-2014***

308. इस परिच्छेद के अनुसार, "मुक्त बाज़ार व्यवस्था" के समर्थक किसमें विश्वास करते हैं?
(a) सरकारी प्राधिकारियों के नियंत्रण से रहित बाज़ार
(b) सरकारी संरक्षण से मुक्त बाज़ार
(c) बाज़ार की स्वयं के सुधार की क्षमता
(d) निःशुल्क वस्तुओं व सेवाओं के लिये बाज़ार

309. "विचारधारागत पूर्वग्रह" के संदर्भ में, इस परिच्छेद का निहितार्थ क्या है?
(a) मुक्त बाज़ार न्यायोचित होता है किंतु सक्षम नहीं
(b) मुक्त बाज़ार न्यायोचित नहीं होता किंतु सक्षम होता है
(c) मुक्त बाज़ार न्यायोचित और सक्षम होता है
(d) मुक्त बाज़ार न तो न्यायोचित होता है, न ही पूर्वग्रहयुक्त

310. इस परिच्छेद से "निजी लालच का व्यवहार वृहत्तर लोकहित में होगा",
1. पूंजीवाद की झूठी विचारधारा को निर्दिष्ट करता है।
2. मुक्त बाज़ार के न्यायसंगत दावों को स्वीकार करता है।
3. पूंजीवाद के सद्भावपूर्ण चेहरे को दिखाता है।
4. परिणामी सकल असमानता की उपेक्षा करता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(a) केवल 1
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 4
(d) केवल 4